

पल्लवी प्रकाशन

जगदीश प्रसाद मण्डल-
एकटा बायोग्राफी

गजेन्द्र ठाकुर

जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी

जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी

गजेन्द्र ठाकुर



पल्लवी प्रकाशन

बेरमा/निर्मली

ISBN : 978-93-88811-30-9

दाम : 251/- (भा. रू.)

दोसर संस्करण : 2019 (प्रथम संस्करण : 2013)

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग
वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल
निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452

"Jagdish Prasad Mandal A Biography" by Gajendra Thakur (in Maithili)

Author's Acknowledgement: This biography is based on discussions held with Sh. Jagdish Prasad Mandal, with his son Sh. Umesh Mandal and with people of Berma and other adjacent villages. It was corroborated with contemporary records. I belong to Mehath Village, which is in vicinity of Berma, that gave me added advantage so far as veracity of facts are concerned.

दोसर संस्करणक मादे दू शब्द

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक बायोग्राफी लिखै काल आकि कहू सुनि कऽ-पढ़ि कऽ लिखै काल आनन्दक अनुभूति होइ छै, जिदियाह आ अस्सल बापक बेटा आ माइक दूध पिनिहारक बायोग्राफी लिखबाक आनन्दक अनुभूति। 'सुनि कऽ पढि कऽ लिखै काल' ऐले कहलौं जे बायोग्राफी तखने 'ऑथेन्टिक' भऽ सकैए, नहि तँ बिनु सत्यक फरिछाहट केने खिस्सा-पिहानी बनि जाएत, इतिहास नै बनि सकत।

दोसर संस्करणमे जे फरिछाहट आएल अछि से उमेश मण्डलजीक मेहनतिसँ, ऐसँ आनन्दक अनुभूति आर बढ़ल अछि, से ई पोथी पढ़ू आ जिदियाह बनू, जिदियाह अधला काजकेँ बढ़बैले नहि, समाजकेँ आगू बढ़बैले।

-गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक

'विदेह' ई-जर्नल, *www.videha.co.in*

नई दिल्ली

22 जून 2019

जन्म-परिचय

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक जन्म 5 जुलाइ 1947 इस्वीमे भेलैन। भारतक स्वतंत्रताक तिथि तँइ भऽ गेल रहए। अंगरेज जाइये-बला छल।

"दिनांक 5-7-1947 इस्वीमे जन्म भेल। भरल-पुरल परिवार। तीन पीढ़ीसँ एक पुरुखियाह परिवार चलि अबै छल। जहिना बाबा तहिना पिता छला। घर लग पोखैर-इनार रहने पानिक सुविधा रहल।"

माता-पिताक संग दीदियोक परिवारक संग मिलल-जुलल परिवार। तैसंग अपनो किछु जमीन; आ गामक जे बहरबैया मालिक रहैथ हुनकर खेतो बटाइ करै जाइ छला जइसँ खाइ-पीबैक अभाव सेहो नहि। एक तँ वंशगतो आधार दोसर जगदीश प्रसाद मण्डलजीक पितोक ऊपर पारिवारिक-सामाजिक प्रभाव पड़ल छेलैन जइसँ किछु अगुआएल विचार रहैन।

जहिना भतभोजमे बरी पड़िते पंच बुझि जाइए जे भोज अन्तिम दौड़मे आबि गेल, तँए आब इन्तजार नै करबाक चाही, जौं इन्तजार करब तँ भुखले उठब। तइसँ नीक जे मारि-धुसि झब-दे कसि ली नहि तँ दोख केकर हेतै, तहिना अंगरेजी शासन अपन सभ किछु समेट रहल छल। 1942 इस्वीमे जे तूफानी आन्दोलन उठल ओ कमल नहि, उग्रसँ उग्रतरे होइत गेल, जेकर परिणाम 15 अगस्त 1947 इस्वीक आजादी छी।

मुदा देशोक दशा एकमुड़िया नहि, अपनोमे खटपट होइते छल। केतौ जातीय उन्माद तँ केतौ साम्प्रादायिक उन्माद। तहिना केतौ धन-सम्पैतिक तँ केतौ इज्जत-आबरूक। जहिना स्वतंत्रता संग्राम जोर पकड़ने तहिना बंगालक अकाल आ बिहारक भुमकम (1934)क प्रभावसँ सेहो आर्थिक स्थिति प्रभावित छल।

स्वतंत्रताक लड़ाइमे मिथिलांचलक योगदान देशक कोनो भागसँ कम नै

रहल। एक दिस पुश्तैनी सोचक मुँहपुरुख रहैथ तँ दोसर दिस 1940 इस्वीक पछाइत सोशलिस्ट पार्टी आ कम्युनिस्ट पार्टी सेहो राजनीतिक सोच पैदा करैत रहल। समाजोक बीच जागरूकताक लहैर चलैत रहल। जहिना सोशलिस्ट पार्टी अपन किछु कार्यक्रम लऽ ठाढ़ छल तहिना कम्युनिस्ट पार्टी सेहो, दरभंगा जिलाक पहिल टीम 1939-40 मे पार्टीक सदस्यता ग्रहण कऽ चुकल छला, वफादार कार्यकर्ता बनि उतैर चुकल छला। तहिना सोशलिस्टो पार्टी गाम-गाम पहुँच चुकल छल। 1942 इस्वीक जन-आन्दोलन, पुश्तैनी सोचमे धक्का मारलक। धक्कासँ विचारमे टुट-फाट भेल, धक्कासँ धकियाएल लोक सेहो नव सोचक संग सेहो एला। सामाजिक परिवेश ई सोच पैदा कऽ चुकल छल जे जमीन्दारी समाप्त हेबे करतै, राजा-रजबार ढहबे करतै, आइ धरिक जे जमीन निलामीक प्रथा छल आ मालगुजारी असुलक जुल्म छल ओ मेटेबे करतै। नव विचार जन-गणक बीच पैदा लऽ चुकल छल।

मिथिलांचलक बीच झंझारपुर इलाकाक अप्पन प्रतिष्ठा रहल अछि। जहिना शिक्षाक क्षेत्रमे तहिना आर्थिक क्षेत्रमे सेहो। देशक पैमानामे इलाका पछुआएल नै छल, अगुआएल छल। एक-सँ-एक महान पुरुष पैदा लऽ चुकल छैथ। ई आजादीक लड़ाइमे खून बहौनिहार क्षेत्र छी। झंझारपुर अंगरेजक मुख्य अड्डामे छल। दमन नीति केतौ चलल तँ अहू क्षेत्रमे चलल।

मिथिलांचलक बीच झंझारपुर इलाका ओ क्षेत्र छी, जइमे मिथिलाक इतिहास-दर्शन, अखनो झलैक रहल अछि। अखनो पाथरमे फूल, माटि-पानिमे सुगन्ध जीवित अछि। क्षेत्रक गाम-समाजमे दर्जनो जाति, दर्जनो सम्प्रदाय अदौसँ अखन धरि मिलि-जुलि एकठाम बास करैत एला अछि। भूमियोक शक्ति ओहने उर्वर अछि, देशक एक नम्बर श्रेणीक सघन आबादीबला क्षेत्र अछि।

बीसम शताब्दीक पाँचम दशक, देशकेँ ऐ रूपेँ आन्दोलित कऽ देलक जे जन-गण अपन घर-परिवारसँ आगू बढ़ि देश लेल अपनाकेँ अर्पित कऽ देलक। जहिना दशकक पूर्वार्द्ध आन्दोलन केलक तहिना एकसंग अनेको प्रश्न उठि कऽ ठाढ़ भेल। ओना, आइ धरिक देशक इतिहासमे एकसंग एते खुशी कहियो नै

भेल छल जेते भेल। जेना-जेना आजादीक झण्डा फहरबैक दिन लगिचाइत गेल तेना-तेना खुशीमे बढ़ोतरी होइत गेल। अदहा दशक जहिना जगैमे लागल तहिना रंग-रंगक सपना देखैमे सेहो अदहा दशक खुशीसँ बितल।

समाजक बीच तँ नहि, मुदा देशक राजनीतिकेँ आर्थिक मुद्दा स्पष्ट विभाजित कऽ देने छल। कियो देशक पूर्ण आजादी देखै छला तँ कियो एकरा नेंगरा आजादी बुझै छला। ओना, देशक भीतर रौदी, भुमकम, जाति-साम्प्रदायिक उन्माद एते जोर पकैड़ लेने छल जे भीतर-बाहरक लड़ाइमे राजनीतिक दल ओझराएल रहए। ओना, तेलांगना लड़ाइ देशक संघर्षक नक्शामे आबि चुकल छल। भारत-पाकिस्तान विभाजनक एक-एक विभाजक तत्त्व जनमानसकेँ झकझोरि रहल छल। दसो बर्खक जेलक जुड़ल हृदय, संगी सबहक बीच टुटि रहल छेलैन। काला-पानी जहलमे ओ सभ संगे छला मुदा गाम-समाज विभाजित भऽ गेलैन।

15 अगस्त (14 अगस्तक बारह बजे रातिक बाद)केँ तिरंगा झण्डा फहराएल। अंगरेजी शासनक अन्त भेल।

जन-मानसक हृदयमे खुशीक लहैर असथिरो नहि भेल छल कि गाँधीजीकेँ राजधानीमे दिन-दहाड़ गोली लगलैन, जे शासनक स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करैत अछि। संविधान सभामे संविधान बनब शुरू भेल। संविधान बनल आ 1952 ई.सँ आम चुनावक प्रक्रिया शुरू भेल। राज्य आ केन्द्र सरकार बनैले चुनाव भेल, नव सरकारक गठन भेल। ओना, देशक विस्तारो अंगरेजी शासनसँ भेल, मुदा देशकेँ हजारो समस्याक बीच पटैक सेहो देलक। नव सरकारक बीच हजारो समस्या उपस्थित भऽ गेल। गाम-गाममे बकास्त जमीनक लड़ाइ पसैर गेल छल। राजनीतिक सभ पार्टीक एकमुहरी समर्थन रहने लड़ाइ सफलो भेल।

1950 इस्वीमे जगदीश प्रसाद मण्डलजीक पिताक निधन भऽ गेलैन।

“पिताक मृत्युक किछुओ नै यादि अछि, सिरिफ गाछीमे जरैत अछिया टा...। जखन तीन बर्खक रही। दू भाँइक भैयारीमे छह बर्खक भैया रहैथ। पिताजी करीब एक मास बीमार रहला। इलाजोक नीक बेवस्था नहि, ताबत दरभंगा अस्पताल नै बनल छेलइ। झाड़-फूकसँ लऽ कऽ जड़ी-बुटीक इलाज

समाजमे चलै छल।”

संयुक्त परिवारक बेवस्था सुदृढ़ रहने पिताक मृत्यु भेने बच्चाक लालन-पालनमे कोनो कमी नै होइ छेलैन।

“आजुक परिवार जकाँ नहि, जे ने बेटा बाप-माएकेँ देखैत आ ने माए-बाप बेटा-पुतोहुकेँ। कारण अनेक अछि मुदा अपनो परिवारक जौं जिम्मा नै लऽ चलब तँ अनेरे हम सभ मातृभूमि आ देशकेँ महान कहै छिऐ। इमानदारी पूर्वक हृदयपर हाथ रखि कऽ कहए पड़त जे देलिऐ की आ लेलिऐ की। हमरा नै भेल तेकर दोखी हम नहि। एक तँ अपनो परिवारमे समांग, दोसर गामक कोनो जाति एहेन नहि, जइ जातिसँ पारिवारिक सम्बन्ध नइ छल। तैसंग जातियोक नमहर टोल। गामक चारूकातक गाममे कुटुमैती सेहो छल आ अखनो अछि। ओहो सभ अपनामे समय निर्धारित कऽ अबैत-जाइत रहै छला। कान्ही सेहो नीक बनौलैन। एक-सँ-एक खिस्सकर आ एक-सँ-एक गप केनिहार। तँए दिन-रातिमे कोनो अन्तर नहि। अभाव परिवारमे नहियेँ छल तँए अनुकूल परिस्थिति बनल छल।”

अनुकूल परिस्थिति बनने जगदीश प्रसाद मण्डलजीक नजैर परिवारक भविस दिस सेहो पड़लैन। भैयाक बिआह भऽ गेल रहैन। ताबत चारि-पाँच बर्खक अवस्थामे बिआह होइत रहइ।

“तहूमे हमर मौसी–सात-भाए बहिनमे सभसँ जेठ मौसी आ सभसँ छोट माए–विधवा भऽ गेली। मौसीकेँ मात्र दुइएटा बेटी, परिवार अन्त भऽ गेलैन। मौसीक प्रभाव माइक ऊपर, तँए भैयाक (जेठ भाइक) बिआह पाँचे बर्खमे भऽ गेलैन। भविस दिस दृष्टि पड़िते हमरापर नजैर पड़लैन। ओछाइन पकड़ल रोगीक अवस्था ओहन होइते अछि जेकर कोनो निश्तुकी नहि, जीवियो सकै छैथ, मरियो सकै छैथ। तँए एहेन अवस्थामे विचारोमे इमानदारी अबिते छइ।”

मछधी (सिमरा)मे ददिया ससुरक परिवार सुभ्यस्त, ददिया ससुरक कुटुमैती गोधनपुर मौसीक परिवारमे से मौसीक आवाजाही बेरमा बहिन ऐठाम।

“ददिया ससुर सुराग भिड़ा कऽ गोधनपुरक मौसाक छोट भाए बचाइ मण्डल संग आबए लगला, छल-प्रपंच विहीन मौसी, माएकेँ कहि देलखिन।

जेठ-छोटक विचार रखैत माए आश्वासन दऽ देलकैन जे अखन तँ अपने अछोइन धेने छैथ, राजा-दैवक कोनो ठेकान नै छै, तँए अखन किछु नहि, बादमे बुझल जेतइ।"

मछधीक परिवार बेवहारिक दृष्टिए दब। ताड़-खजुरक गाछ बेसी, से ताड़ी पीबाक चलैन ओइ गाममे छल। एक-लगाइत बुड़हा (ददिया ससुर) अपन जोड़ो भरि धोती आ चद्दैर नेनहि पहुँच पिताक मृत्युक आखिरी समय तक बेरमामे रहि गेला। मृत्युक अन्तिम राति, डिबिया जरिते सभकेँ अन्हार बुझि पड़ए लगलैन।

"जे बोल जीवित छल, बन्न भऽ गेल। पिताजीक हाथ-पैरक डोलब बन्न भऽ गेल।",

माएकेँ लगमे बजा बुड़हा (ददिया ससुर) गोधनपुरबला मौसाकेँ सम्बोधित करैत कहलखिन-

"समैध, ई बच्चा हमरा दऽ दौथ। गोबर पाथैले पोती देबैन।"

मिटिंगक प्रस्ताव जकाँ गोधनपुरबला मौसा समर्थन करैत कहलखिन-

"ई तँ घर-कथा भेल, ऐमे की 'हँ-हूँ' कहल जाएत।"

तही बीच मौसी टपैक गेली-

"बहिन, अखन बाल-बोध अछि हिनका बच्चा देलिऐन। तीनियेँ बर्खमे बिआहक बात पक्का भऽ गेल।"

"अखन धरि परिवारमे अपनासँ गाए दुहैक, हर जोतैक आ खुट्टापर बच्छा बधिया करबैक चलैन नै रहए। पिताक परोछ भेनौं समैपर स्कूल पहुँचलौं। गाममे लोअर प्राइमरी स्कूल छल। भीत घर रहने 1934 इस्वीक भुमकममे खसि पड़ल। राजा-दैव भेने जहिना लोक घराड़ी बदैल लइए तहिना बेरमामे स्कूलक घराड़ी बदलल। ओइ समयमे तीनटा कचहरी बेरमामे रहइ। दछिनबरिया कचहरीक घरमे स्कूल चलए लगल। पछाइत ओहो बदैल अखुनका जगहपर पहुँचल।"

बेरमा पण्डितक गामक श्रेणीमे गनल जाइत अछि। परोपट्टाक लोक

गेठरी झाकेँ जनै छैन, जिनका सात साए बीघा जमीन राज-दरभंगासँ भेटल छेलैन। ओना, ओ जमीन बेरमा गामक सीमामे नै पड़ैत अछि, दू कोस हटि कऽ छल; आब नै छैन।

पैछला पीढ़ीमे बेरमा गामक चारि गोरे वेद, व्याकरण साहित्यसँ आचार्य केलैन। दू गोरेकेँ मेडल भेटलैन। ओना, तीन गोरे गामसँ बाहर विद्यालय पकैड़ लेलैन, मुदा एक गोरे (मेडलधारी) गाममे नून-तेलक दोकान कऽ लेलैन। 'पढ़े फारसी बेचए तेल' चरितार्थ भऽ गेल। मुदा अपन लगन आ मेहनतसँ ओ तीनू गोरेकेँ आर्थिक क्षेत्रमे पछुआ देलैन, समाजपर बहुत अधिक प्रभाव पड़ल। बेरमा मेहनती गाम तहियो छल अखनो अछि। आन गाममे कम पढ़ल-लिखल लोककेँ लोक चुटकी लैत अछि, से बेरमामे नै अछि। झंझारपुर बजारसँ माथपर दोकानक वस्तु-जातक मोटरी बैशाखक रौदमे अनै छला, जे सभ देखै छल। गाममे एक्केटा दोकान। सबहक लाट दोकानसँ। ओना, एकटा झंझारपुरक बनियाँ (श्री जयदेव चौधरी) सेहो आबि बेरमामे दोकान खोलने रहैथ। भुमकममे परिवार (झंझारपुर) नष्ट भऽ गेलैन। ईंटाक घर रहने सभ दबि कऽ मरि गेलैन। वएह बेरमामे आबि बसि गेला। जहिना राजनीतिक दृष्टिसँ बेरमा गाम जागल तहिना शैक्षणिक दृष्टिसँ सेहो अगुआएल रहल अछि।

ओना, अंगरेजी शिक्षा सेहो गाममे कम प्रतिशतमे पहुँच चुकल छल। गामक उत्तर–नवानी विद्यालय आ दच्छिन दीप–विद्यालय चलि रहल छल। तमुरिया आ झंझारपुरमे हाइ स्कूल सेहो बनि गेल छल। गामक जे तीनू पण्डित बाहर रहै छला हुनको सबहक परिवार गामेमे रहै छेलैन। अपनो ओ सभ, सभ छुट्टी गाममे आबि बितबै छला।

गाममे स्कूल कहिया बनल, एकर निश्चित तिथिक जानकारी तँ नहि, मुदा 1934 इस्वीक भुमकममे विद्यालयक भीत खसल, ई जानकारीमे अछि। मुदा विद्यालयक जगह बदैल गेल। किएक तँ ओइ जगहकेँ जनमानस अशुभ बुझए लगल। ओना, ओ स्थान गामक बरहम स्थान छी, शक्तिशाली जगह। अखन ओइ स्थानमे बाल-बोधक आँगनवाड़ी चलि रहल अछि। ओइठामसँ विद्यालय उठि श्री लक्ष्मीकान्त-रमाकान्त साहुक कचहरीमे चलि आएल। ओइ कचहरीमे

1952 इस्वीक पहिल चुनावक केन्द्र सेहो बनल। अखन विद्यालय तेसर स्थानपर अछि। जे जगह सरिसव-पाहीक प्रो. हेतुकर झाक छिऐन। ओना, ओ रजिष्ट्री करैले तैयार भेल छैथ, मुदा ई जमीन्दारीक तेहेन ओझरौठमे पड़ल अछि जे हुनका लिखले ने होइ छैन! जमीनक नाओं 'बुढ़िया गाछी' अछि। सम्प्रति पंचायत भवन, आठमा धरिक स्कूल, खण्डहर रूपमे अस्पतालक घर आ भव्य दुर्गास्थान सेहो अछि।

एकडोरिमे तीनू गाम, नवानी, बेरमा आ दीप, रहितो सामाजिक वातावरणमे तीनूमे बहुत अधिक भिन्नता अछि। एक तँ परगन्नाक प्रभाव, दोसर सामाजिक बनाबट...। जैठाम नवानी आ दीपमे ताड़-खजूरक गाछ सेहो भरपुर अछि, अर्थात् ताड़ी पीबनिहारक संख्या नीक अछि, तैठाम बेरमामे एक्कोटा ताड़-खजूरक गाछ नै अछि। दोसर भिन्नता ई अछि जे मध्य वर्गीय जाति बेरमामे बहुसंख्यक अछि, नवानी आ दीपमे खूब धनिके आकि खूब गरीबे। खास कऽ दीपमे ई स्थिति भयावह अछि। जइ गाममे एक्केटा खूब धनिक परिवार रहैए ओइ गामक शेष लोक गरीब रहैए, सएह स्थिति दीप गामक अछि।

जगदीश प्रसाद मण्डल पाँच-छह बर्खक रहैथ तखनेसँ भैया संग माने कुलकुल मण्डलजीक संगे स्कूल जाए लगला। गामेमे लोअर प्राइमरी स्कूल छल जे दुनू पालीमे चलैत रहइ। अखन तँ आठम धरिक पढ़ाइ हुअ लगल अछि। तहिना एक शिक्षकसँ चलैत ई स्कूल सेहो आब सतरह शिक्षक धरि पहुँच गेल अछि। तँए कि बेरमाक शिक्षा अगुआ गेल? जिनगी लेल सर्वांगीन विकास अनिवार्य अछि, जौं से नहि तँ ओ अपलांग-विकलांग भेल पड़ल रहत।

सामान्य स्कूल-कौलेज तँ ठाम-ठीम बनल मुदा तकनीकि शिक्षाक विकास नै भेल। परिणाम बनि गेल अछि जे काजक दिशे बदैल गेल अछि। खाएर जे हउ, मुदा आजादीक पहिनौं आ पछातियो राजनीतिक आ शैक्षणिक दृष्टिसँ बेरमा अगुआएल गाम रहल।

आजादीक आन्दोलनमे गामक बचनू मिश्र उभड़ला। नवानी विद्यालयमे ओ भनसियाक काज करैत रहैथ। लिखब तँ नै सीखि भेलैन मुदा वक्ता भऽ गेला। देशक प्रति बचनू मिश्र ओहन समरपित रहैथ जे आजादीक दौड़मे तीन

मास धरि बिना नूनक भँट्टे-बैगन उसैन-उसैन खा दिन-राति काज करैत रहला, आन्दोलन गाम-गाम पकड़नहि रहए। काजेसँ इमानदारी सेहो अबै छइ। 1934 इस्वीक भुमकमक पछाइत जखन राशनक बँटवारा हुअ लगल, तइमे एतेक इमानदारीक परिचय बेरमा गामक बचनू मिश्रजी मधेपुर थानामे देलैन जे समाजक सभ बचनू मिश्रकेँ 'गाँधीजी' कहए लगलैन। संगमे आरो-आरो लोक रहैथ। बेरमा पंचायत बनबैमे हुनकर योगदान बहुत रहलैन। जनसंख्याक हिसाबसँ–ओइ समयक पंचायतक हिसाबसँ–बेरमा छोट पड़ैत रहए। सामाजिक बुनाबट एहेन जे गाम-गामक बीच अपन-अपन सम्बन्ध, तँए के केकरा संग रहत, ई जबरदस समस्या। मुदा दीप गामक नेतृत्वक सहयोगसँ, जे अपन पंचायत काटि पंचायत बनबैमे सहयोग केलैथ जइसँ बेरमा पंचायत बनल।

पछाइत बचनू मिश्रक दिमाग गड़बड़ा गेलैन। ओना, अस्सीसँ ऊपर बर्खक उमेरमे मुइला मुदा प्रभाव कमि गेलैन। ब्रेन प्रभावित होइक कारण दूटा भेलैन, पहिल पारिवारिक आर्थिक स्थिति आ दोसर राजनीतिक क्षेत्रमे इमानदारीक अभाव। मुदा अन्त-अन्त धरि समाजकेँ जगबैत रहला।

अठारहम शताब्दीक पूर्वार्द्धमे एकहरे खड़का मूलक परिवारमे पण्डित कंचन झा आ पण्डित बबुए झा वैदिक भेला। ओना, ओइ समयमे अंगरेजी शिक्षाक प्रचार-प्रसार नइ भेल छल, मुदा संस्कृत शिक्षाक स्वर्णिम युग अबस्स छल। स्वर्णिम ऐ लेल जे सामाजिक ढाँचा, किछु विच्छृंखला छोड़ि, वैदिक पद्धतिसँ चलैत रहइ, जे आस्ते-आस्ते आरो बढ़िते गेल। पछाइत अंगरेजी शिक्षाक प्रभाव सेहो खूब पड़ल।

पण्डित कंचन झाक बालक पण्डित भुटाइ झा प्रसिद्ध गेठरी झा ख्याति प्राप्त वैदिक भेला, हुनका दरभंगा राजसँ सात साए बीघा जमीन लाखेराज ब्रह्मोत्तर रूपमे भेटल छेलैन। ओइ समयमे किनको ताधैर पण्डितक बीच स्थान नहि भेटैन जाधैर ओ काशीसँ पढ़ि नहि अबै छला।

पण्डित चित्रधर ठाकुर हुनके घरक भगिनमान परिवार। पण्डित चित्रधर ठाकुरकेँ तीन बालक, पण्डित जयनाथ ठाकुर, पण्डित तेजनाथ ठाकुर आ पण्डित खर्गनाथ ठाकुर। तीनू पण्डित, मुदा जेठका भाय खेती करैत किसान

बनि गेला आ बाँकी दुनू भाँइ–पण्डित तेजनाथ ठाकुर आ पण्डित खर्गनाथ ठाकुर–काशीसँ पढ़ि एला। उच्चकोटिक श्रेणीमे गिनती छेलैन। पण्डित तेजनाथ ठाकुर जीवन-पर्यन्त लोहना संस्कृत विद्यालयमे सेवा देलैन। तेकर पछाइत परिवारमे पण्डित गौरीनाथ ठाकुर, अनिरूद्ध ठाकुर आ सुन्दर ठाकुर भेला। शरीरसँ अबाह रहने पण्डित सुन्दर ठाकुर वैद्यक रूपमे गामेमे (बेरमा गाममे) वैद्यगिरी करैत रहला। पण्डित अनिरूद्ध ठाकुर व्याकरणक पण्डित रहैथ, ओ सीतामढ़ीक एकटा विद्यालयमे जिनगी भरि सेवा देलैन।

अखन धरि दुइए परिवारक चर्च भेल अछि मुदा एतबे नै अछि। पण्डित कामेश्वर झा, जे खगड़िया विद्यालयक संग दीप महाविद्यालयमे सेहो सेवा देलैन। ओ वेद-व्याकरणक प्रकाण्ड पण्डित छला। पण्डित चण्डेश्वर झा अरड़िया मध्य विद्यालयक संस्थापित शिक्षक बनि अध-वयसेमे मरि गेला।

पण्डित उपेन्द्र मिश्र सभसँ भिन्न छला। ओ एकसंग ज्योतिष, वेद, व्याकरण आ साहित्यक विशेष ज्ञाता छला। केतेको महाविद्यालयमे सेवा दैत शरीर तियाग केलैन। सभसँ भिन्न ओ ऐ अर्थमे छला जे कोनो महाविद्यालयमे अधिक दिन नहि टिक पबैथ। सालक भीतरे किछु-ने-किछु खटपट भइये जाइ छेलैन। जखने खटपट होइ छेलैन, सोझे घरमुहाँ भऽ बेरमा चलि अबैथ। मुदा गामो एलापर केकरो किछु कहैत नै रहथिन। कियो पुछबो ने करैन जे ओहिना एलौं आकि झगड़ा-दन कए कऽ एलौं। अद्भुत गुण छे लैन जे अपने-आप विमर्श करैत, समैयक संग अपन कर्त्तव्यकेँ छुटैत देख दोसर महाविद्यालय दिस विदा होइ छला। खड़ाम छोड़ि पैरमे कहियो जूत्ता-पप्पल नै पहिरलैन। परोपट्टाक विद्वानक बीच अपन पहचान छेलैन, जइसँ कोनो विद्यालय, महाविद्यालयमे हुनक स्वागत रहै छेलैन।

पण्डित उदित नारायण झा, जे गोल्ड मेडलसँ सम्मानित छला, शिक्षण कार्य छोड़ि दोकानदारी बेवसायकेँ ओ अपन जीविका बनौलैन। परिवारक स्थिति खराप छेलैन। बिनु उपारजने चलैबला नै छेलैन। मुदा किछुए दिनक मेहनतक फल हुनका नीक भेटलैन। जीवन-यापन करैत बीस बीघा जमीन परिवारमे बनौलैन।

पण्डित रामनारायण झा व्याकरणक ज्ञाता छला। शरीरसँ पुष्ट रहने शुरूमे पुलिसक नोकरी शुरू केलैन, मुदा विदेशी शासनक उठैत विरोधमे नोकरी छोड़ि शिक्षण कार्यमे चलि एला, बेसिक स्कूल घोघरडिहामे प्रवासीजीक संग रहि सेवा देलैन।

गामक स्कूलसँ 1956 ई.मे जगदीश प्रसाद मण्डल निकलला। गामसँ सटले पूब कछुबीमे मिडिल स्कूल बनि गेल छल। तइसँ पहिने ई पँचमा धरिक स्कूल छल। मिडिल स्कूल अलग बनल। ओना, अखन दुनू मिलि एक भऽ गेल अछि मुदा पहिने दुनू अलग-अलग छल। ओइ समयमे पँचमा धरि फीस नै लगइ। मुदा छठा-सातमामे अढ़ाइ रूपैआ महिना फीस लगैत रहइ।

जगदीश प्रसाद मण्डल 1960 इस्वीमे मिडिल स्कूलसँ निकैल केजरीबाल हाइ स्कूल झंझारपुरमे नाओं लिखेलैन। बेरमाक विद्यार्थी रमौली (तमुरिया) हाइ स्कूल आ झंझारपुर हाइ स्कूल, ऐ दुनू ठाम साले-साल विभाजित होइत रहै छल। कारणो रहइ। जइ रूपक शिक्षकक टीम झंझारपुरमे छल ओइ तरहक टीम तमुरियामे नै छल। तमुरिया हाइ स्कूलमे एक-आध शिक्षक साले-साल जाइ-अबै छला जखन कि झंझारपुरमे से नहि छल, जइसँ झंझारपुरकेँ नीक मानल जाइ छल।

जहिना गामक आन-आन विद्यार्थी पएरे झंझारपुर हाइ स्कूलमे पढ़ैले जाइ-अबै छला तहिना जगदीश प्रसाद मण्डल सेहो जाइ-अबै छला। किछु गोरे होस्टलोमे रहै छला। जगदीश प्रसाद मण्डलजीकेँ सालो भरि किछु-ने-किछु असुविधा रहिते छेलैन। ओना, अखनो किछु-किछु छैन्हे। सालो भरि ऐ तरहेँ रहिये गेलैन।

अगहनसँ माघ धरि दिनो छोट होइए, मुदा विद्यालयक समय छोट नै होइ छल। काजक अनुकूल समय भेटने दिन-रातिमे अन्तर भलेँ नै बुझि पड़ैए, मुदा गाम-घर लेल तँ ई कठिन अछिए। मौसमी छुट्टीक नाओंपर दिसम्बरमे आठ-दस दिन बड़ा दिनक छुट्टी होइत रहैन, जे परीछोपरान्त आ रिजल्टसँ पूर्व होइ छल।

परीक्षोपरान्त गरमियो मासमे असुविधा तँ तहिना रहैन मुदा ओ असुविधा दोसर तरहक। ओना, एकरा आम खाइक छुट्टी सेहो कहल जाइ छै मुदा

ग्रीष्मावकासक नाओं सेहो छै, ई नमगर छुट्टी, मास दिनक होइ छल।

नीक परिवारक विद्यार्थीकेँ अनुकूल वातावरण रहने दोहरी लाभ होइत रहैन, साधारण परिवारक विद्यार्थी आम खाइत-खाइत अदहा-छिदहा बिसैर जाइ छला। शैक्षणिक वातावरण स्पष्ट रूपमे विभाजित भऽ जाइ छल। जहिना जाड़क मास जाड़सँ बरेड़ी छुबैत अछि तहिना गरमियो गाछक फुनगी छुबिते अछि, जइसँ अप्रील माने चैतसँ ताधैर विद्यालय भिनसुरका होइत रहै जाधैर गर्मी छुट्टी नै भऽ जाइ छल।

तमुरिया हाइ स्कूल आ झंझारपुर हाइ स्कूलमे ईहो अन्तर छल जे अदहा घन्टा आगू-पाछू खुजबो करै आ बन्नो होइत रहइ। तेकर कारणो छेलै, कमला-पच्छिमक गाम मेंहथ, नरूआर आदिसँ लऽ कऽ पूबमे बेरमा धरि आ गंगापुर खड़बाइरसँ लऽ कऽ अलपुरा-अरड़िया धरिक विद्यार्थी झंझारपुरमे पढ़ै छला। एतेक नमहर क्षेत्र रहइ, तँए विलमसँ स्कूल खुलै छल। ओइ समय साढ़े एगारह बजे विद्यालयमे छुट्टी होइत रहइ। तखन पान-सात मील पएरे चलब कठिन सोभाविक। ओना, बड़ कठिन नहियेँ, किएक तँ बेरमा गामक विद्यार्थी पएरे चलि लोहनो विद्यालयसँ पढ़नहि छला। तहिना बरखा मासमे सेहो होइत छल। कखन पानि-बिहाड़ि आबि जाएत तेकर कोनो ठीक नहि। तहूमे केतेकाल बरिसत तेकरो ठेकान नहि। खाएर जे हो...।

केजरीवाल हाइ स्कूल झंझारपुरमे 1963 ई.मे हायर सेकेण्ड्रीक पढ़ाइ शुरू भेल। मुदा तइमे थोड़ेक पेंच लागि गेलइ। कला-विज्ञान आ वाणिज्य तीनूक पढ़ाइ होइ छेलइ। कला-विज्ञानक मंजूरी भेट गेल, वाणिज्यक भेटबे ने कएल। केते रंगक हवा बहए लगल। ओना, शिक्षकमे बढ़ोत्तरी पछाइत भेल, मुदा शुरूमे असुविधा रहल।

1959 ई.मे जनता कौलेज खुजल। जन-सहयोगसँ कौलेज खुजल। मुदा कौलेजक जे नमगर-चौड़गर घर चाही, जे अगुताएलमे नै भेलै तँए हाइए स्कूलमे साधारण रूपेँ पढ़ाइ शुरू भेल। किछु गनल चुनल विषयक पढ़ाइ शुरू भेल। खाएर जे भेल, मुदा शिक्षामे नव जागरण क्षेत्रमे आएल। बहुतोक मनक मुराद पूरा होइक सम्भावना बढ़ल। बी.ए. तकक पढ़ाइ लगमे हएत, तखन पढ़ैबला

बच्चा आ पढ़बैबला गारजनक मनमे किए ने उत्साह जगतैन। किछु दिनक पछाइत कौलेजक अपन कँचका ईंटा आ खपड़ाक मकान बनलै।

जगदीश प्रसाद मण्डल 1965 ई.मे हायर सेकेण्ड्री पास केलापर बी.ए. पार्ट वनमे नाओं लिखेलैन। पहिने दू बर्खक आइ.ए. आ दू बर्खक बी.ए. प्री हुअ लगलै आ दुनू दिससँ विद्यार्थीक प्रवेश हुअ लगल। बी.ए. पार्ट वन केलापर आनर्स पढ़ैक विचार भेलैन। आ आन कौलेजमे आनर्सक पढ़ाइ होइ छेलै, जनता कौलेजमे नै होइ छल। एक-दू-तीन शिक्षकसँ अधिक कोनो विषयमे शिक्षक नै छला। हिन्दी विभागमे सेहो दुइए गोरे छला। ओ प्राइवेट रूपमे तैयारी करए लगला। सी.एम. कौलेजक नाओंसँ फार्म भराएल आ परीक्षो भेल।

1952 इस्वीक चुनावक पछाइत देशक अपन विधिवत सरकार बनल। मुदा एकसंग केतेको प्रश्न उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। सरकारी कार्यालयमे कर्मचारीक जरूरत भेल। जेकर बहालीमे जातिवाद आ पैरवी-पैगाम शुरू भेल। आम जनताक जगाएल सरकार जनतासँ बहुत दूर ह टि गेल।

ओना, जे कोनो नव-स्वतंत्र देशक स्थिति होइए तहिना अपनो ऐठाम रहए। मुदा ओइ लेल जेते सकारात्मक सोच आ काजक औसत हेबाक चाहिऐ से नै भेल।

सामन्ती सोच; आ सामन्त मजगूत छल, जइसँ आम-अवामक बीच आक्रोश पनपए लगलै। राजा-रजबारे जकाँ शासन पद्धति चलए लगल। तही बीच भूदान आन्दोलनक उदय सेहो भेल। ओना, तेलांगनासँ शुरू भेल भूमि आन्दोलन देशकेँ डोला देने छल। तैसंग केरल आ बंगालक संग छिटफुट अनेको राज्यमे भूमि आन्दोलन पकैड़ रहल छल। दरभंगा जिलामे सेहो भूमि आन्दोलन शुरू भेल।

1957 इस्वीक चुनावमे काँग्रेस सरकारक स्थिति कमजोर भेल। केरलमे वामपंथी सरकार बनि गेल। आजादीक दौड़क जे जागरण छल ओ ताजा छल, जइसँ अखुनका जकाँ नै छल। ऐ बीच गोटि-पँगरा हाइ स्कूल, कौलेज, प्राइवेट रूपमे बनए लगल छल मुदा औसत कम रहल। खादी कपड़ाक उद्योगक ह्रास होइत गेल आ होइत-होइत मेटा जकाँ गेल। तहिना नगदी पैदावारमे कुशियार

सेहो छल, जे उद्योगपतिक चलैत ओहो मरए लगल।

मिथिलांचलमे मूलतः जीविकाक साधन कृषि छल। ओना, सघन रूपमे कृषि जीविकाक पैघ साधन छी, मुदा से नै छल। जेहो छल तहूमे रंग-बिरंगक छल-प्रपंच चलि रहल छल। बटाइ खेतीमे अधिया उपज उपजौनिहारकेँ भेटै छेलइ। जखन कि उपजबैमे, खेती करैमे किछुए अन्नक खेती लाभप्रद छल। उपजाक अनुपातमे लागत खर्च किछुमे कम छल आ किछुमे अधिक। जइमे अधिक छल ओइमे बटेदारकेँ घाटा होइत रहइ। तैसंग रौदी-दाहीक प्रभाव ओहन किसानपर सेहो पड़इ जे खेती करै छला। जे बेसी खेतबला छला हुनकर खेती अधिकतर बटाइक माध्यमसँ चलै छल। तैसंग अधिक अन्न रहने अन्नक महाजनियोँ चलै छेलैन। महाजनियोँक प्रथा गाम-गामक फुट-फुट छल। कोनो गाममे सवाइ (एक मोनक सवा मोन, एक सिजीनक), तँ कोनो गाममे एगारही (आठ पसेरीक मोन, एक मोनक एगारह पसेरी), तँ कोनो गाममे डेढ़िया (एक मोनक बारह पसेरी) छल। जेकर मतलब भेल जे एक मोनक अदहा मोन सूदिये भेल। तैसंग ईहो होइ छल जे सालक कर्ज सालमे चुकाएल जाइ, आ जौं से नहि तँ सूइदो मूइड़े बनि जाइ छेलै जइसँ दू साल बितैत -बितैत कर्ज दोबरा जाइ छेलइ।

अखुनका जकाँ बिआह तँ तेते भारी नै छल मुदा माए-बापक सराधमे सामाजिक आ जातीय एहेन चाप रहै जे खेत-पथार बेच काज चलै छल।

खेतक हिसाबसँ चारि-पाँच मेलक किसान छला। गामक-गाम एक-एक गोरेक छेलैन, जखने एकठाम जमीन समटाएल रहत तखन दोसर-तेसरक की आ केते हेतैन?

खेतमे काज करैबला बोनिहारोक स्थिति बद-सँ-बदत्तर छल। एक तँ दिन भरिक बोइन कम, तहूमे सालक गनल दिन काज होइत।

किसानोक बीच वैज्ञानिक खेतीक नव पद्धतिक अभाव छेलैन। अभावोक कारण छल जे ने सरकारक धियान खेती दिस छल आ ने खेतीक साधन उपलब्ध छल।

त्रेता युगक जनकक हर जकाँ खेत जोतैक हर होइ छल! जहिना

मरियाएल बरद तहिना जोतनिहार। तैसंग खेत पटबैक पानिक कोनो दोसर बेवस्था नहि। जहिया पानि हएत तहिया खेती शुरू हएत। जइसँ बे-समय खेती होइ छल। पोखैर-झाँखैरमे अनेरूआ माछ जे होइ, सएह माछ पोसब कहाइ छल। तहिना तीमनो-तरकारी आ फलो-फलहरीक हाल छल। मोटा-मोटी कृषिक ओहन दशा बनि गेल छल जैपर जीवन यापन करब कठिन छेलइ।

पशुपालनक रूपमे गाए-महींस आ बकरी पोसब मात्र चलैनमे छल। गाए-महींस पोसैक बीच महाजनीक एहेन सूत्र लागल छेलै जे पोसनिहार सिरिफ पोसै छला। एक तँ नस्ल पछुआएल रहने पछुआएल कारोबार, दोसर एहेन जालमे ओझराएल जे धीरे-धीरे कमिते गेल जे बढ़ैक कोनो सम्भावना नै रहल।

नगदी फसिलक रूपमे कुशियार आ पटुआक खेती छल। मुदा उद्योगपतिक कारामातसँ ओहो दुनू कमजोरे होइत गेल। ओना, सरकारक प्रति जन-आक्रोश बढ़ल। गाम-घरक लोक सरकारी लाभक माने बुझै छल मात्र कोटाक वस्तु धरि। सेहो रस्ते-पेरे लूटाइत रहल।

1967 इस्वीक चुनाव आएल। जगदीश प्रसाद मण्डल बी.ए.क विद्यार्थी रहैथ। आजादीक पछाइत ई पहिल जन-जागरण छल। पढ़लो-लिखल आ विद्यार्थियो सभ, प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूपेँ मैदानमे उतरला।

जगदीश प्रसाद मण्डल बी.ए. पार्ट-1 केलैन आ करिते 1967 ईस्वीक आम चुनाव आएल। जहिना कांग्रेस पार्टी जन-समूहसँ हटि किछु खास जातिक पार्टी बनि रहल छल तहिना आनो-आन पार्टीक स्थिति छेलइ। कम्युनिस्ट पार्टी किछु क्षेत्रमे मजगूत छल मुदा झंझारपुर इलाकामे कमजोर, मुदा तैयो ई एतए जोर-सोरसँ पकैड़ रहल छल। कांग्रेसक प्रति लोकक आक्रोश बढ़ि रहल छल। सरकार विरोधी (कांग्रेस सरकार) हवा बनि रहल छल। कारणो छेलै, स्वतंत्रता आन्दोलनमे स्वतंत्र देशक जे आकांक्षा होइत अछि ओ तँ सबहक मनमे छेलैहे मुदा ओकर पूर्तिक कोनो उपाय नइ भेल। संगे-संग कांग्रेस पार्टी जनसमूहक संग छोड़ि परिवार विशेष वा जाति-विशेषमे समटा चुकल छल। ग्रामीण समाजमे स्वतंत्रताक कोनो लाभ स्पष्ट रूपेँ सोझहा नै आएल। किसान प्रधान मिथिलांचलक स्थिति आजादी पूर्वेक बनल रहल। ओना, देशेमे पंजाबक

किसानक स्थिति सुधैर गेल। कारण ओइठामक सरकार कृषिकेँ प्रमुखतासँ पकैड़ पानि-बिजलीक बेवस्था कऽ लेलक। पानि आ बिजली, कृषि लेल प्रमुख साधन छी। से बिहार (मिथिलांचल)मे नै भेल। शिक्षा-बेवस्थामे सेहो जेहेन हेबाक चाही से नै भेल। संग-संग आरो बहुत कारण भेल, जइसँ विद्यार्थीक बीच सेहो आक्रोश बढ़ल। राजनीतिक चेतना बढ़ने जगौनिहारोक संख्या बढ़ल। मुदा अपनेमे लड़ने-झगड़ने सभ विरोधी पार्टीक स्थिति सेहो खरापे। नव चेतनाक संग विरोधी (कांग्रेस विरोधी) सभ राजनीतिक पार्टी एक मंचपर आएल। अंगरेजीए शासन जकाँ कांग्रेसो शासनक विरूद्ध लोक उठि कऽ ठाढ़ भेल। ओना तँ देशेक, मुदा बिहारक तँ कहले जेतै जे स्वतंत्रताक उपरान्त ई पहिल जन-जागरण छल।

सभ पार्टीकेँ एक मंचपर एने कोनो निश्चित कार्यक्रम बनब असम्भव छल, कारण एतेक जल्दिबाजीमे भइये की सकैए। तखन तँ आम-चुनाव पीठपर अछि तँए सरकार बदलैक कार्यक्रम बनल।

किसान-बोनिहारक संग बुद्धिजीवी सेहो मैदानमे उतरला। 'कांग्रेस विरोधी' हवा नीक जकाँ बनल।

अपन मधुबनी जिलामे अखन दूटा पार्लियामेन्ट क्षेत्र अछि, मुदा तइ दिनमे दरभंगे जिला छल। दुनू क्षेत्रमे कांग्रेस हारल। हारबे नै कएल , भोँटोक प्रतिशत बहुत निच्चाँ उतरल। एकसूत्री कार्यक्रम, कांग्रेस हटाउ, रहने कोनौं राज्यमे एक पार्टीक सरकार नइ बनि पएल। खिचड़ीए सरकार बिहारो, बंगालो, उत्तरो प्रदेश आ आनो-आन राज्यमे बनल। समस्यासँ ग्रसित राज्य सभ छेलैहे, केमहरसँ समस्या पकड़ल जाए, ई मुख्य समस्या छल। तैबीच चतरल-गछगर भूदानो आन्दोलन उधिआए लगल। मुदा तैयो किछु गोरे भूदानसँ राजनीतिक मंचपर एला। भूदानकेँ आन्दोलनक रूपमे ठाढ़ कएल गेल।

ओना, तेलांगनाक भूमि आन्दोलन चरमपर छल। जमीनक छअम भागक (छअम हिस्सा दान दिअ) हिस्सा मंगैक अभियान शुरू भेल। लोक लाखक-लाख बीघा दान देलैन। सबहक अनुमान भेलैन जे देशक छअम हिस्सा गरीबोक बीच औत। कोनो गामक दू प्र तिशतसँ लऽ कऽ पनरह बीस प्रतिशत

तकक जमीन घर-घराड़ीमे लगै छइ। तैठाम छअम हिस्सा सोलह प्रतिशतसँ ऊपर, जमीनक आमद-खर्च दुनू भऽ गेल। भलेँ आइयो, 2012 ई.मे ढेरो परिवार एहेन अछि जेकरा चारि डिसमिल जमीन नै छै जे घरो बना सकत।

जहिना हवामे उधियाइत भूदान आन्दोलन आएल आ गेल तेकर ओते प्रभाव नै पड़ल जेते गामक एकटा गृह-उद्योग समाप्त भेने भऽ गेल। खादी-भण्डारक माध्यमसँ कारोबार चलै छल, तइमे तेना कऽ मुसहैन लागल जे अन्न-माटि दुनू एकबट्ट भऽ गेल। जेहने दाना अन्न तेहने मुस हैनिक माटि, केना बेरौल जाएत। ओना, अखनो किछु गोरे भूदानी जमीन पाबि खुशहालीक जिनगी बनौने छैथ, तहिना कपड़ोक (खादी) कारोबार चलैए, मुदा नगण्य रूपमे। जहिना 'लूटमे चरखा नफा' कहल जाइ छै तहिना चरखोक नफा सठि रहल छल, मुदा अखनो बुनियादी समस्याक भीड़ कियो जाए नै चाहैत अछि। ओहन समाजो नै बनि सकल अछि। ओना, समाजो केना बनत, दुरूस्त केनिहारसँ बेसी भंगठेनिहारे अछि। बेरोजगारोक संख्या कम नै अछि मुदा ओहनो बेरोजगार तँ अछिए जेकरा मोटर साइकिल, होटल, मोबाइल होइत कपड़ा-लत्ता, भोजन-छाजन सहित बीस हजार रूपैआ महिनाक जिनगी बनि गेल अछि।

तैंतीस सूत्री कार्यक्रम लऽ कऽ मिलल-जुलल सरकार बनल। मैट्रिकक परीक्षामे अंगरेजी भाषाकेँ कमजोर कएल गेल, संग-संग हाइ स्कूल तकक शिक्षा फ्री करैक आवाज उठल।

1957 इस्वीक पछाइत अंगरेजी शिक्षा आगू बढ़ल। जइ अंगरेजीक पढ़ाइ आठमा (हाइ स्कूल) सँ शुरू होइ छल ओ मिडिल स्कूलमे प्रवेश कऽ गेल। छठासँ पढ़ाइ शुरू भऽ गेल। घीचतीड़ कऽ अठारह महिना सरकार चलल। फेर मध्यावधि चुनाव भेल। मुदा पहिलुका खिचड़ी सरकार, जे सोलहन्नी घीसँ अलग छल, ऐबेर घी-खिचड़ी सरकार बनल। समस्या-समाधानक प्रति ओते नै भेलै मुदा जन-जागरण जरूर भेलइ।

तैबीच हरित क्रान्ति कृषिमे सेहो भेल। केतौ-केतौ तँ एहेन भेल जे जइ खेतमे पाँच सेर कट्ठा होइ छल ओ खेत क्विन्टल कट्ठा उपजए लगल। मुदा अपना ऐठामक जमीनक ईहो दुर्भाग्य रहल जे खेतबला नोकरी-चाकरी करए शहरसँ

विदेश धरि पहुँच गेला, मुदा खेत तँ गामेमे रहि गेलैन। बटाइक एहेन बेवहार जे बटेदारकेँ लाभ नै होइत, पाइ-कौड़ी कमेने संस्कारो तेज भेलैन। अभावमे लोक खेत बेचैए आकि पाइयो-कौड़ी रहने लोक बेचत। से पड़ले रहत। मुदा बेच कऽ बाप-दादाक नाक केना कटाएब!

तैसंग सरकारी कार्यालय कागजी झंझटक अड्डा बनल अछि। मिथिलांचलक एक-एक समस्या मिथिलावासीक छिऐन। अखनो बच्चा सबहक स्कूलमे ऐ ढंगसँ बच्चाकेँ मारल-पीटल जाइ छै जे ओ स्कूल छोड़ि दैत अछि। एक्कैसम शताब्दीमे जौं अठारहम सदीक बेवहार चलत तँ ओइसँ समु चित लाभक आशा नै कएल जा सकैए।

जगदीश प्रसाद मण्डल 1967 इस्वीक चुनावी दौड़मे जनवरी 1967 ई.मे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टीक सदस्य बनला। चुनावो पीठेपर रहै, मधेपुरोसँ कांग्रेस पार्टी हारल।

गाम-समाजसँ लऽ कऽ देशक राजनीति तकमे अराजक स्थिति बनए लगलै। 1957 इस्वीक केरलक वामपंथी सरकार तोड़ैमे सरकारक (कांग्रेस सरकार) साख खसल। स्वतंत्रता सेनानियोँक (आजादीक लड़ाइ लड़निहारोक) संख्यामे बहुत कमी नहियेँ भेल छल। किछु प्रखर नेता जरूर मरि गेल छला। राजनीतिक क्षेत्रमे भाए-भातिज आ जातिवाद, सम्प्रदायवाद, दल-बदल इत्यादि जोर मारलक। नेतृत्वक साख सेहो घटल। जातिवाद रूपमे जेतए जनताक साख नेतृत्वक नजैरमे खसल तेतए कोनो पार्टीक विधायक सांसद कुरता-धोती पहीरि-पहीरि लोकक बीच अबए लगला। बड़का नेताक संग छोटका नेताक बलि चढ़ए लगल, किएक तँ जाति, कुटुम, गौंआँ, पड़ोसीसँ लऽ कऽ लेन-देन तक ओकर आधार बनल। बिहारोक राजनीति जटा-जटिनक नाच जकाँ झिलहोरि खेलए लगल। प्रशासनो लाभ उठौलक। भोँटक पार्टीकेँ बिनु भोँटक पार्टी दबा-दबा शासन पकड़ए लगल। एक तँ ग्राम-पंचायत सिनेमा पोस्टर जकाँ मात्र नाम गाम छल, जेकरा मजगूत करब सभसँ अहम, मुदा देशक ई एहेन संस्था छल जेकरा आरो कमजोर बना सरकारी तंत्रक हाथमे समेट कऽ रखि देल गेल छल।

कोट-कचहरीक चलती आबि गेल, केना नै अबैत? एक दिस हारल

मुखिया आ आरो-आरो सत्तासीन हुअ लगला आ दोसर दिस जनताक प्रतिनिधि सड़कपर रहि गेल। जमीन्दार-सामन्त घसाइत-घसाइत घसा गेल, गाम-गामक ओकर जमीन गौंआँक अखड़ाहा बनि गेल। जेकर लाठी, तेकर भैंसक स्थिति बनि गेल।

विचारधाराक बीच राजनीतिक पार्टीमे सेहो उठा-पटक हुअ लगल। मोटा-मोटी सामाजिक, आर्थिक, बौद्धिक, राजनीतिक सभ मंचपर वैचारिक संघर्षक संग सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण सेहो हुअ लगल, जेकर परिणाम इन्दिराजीक नेतृत्वकालमे स्पष्ट भऽ गेल। आजादीक पछाइत कांग्रेसक बीच ई पहिल वैचारिक लड़ाइ छल।

गाम-गाममे सेहो पुरोहितवादकेँ धक्का लागल। जतिया आगू पतिया नै लगै छै, ई निर्णायक भेल। मुदा जइ रूपमे आर्थिक शोषण होइ छल तइमे कमी नइ भेल। वैचारिक किछु बदलाव आएल मुदा बेवहारिक पक्ष ठामक ठामहि रहि गेल। केतबो ठामक-ठामे रहल तैयो बेवस्थाक विरोधमे किछु-ने-किछु लाभ भेबे कएल। कारणो भेल, होहामे काज तँ शुरू भेल मुदा पोथी-पत्राक भाषा तँ संस्कृते रहए। पढ़निहारोक संख्या कम आ बुझनिहार तँ सहजहि नहि। मुदा तैयो किछु-ने-किछु चक-चूक चलिते रहल। केतौ "ॐ" लऽ कऽ मारि-पीटि तँ केतौ किछु।

जहिना पोथी-पतराक दशा भेल तहिना राजनीतिक मंचपर गाँधीवादक दशा भेल। एक्के बात, एक पाँतिक व्याख्या, मुदा जेते-मुँह तेते रंगक हुअ लगल। जरूरत अछि जे ऐ समस्याक समाधान मजगूतीसँ कएल जाए, नहि तँ मूड़न आ सराधक भोजमे कोनो भेद नै रहत।

शिक्षण-संस्थान आरो एकटा अड्डा बनि गेल। कोनो तरहक प्रतिबन्ध नहि। वएह कौलेजमे गाँधीवादी सिद्धान्तो पढ़ौता आ फील्डमे आबि खिल्लियो उड़ौता, आ विधानसभा संसदमे ओ सभ बिकेबो करता। एहेन खेल धरल्लेसँ भेल। मुदा एकटा जरूर भेल जे जहिना 1942 इस्वीमे अंगेज विरोधी हवा पैदा केलक तहिना 1967 इस्वीक हवा सेहो केलक। एक दिस रौदीक मारल किसान, सामन्त-पूजीपतिक बीच विवाद, जाति-जातिक आ वर्ग-जातिक बीचक दूरी,

जोतल खेत जकाँ चौकिया कऽ एकबट्ट भऽ गेल, मुदा से सोलहन्नी नै भेल।

ओना, कोसीक पुल-बान्ह (नेपाल फाटक सहित) बनल, कोसी नहरमे हाथ लागल, मुदा की लाभ भेल से देखते छिऐ।

जइ तरहक हलचल कौलेज आ हायर शिक्षण संस्थानमे भेल तइ तरहक हलचल हाइ स्कूलमे नै भेल। मिडिल स्कूलक तँ चर्चे नहि। जे युनिवर्सिटीक सर्वोच्च पद (भी.सी) विद्वत मण्डलीक बीच छल ओ प्रशासनिक अफसरक हाथ जाए लगल। केना ने जाइत, विद्वता आ प्रशासनमे तँ किछु बेवहारिक अन्तर अछिए। कोनो कारगर नियमो नै लगौल जा सकैए। किछु सरकारी कौलेज तँ किछु गैर सरकारी। किछु बनिते तँ किछु बनैक विचारे करैत। एहेन स्थितिमे नियममे मजगूती केना औत। ऊपरका धार निच्चाँ दिस बहल। विद्यार्थियो सभ, जे साल भरि नेतागिरी केलैन ओ परीक्षा केना पास करता। तहूले तँ कानूनेक जरूरत। हूड़ उठल आ एक्के-दुइए किछु कौलेज छोड़ि परीक्षामे चोरी शुरू भेल। कॉपी जँचनिहारोकेँ अगहन हाथ लगलैन। केतेक कण्ठी शिक्षकक बीच टुटल। पाइ हाथ लगने लोक शहर दिस सेहो बढ़ला। खाएर किछु हउ मुदा किछु कमजोर लोकक विद्यार्थीकेँ जरूर लाभ भेलैन। ओना, जेते हेबाक चाही से नै भेलैन। रंग-बिरंगक प्राइवेट कौलेज कागजेपर उठि कऽ ठाढ़ भेल। कागजेपर पढ़ाइ, कागजेपर परीक्षा आ कागजेक डिग्री बिकाए लगल, जइसँ बुनियादी समस्या छुटि गेल। ने मेडिकल कौलेज बढ़ल आ ने इंजीनियरिंग, ने इंजीनियर ने कारखाना, ने टेकनीकल कौलेज बढ़ल आ ने कुशल कारीगरक निर्माण भेल। ने एग्रीकल्चर कौलेज बढ़ल आ ने कुशल किसान बढ़ल।

उत्तर-दच्छिन बिहारक सम्बन्धसँ ऐठामक (मिथिलांचल) पढ़ल-लिखलकेँ दच्छिन बिहारमे नोकरी भेटलैन। बहुत गोरे घरो-अँगना बना लेलैन, मुदा दुनू राज्यकेँ विभाजित भेने भाषाक सीमाबन्दी भेल। ओना, जेहेन एकरंगाह भाषा मिथिलांचलक अछि ओहन दच्छिन बिहारक नै अछि। कारणो भेल, जखन कल-कारखाना अछिए नहि तखन कोन नोकरी पाबए आन राजक लोक औता। तँए भाषामे कोनो धक्का नै लागल।

हिन्दी आनर्सक संग बी.ए. पास केलैन जगदीश प्रसाद मण्डल, 1969-

71 इस्वीक बैचमे सी.एम. कौलेजमे नाओं लिखेलैन। पढ़ाइक स्तर सेहो कमि चुकल छल। प्रोफेसर आ विद्यार्थीक बीचक सम्बन्धमे जबरदस धक्का लागल, जइसँ शिक्षकक प्रतिष्ठामे कमी आबए लगल। नीक शिक्षक अपन मुँह बन्न कऽ अपन प्रतिष्ठा बँचबैमे लगि गेला। आक्रोश शिक्षकोक बीच बढ़बे कएल। पाइ-कौड़ीक लेन-देन आ पैरबी-पैगाम खूब बढ़ल। एक दिस जाति आधारित छात्र-शिक्षकक बीच सम्बन्ध बढ़ल तँ दोसर दिस (आन-जातिमे) सम्बन्धमे कमियो भेल।

ओना, तँ सभ क्लासक मुदा एम.ए.क परीक्षा तीन साल पछुआएल रहए। क्लास सम्पन्न केलाक पछाइत जगदीश प्रसाद मण्डलजी गाम आबि परीक्षाक प्रतीक्षा करए लगला। तैबीच बेरमा गाममे दुर्गापूजाक विचार उठल। जेतए-तेतए चर्चा हुअ लगल। अधिकांश लोक पूजाक पक्षमे रहैथ। मुदा दुर्गापूजा तँ आन पूजा छी नहि, जे कमो जगहमे कएल जा सकैए। ऐ लेल अधिक जगहक जरूरत होइत अछि। कारण जे एक तँ दस दिनक पूजा, तैपर दोकान-दौरी, मेला, नाच-तमाशा सेहो होइए।

गौंआँक बीच सहमति बनले रहै, स्कूलक प्रांगनमे बैसार भेल। ओना, तइसँ पहिनौं गौंआँक बैसार केते बेर भेल मुदा जेते लोक ऐ बैसारमे उपस्थित भेला ओते उपस्थिति कहियो नै भेल छल। तहिना बैसारमे बजनिहारोक संख्या बढ़ल। नव पीढ़ी कान्ह उठौलैन।

बैसारमे पूजा स्थलक चुनाव हुअ लगल। दू -तीनटा जगह ओहन भेटल जइमे दुर्गापूजा सम्हैर सकैए। मुदा खाली जगहेटा सँ तँ नइ हुअए, दिन-रातिक मेला, तँए सुरक्षो अनिवार्य अछि। जइसँ सुरक्षित जगहक महत बढ़ल। स्कूलेक प्रांगनक सहमति बनल।

दोसर प्रश्न उठल बलि प्रदानक। बेरमा गामक परोपट्टामे दुर्गापूजा दुनू ढंगक चलैत, वैष्णव दुर्गा सेहो जेतए बलि प्रदान नै होइत। माने किछु ठाम बलि प्रदानो होइत आ किछु ठाम नहियोँ होइत। गप ओझरा गेल। एक मतक गाममे दुनू मत पनपल। जहिना बैसार एक मतसँ शुरू भेल तहिना दू मतमे विभाजित भऽ गेल। बलि प्रदानक पक्षसँ अधिक लोक विपक्षक भऽ गेल। दोसर दिस पूजा

करीब आबि गेल रहए। जौं हू सि जाएत तँ साले हूसि जाएत, ईहो बात सबहक मनमे रहैन।

घमर्थन होइत-होइत बलि प्रदान रूकल। मुदा विवाद बढ़िए गेल। विवाद बढ़ैक कारण भेल जे पंचायतक जे मुखिया रहैथ, हुनकर प्रभाव अधिक रहैन। मुदा समाजोमे नव चेतना जागि चुकल छल। शुरूमे (1952 ई.) जखन पंचायत बनल तखन जे मुखिया बनला ओ 1962 इस्वीक चुनावमे हारि चुकल छला, ओहो मतभेद रहबे करैन।

पूजासँ दस-बारह दिन पहिने एकटा जबरदस घटना गाममे घटल। ओ घटना ई जे मौजुदा मुखिया किछु गनन-चुनल लोकक विचारसँ दोसर स्थानपर, माने स्कूलक प्रांगनसँ अलग स्थानपर पूजाक न्यों लऽ लेलैन...।

समाजक बीच आक्रोश बढ़ल। मुदा आगू बढ़ैक हिम्मत किनको नहि। मनमे उत्साह जरूर मुदा डरो। कारणो स्पष्ट छल जे इलाकाक मुँहगर लोकक समर्थन ओही स्थानकेँ भेट गेल।

जगदीश प्रसाद मण्डलजी आ आर किछु लोक सभ दोहरा कऽ बैसार करैक विचार केलैन। सोझहा-सोझही कियो विरोध नै केलखिन मुदा खुलि कऽ कियो अबैयोले कियो तैयार नहि। जबरदस समस्या उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। ई बात सभ बुझैत जे जहिना खटपट भेलोपर बिआहक पछाइत समझौता भइये जाइत अछि तहिना ऐबेरक हुसलापर पूजोमे हेबे करत। तँए मौका हाथसँ निकलने पूजे निकैल जाएत। किछु लोकक बीच बैसार भेल।

बैसारमे तँइ भेल जे दोसरो पूजा हुअए। सएह भेल। संग-संग ईहो तँइ भेल जे समाजसँ बाहर चन्दा करए नै जाएल जाए, भलेँ जेतबे चन्दा हएत तेतबे लऽ कऽ पूजा कएल जाए। नै पान तँ पानक डंटीए-सँ काज चलाएल जाए...। मुदा दोसर दिस (जइ दिस मुखिया रहैथ) चन्दाक भरमार भेल। सरकारीसँ लऽ कऽ आनो-आन पंचायतक 'चन्दा' भेल। संग-संग ईहो भेल जे गाममे बन्हुआ चन्दा सेहो भेल, 'चन्दा' देनिहारक विचारसँ होइत अछि नै कि जबर्दस्ती, मुदा सेहो भेल। चन्दाक नाओंपर जुरिमानाक रूप पकड़लक, खुलि कऽ नहि, चुपे-चाप। परिस्थितियो अनुकूले पकड़ाएल। जे आदमी झगड़ा-झंझटमे ओझरा गेल

अछि ओ केतए जाएत। मुदा समाज (गाम)मे तँ कोनो बात छपित नहियेँ रहै छइ। तीन-पार्टीमे समाज बँटि गेल। दुनू दुर्गास्थानक दू पार्टी आ तेसर दू-दिसिया। दू-दिसियाबला सभ बन्हुआ चन्दामे फँसला।

पूजाक आरम्भ भेल। दुनू स्थानक बीच किछु खास-खास अन्तर भेल। ओ ई भेल जे जगदीश प्रसाद मण्डल आ आर लोक सभ गामक लोककेँ नव दोकानदारक रूपमे ठाढ़ केलैन। कियो मिठाइ तँ कियो दोसर चीजक दोकान केलैन। समाजक चन्दासँ पूजा हएत, समाजेक लोक दोकान करता, तँए मेलामे बट्टी (टेक्स)क प्रावधान समाप्त कऽ देल गेल। किछु गोरे ताल ठोकि ठाढ़ भऽ गेला जे हमहूँ सभ ओहिना पूजाक आयोजन करब जहिना ओ सभ करता। भलेँ चन्दा नै पूरत तँ बेकतीगत रूपमे देब। एहेन करीब पान-सात गोरे भेला। तैसंग ईहो तँइ भेल जे, ओइ स्थान (दोसर स्थान) पर अपना सभ नइ जाएब।

फेर दू-दिसिया सभ फँसला। फँसबे नै केलाह, जेमहर जाथि तेमहर लोक लू-लू, थू-थू करैन। एमहर आबैथ तँ ओमहुरका आ ओमहर जाथि तँ एमहुरका, मुहेँ-काने बोकियाबए लगलैन। पुरान पीढ़ीक विचारकेँ धक्का लागल। नव पीढ़ीक हाथमे समाज आएल। तैसंग ईहो भेल जे बेरमा गामक बगलक गाम-जगदर आ कछुबी सेहो बँटा गेल, जइसँ दुनू गामक समर्थन दुनू स्थानकेँ भेटल।

मिलि-जुलि सरकार बनने हाइयो स्कूल प्रभावित भेल। किएक तँ किछु स्कूल सरकारक नियंत्रणमे आएल। जे आएल ओकर हालतो सुधरलै आ शिक्षकक वेतनो बढ़लैन। मुदा जे नै आएल ओ ठामक ठामहि रहि गेल। जइसँ एक नव लड़ाइ शिक्षो विभागमे शुरू भेल। ❑

1960 इस्वीक पछाइत...

1960 इस्वीक पछाइत जगदीश प्रसाद मण्डल केजरीबाल हाइ स्कूलमे नाओं लिखा लेने रहैथ। स्कूल अबै-जाइक परेशानीसँ साइकिल कीनैक विचार परिवारमे भऽ गेलैन। ओना, जखन टेन्थ (स्पेशल नाइंथ) मे रहैथ तखन दू साए बासैठ रूपैआमे सैब्रो साइकिल कीनि लेलैन। मुदा जहिना सीमा परहक सिपाहीकेँ दुश्मन सिपाहीक हाथ पकड़ेलासँ होइए तहिना समस्याक सिपाही चारू दिससँ परिवारकेँ घेर लेलकैन। दुनू पिसियौत भाय (जेठ गोनर मण्डल आ तइसँ छोट कारी मण्डल) केँ अपन बाप-दादाक डीह-डाबर जगलैन। कोसी धारक मुँह जे पच्छिम दिस जोर केने छेलै ओ आब पूब दिस जोर केलक, जइसँ किछु गाम जेना हरिनाही, मैनही, अमही, हर्ड़ी इत्यादि क्षेत्रक जमीनक किछु भाग जागलै। भागल-पड़ाएल गामक लोक, अपन बाप-दादाक डुमल सम्पैतिक आशामे कान ठाढ़ केनहि रहैथ, अपन-अपन गाम घुमबाक विचार केलैन। अही क्रममे, जगदीश प्रसाद मण्डलजीक पिसियौत भाय बेरमासँ हरिनाही, अप्पन गाम घुमबाक विचार केलैन।

बनल-बनाएल गाममे लोकक एहेन थोड़ेक स्वार्थी प्रवृत्ति बनिए जाइए जे सौंसे गामक सभ किछु हमरे भऽ जाए। प्रवृत्ति बेजाए नहि, मुदा खाली सम्पैतिये नै मनुखोक भार जौं उठा लैथ । हरिनाहीक कियो केतौ, कियो केतौ, केतौ-केतौ एहनो जे पान-सात परिवार एकोठाम छला। अपन कुटुमैतीक संग-संग नेपाल धरि पसैर गेल छला। सभसँ दुखद स्थिति गामक तखन भेल जखन सुभ्यस्त परिवार सबहक, जइ परिवारक लोक अपन घर-अँगनाक काजसँ बाहर नै भेल छेली, ओ सभ जखन बोनिहारिन बनि भरि-भरि दिन अनका खेतमे, जिनका घरमे पचमनही कोठी-बखारी सभ छेलैन, एक पसेरी (कच्ची) अन्नपर अपन श्रम बेचैले मजबूर भेली। मुदा उपाए की? ई बात सत्य अछि जे समयानुसार हाथकेँ हथियार नै भेटत तँ ओ पाछू भगबे करत, हरहरा-हरहरा कऽ

पाकल जामुन जकाँ हुनका सबहक जिनगी उतैर गेलैन। जिनगीक सभ किछु हेराए लगलैन। हेराइये गेलैन। भागल-पड़ाएल लोककेँ आन देश आ आन गाममे सरकारी सहायताक केते आशा होइत ओ तँ सबहक सोझहेमे अछि। जे अखनो गाममे ओहन गरीब लोककेँ इन्दिरा आवास नै भेट रहल छैन जिनका अपना नामे जमीनक कागत नै छैन।

1960 इस्वीक कातिक। अपन गाम देखैले पिसियौत भाय-गोनर मण्डल हरिनाही गेला। घोघरडीहामे ट्रेनसँ उतैर भाँज लगौलैन तँ पता लगलैन जे पहिने हटनी, हटनीसँ नौआ-बाखैर, नौआ बाखैरसँ अमही तेकर बाद हरिनाही। केते दूर हएत तँ दू कोस। दू कोस बुझि मनमे उत्साह जगलैन जे दू कोस जाइमे बेसी -सँ-बेसी दू घन्टा समय लागतैन। मुदा ई नै बुझि सकला जे घोघरडीहा हटनीएक बीच तीनटा धार पार करए पड़तैन। तहूमे गमैया सवारी छिऐ किने, लोकेक विचारे ने चलैत अछि। चारि घन्टामे हटनी पहुँचला। हटनी नौआ-बाखैरक बीचक सीमामे एकटा सेहो नमहर धार।

गोनर मण्डल सूर्यास्त भेलापर हरिनाही पहुँचला। गोनर मण्डलक एकटा दियाद पहिनहि आबि गेल छला जइसँ ओ बीघा डेढ़ेक जमीनक मालिक बनि रसाएल खेतक उपजा पाबि कुटुम-परिवार दिस ताकए लगला। हरिनाही पहुँचते दियादी भाय चुल्हाइ मण्डलक पाहुन बनि गेला। गरूगर रस्ता देख दू दिन रहैक आग्रह चुल्हाइ मण्डल केलखिन।

गोनर मण्डलक गामक जे पहिलुका बास-भूमि छेलैन ओ गहींर भऽ गेल रहै आ बाध ऊँच बनि गेल छेलइ। मुदा ओ अखन सुपौल जिलाक सीमा कात अछि आ घर मधुबनी जिलाक हरिनाही गाममे आ सभ अगवास सुपौल जिलाक हर्ड़ी गाममे। जैठामक हेमलताजी छैथ जे फुलपराससँ विधायक रहि चुकल छैथ। करीब पनरह परिवार आबि गाममे बसि गेल। तइमे दू प रिवारक खुट्टापर बरदो आबि गेल। बाँकी सभ कोदारिक जिनगीमे। अपन जागल घराड़ी आ पोखैर देख गोनर मण्डल आकर्षित भऽ गेला। बास जोग तँ नहि, मुदा चास जोग जमीन देख चुल्हाइ मण्डलकेँ कहलखिन-

“भैया ऐगला आठम दिन एतै छी।”

चारिम दिन बेरमा आबि मामीकेँ कहलखिन-

"मामी! हम अपन गाम- हरिनाही जाएब।"

मामी- "केना जेबहक?"

गोनर- "बाँस अपना अछिए। एकटा लऽ जा कऽ पहिने घर बनाएब तखन बुझल जेतैक।"

जहिना कोनो ब्रह्मचारी ब्रह्माश्रमसँ निकैल दुनियाँ दिस देखते सतरंगी दुनियाँ देखए लगैत तहिना ओहो (गोनर मण्डल) देखलैन। केना नै देखितैथ। पूर्वक हेराएल गाम-घर, दियाद-वाद, सर-समाज जे इतिहास बनि चुकल छेलैन, से जे सोझहामे आबए लगलैन। ओना, हुनका (गोनर मण्डल) एक बीघा धनहर आ अढ़ाइ कट्ठा बासक भूमि माम (जगदीश प्रसाद मण्डलजीक पिताजी) कीनि देने छेलखिन। ओहो दुनू भाँइ (गोनर म ण्डल आ कारी मण्डल) हरिनाही बिसैर गेल छला। केना नै बिसैरतैथ हेराएलो जमीनक दस्ताबेज-खतियान जौं हाथमे छै तँ आशा बनल रहैए। जैठाम ओहो (दस्ताबेज, खतियान) नै रहल ओ तँ पानिक पाथर जकाँ केतए डुमल अछि तेकर कोन ठेकान। आ जौं हेलबैया (पा निक भाँज बुझनिहार) रहल तँ भाँजो-भुज लगा सकैए मुदा अनाड़ी तँ अनाड़िए छी।

सातम दिन एकटा बाँस काटि पाँङ्गि-पुङ्गि कऽ गोनर मण्डल तैयार केलैन जे काल्हि गाम जाएब। बेरमासँ हरिनाही जाएब। चारि दिन रहि, पहिने रहै-जोकर घर बना लेब, तखन आगू बुझल जेतैक।

मामीकेँ गोनर मण्डल कहलखिन-

"मामी, चारि दिन रहि पहिने घर बना लेब। पाँचम दिन फेर एतै छी।"

मामी–जगदीश प्रसाद मण्डलजीक माए–बजली-

"बड़बढ़ियाँ, एक अढ़ैया चाउर आ एक अढ़ैया चूरासँ तँ काज चलि जेतह?"

असमंजसमे गोनर मण्डल पड़ि गेला। जेते अधिक बेसी खाइक ओरियान करब ओते रस्तामे भारियो हएत किने आ से शरीरो आ मोटरियो। एक तँ सात-आठ कोस धार-धुरक रस्ता, तैपर बाँस आ खाइक समान। बहुत भारी

हएत। गाममे माने बेरमामे भरि पेट जलखै कऽ लेलैथ आ रस्ता-ले बान्हि लेलैथ। अपन लोटा-थारी, आ लत्ता-कपड़ा नै लेब, सेहो नै बनत। अन्तमे एकटा छिपली, एकटा लोटा, बिछबैले दूटा बोरा, एक अढ़ैया-चूरा आ एक अढ़ैया चाउर लऽ कऽ दोसर दिन विदा भेला। एक तँ ओहन भारी काज जिनगीमे कहियो नै केने रहैथ। हँ एते जरूर छेलैन जे बँसबारिसँ बाँस काटि आ बाधसँ धानक बोझ उघि कऽ अनै छला तहिना बाधसँ हर जोता दूगोरा चौकी अनै -लऽ जाइ छला, मुदा एते भारी काजसँ पहिल दिन भेँट भेलैन।

बेरमासँ निकैल कछुबी-तमुरिया होइत सुन्दर-बिराजीत जाइत-जाइत बेदम भऽ गेला। पाछू हिअबैथ तँ दुइए कोस टपला, आगू हिअबैथ, तँ अखन पौनी-चपराम, कलिकापुर, मटरस तँ कोसी बान्हक बाहरे भेल। मटरसमे ने कोसी बान्ह टपि भीतर हेता। तैयो तँ मटरस टपि दू कोस भीतरो जाइए पड़तैन। किछुए क्षणक पछाइत गोनर मण्डलकेँ अबूह लागि गेलैन। जिनगीक बाटमे बच्चा जकाँ बुकौर लागि गेलैन। मुदा सुसतेलाक किछुकालक बाद फेर हूबा केलैन। पानि पीब बाँस उठा विदा भेला। मटरस बान्हपर पहुँचैत-पहुँचैत शरीरमे धाह-जाड़ आबि गेलैन। एहेन जगहमे के भेँट हएत? कियो चिन्हारे नहि। गाम-घरमे ने माए-बाप रहने बच्चा फोंसरियोकेँ गुड़-घा कहै छै मुदा नै रहने तँ गुड़ो-घा फोंसरीए भऽ जाइ छइ।

बेरमाक पच्चीसोसँ बेसी कुटुमैती मटरसमे तहियो छल आ अखनो अछि। कोसी बान्हपर बाँस राखल आ हिनका (गोनर मण्डलकेँ) पड़ल देख एक गोरे लगमे एलैन। ओ बाध-सँ-गामपर जाइत रहैथ। लगमे आबि पुछलखिन-

"केतए रहै छी?"

धाह-जाड़सँ कँपैत गोनर मण्डल बजला- "बेरमा।"

"केतए जाएब?"

"हेरनाही।"

"एहेन अवस्थामे केना जाएब?"

"सएह ने किछु फुरैए।"

“एकटा काज करू, हमहूँ कियो आन नै छी। हमरो बहिन अहीं गाममे बसैए। कुटुमे भेलौं।”

कुटुमक नाओं सुनिते गोनर मण्डलकेँ जेना एकाएक केतौसँ होश एलैन। कहलखिन- “कुटुम नारायण! कहुना-कहुना जौं गाम (बेरमा) घुमि जाएब तँ जान बँचि जाएत, नहि तँ नै बँचब।”

“ऐठामसँ घोघरडीहा गेल हएत?”

“खाली देहे चलि जाएब।”

“सभ समान हमरा ऐठीम रखि दियौ आ अहाँ चलि जाउ। यएह (बान्हसँ सटले पूब) हमर घर छी।”

आशा पाबि गोनर बजला- “अपना संगमे चूरो अछि। चलू कनियेँ खाइयो लेब आ रखि कऽ चलियो जाएब।”

जोशपर तँ घोघरडीहा स्टेशन विदा भेला मुदा रस्तामे एहेन स्थिति भऽ गेलैन जे ने बाट सुझैन आ ने आगू उठि पबैन। ओइ समय चारि बजे गाड़ी निर्मलीसँ अबैत रहइ। संजोग नीक बैसलैन। गाड़ी पकड़ा गेलैन। सात बजे साँझमे आपस बेरमा पहुँचला।

एक तँ भरि दिनक थाकल तैपर बोखार, गाम अबिते बोम फाड़ि ओहिना कानए लगला जेना माए-बापक सोझाँमे बेटा-बेटी कनैए।

अपन पोसल-पालल केर दशा देख मामी–जगदीश प्रसाद मण्डलजीक माए–ऐ रूपे कानए लगली (डाक स्वरमे) जेना भागिन नै बँचतैन। ताधैर दुनू भाँइक बिआह-दुरागमन भऽ गेल रहैन। दुनू दियादिनियोँ बेरमेमे। ले बलैया! जहिना साँझूपहर एकटा नढ़िया कोनो झाड़ीसँ निकैल ‘पू’ कहैत आकि जहाँ-तहाँसँ नढ़िया भूकए लगैत। तेतबे नहि, पास-पड़ोसक नढ़िया सभ सेहो समटा-समटा एकठाम भऽ समवैत स्वरमे भुकए लगिते अछि। किए ने भूकत? डरे जे भरि दिन झाड़ी धेने रहैए, ओकरा तँ अन्हारे ने संगी हेतइ। जहिना चोर दुनू रंगक होइए दिनुको आ रौतुको, तहिना ने नढ़िओकेँ चरौर करैक समय भेटै छै, तहिना मामीकेँ कनिते दुनू दियादिनी सेहो झौहैर करए लगली। झौहैर सुनि एक्के-दुइए

टोलक लोक ससैर-ससैर आबए लगली। गोनर मण्डलकेँ बिनु देखनौं लोक आँखि मीड़ि-मीड़ि कियो ठुनकए लगली तँ कियो किछु तँ कियो किछु बाजए लगली।

पाँच दिन पहिने भदबा बीत चुकल छल मुदा एकटा बुढ़ीकेँ अन्तिम दिन भदबाक पता लगलैन। ओ ओही दिनसँ जोड़ैथ जे आइ छठम दिनक भदबा छी। बजली- "केना पहिले-पहिल डेग भदबामे उठौलक। जानि कऽ आगिमे पाकए जाएब तँ जरब नहि!"

जैठाम सभ कननिहारे जमा भऽ जाएत तैठाम चुप के करत? खाएर जे हौ...।

मास दिनक पछाइत ओ–गोनर मण्डल–काज-उदम करैबला भेला। अगहनक कटनी बजैर गेल रहए। तहूमे 1958 ई.मे सेहो नमहर बाढ़ि आएल रहए। कहैले तँ बाढ़ि दहारक कारण छी मुदा उपजोक कारण छी मुदा ई निर्भर करैत अछि गाम-गामक जमीनक बुनाबटपर। कोनो गाममे गहींर खेत बेसी अछि जइमे जौं शुरूहोमे दूटा नमहर बरखा भऽ जाएत तँ पानि पकैड़ लैत आ एहनो ऊँचगर गाम सभ अछि, बलुआहा गाम जइमे जेतबेकाल बरखा भेल तेतबेकाल पानि रहल, बाँकी बरखो गेल पानियोँ गेल। गाम सुखल-क-सुखले रहि गेल। ओहन गाम लेल बाढ़ि खेलौना छी, तँए जौं छहरो-बान्ह काटि कऽ खेल खेलल जाए तँ की हर्ज जे एहेन खेल नै हुअए।

दुश्मन सिपाही हाथे घेराएल सिपाही जकाँ परिवार घेरा गेल रहए। एक तँ 1958 इस्वीक बाढ़िसँ परिवार धँसि गेल रहैन। किए ने धँसैत। एक बाढ़ि वा एक रौदी, कृषि आधारित परिवारकेँ पाँच साल धक्का मारैत अछि। शुरूहे फागुनमे जगदीश प्रसाद मण्डलजीक दुनू पिसियौत भाय बाँस आ खेनाइ-खर्चाक संग हरिनाही गेला। बाँसक खुट्टापर मनेजरक कोरो-बातीक घर ठाढ़ कऽ काशसँ छाड़ि लेलैन। रहैक ठौर होइते अपन पोखैरबला जमीनकेँ साफ कऽ ताम-कोर करए लगला। खट्ठा पटेर-झौआक बोन हरिनाही। जहिना वियतनामक लोक एक-एक इंच भूमि, जे बम-बारूदमे नष्ट भऽ चुकल छल, खेती योग्य बनौलैन तहिना हरिनाहीक लोक गामक बोन उजाड़ए लगला। बोन

एहेन जे दस धुर तमनिहार अपनाकेँ मेहनती बुझैत।

दुनू भाँइ–गोनर मण्डल आ कारी मण्डल–मिलि बोनो तोड़ैथ आ गाम (बेरमा) आबि-आबि खरचो लऽ जाइथ। छह मासक पछाइत पहिल उपजा हाथ लगलैन। ढेनुआर गाए जकाँ एकसंग जली[1], मकइ, काउन इत्यादि हाथ लगलैन। परिवारक काज बढ़लैन। खेती लेल एकटा बरद सेहो कीनि कऽ लऽ गेला। परिवारक एकटा रूप रेखा तैयार भऽ गेलैन।

अखन धरि हरिनाही गाममे बीस परिवार बसि चुकल छला। तीनटा चापाकल सेहो गरि चुकल छेलइ। पानिक सुविधा से भऽ गेल रहैन। बीस फीट पाइप, छह फीट फील्टरमे चापाकल भऽ जाइ छेलइ। नगदी फसल, पटुआक खेती शुरू भेल। तीस-पैंतीस बीधा जमीन उपजाउक हरिनाही गाम बनि गेल।

1962 ई.मे कारी मण्डल (जगदीश प्रसाद मण्डलजीक छोट पिसियौत भाए) बीमार पड़ला। नीक बीमार। इलाजक कोनो सुविधा हरिनाहीमे नहि। तइ समयमे दरभंगा जिलाक झगडुआ गामक एक गोरे बेरमेमे डॉक्टरी करै छला। मुसलमान छला। जगदीश प्रसाद मण्डलक मनसारा मात्रिक। मनसारा-झगड्आ सटले दुनू गाम। जइसँ हिनका सबहक मामा -भगिनाक सम्बन्ध ओइ डॉक्टर साहैबक संग बनल छेलैन। ओना, ओ रहै छला मुसलमान टोलमे, मुदा मात्रिकक अनेसँ बेसीकाल अहीठाम रहै छला। हुनका माए कहलकैन जे ‘भैया, भागिन बड़ दुखित अछि।’

ओ जाइले तैयार भऽ गेला।

ओइ समय बेरमामे दूटा वैद्य छला। पहिल सुन्दर ठाकुर आ दोसर छला नीरस महतो। सुन्दर ठाकुर पण्डित छला। आचार्य छला। मुदा शरीरसँ अबाह (नाँगर) छला आ थोड़ेक बोली तोतराइ छेलैन। मुदा ओ जिनगीकेँ एते लगसँ देखै छेलखिन जे परिवारसँ किछु हटि अपन आश्रम बनौने छला। औषधालय नाम छेलइ। खेत-पथारबला परिवार रहने औषधालय अइल-फइलसँ बनौने छला। औषधालयक आँगनमे सैयो रंगक जड़ी-बुटी सभ लगौने छला।

[1] धान

नियमबद्ध जिनगी छेलैन सुन्दर ठाकुरक। ओना, नियम भंग सेहो होइत रहैन। नियम भंगक कारण छेलैन वैदागरी करब। वैदागरी[2] ओहन पेशा छी जे जिनगीक अन्तिम घाट धरि बसैत अछि। तँए कखन कोन घाटक यात्री चलि औत तेकर ठेकान नहि। मुदा वैद्यजी मे किछु कर्मक प्रति मजगुती सेहो रहबे करैन। मजगूती ई रहैन जखन ओ पूजा करए लगैथ तखन कियो हुनका टोकि नै पबैत। तइले ओ एकटा ओगरबाह रखै छला। मुदा मनमे ई कचोट रहबे करैन जे जइले पूजा करै छी जौं ओ देवता आगूमे च लि आबैथ तखन की करब? मुदा किछुए दिनक पछाइत हुनक रूटिंग बदैल लेलैन। चौबीस घन्टाक गाड़ीमे लोक अपना-अपना ढंगसँ अपन रूटिंग जहिना अपन काजक हिसाबे बना लैत अछि तहिना ओहो दिनक पूजा करब छोड़ि रातिमे करए लगला। जइसँ सभकेँ बरबैरे लाभ हुअ लगलैन। जिनगियो नमहर बनौने छला, अठबारे घोड़ापर चढ़ि आन-आन गामक वैद्य सभ ऐठाम जाइ छला आ हिनको ऐठाम अबै छेलैन। जइसँ वैचारिक सम्बन्धसँ लऽ कऽ बेवहारिक–जड़ी-बुटीक गाछ लगबैक सम्बन्धसँ लऽ कऽ दबाइ बनबैक ढंग धरि–सम्बन्ध मजगूत छेलैन। दोसर वैद्य छला नीरस महतो। पण्डित सुन्दर ठाकुर जकाँ नीरस महतो पढ़ल-लिखल नहि, मुदा मनुखोक तँ अजीव बुनाबट अछि। कियो कौलेजसँ पढ़ि डॉक्टर-इंजीनियर बनै छैथ, तँ कियो गामे-घरमे घुमि-फिरि बनि जाइ छैथ...। तहिना ओहन रामायण आ महाभारत पढ़निहार–गाबि कऽ पढ़निहार–केतेको छथिए। जिनका अपन नाओं-गाओं लिखए नै अबै छैन। खाएर...। माटिसँ उपजल वैद्य नीरस महतो छला। गाममे दुनू गोरेक इलाज चलैत रहैन। मुदा एलोपैथी दबाइक आगमन सेहो गाममे भऽ चुकल छल। जइसँ बेरमा गामक बगलक गामक टुनीबाबू आ बुचकुन बाबूक आवाजाही सेहो भऽ गेल छेलैन। झगड़ुआबला डॉक्टर करीब पनरह बरख बेरमामे रहला। जगदीश प्रसाद मण्डलक माइयो हुनका भैयै (भैया) कहैन आ ओहो बहिनियेँ कहथिन। टोलक (मुसलमान) लोक डॉक्टर साहैब कहैन तँ किछु टोलक लोक मोलबी-साहैब सेहो कहैन। ओना, ओ नवाजी सेहो

[2] डॉक्टरी

छला। किछु टोलक लोक 'मोलबी साहैब डॉक्टर' कहैन तँए हुनकर असल नाउँए हेरा गेल रहैन।

जगदीश प्रसाद मण्डलक जेठ भाय (कुलकुल मण्डल) माए आ मामा (डॉक्टर) तीनू गोरे तमुरियामे गाड़ी पकैड़ घोघरडीहा बान्ह (कोसी) तक तँ उत्साहसँ गेला, मुदा बान्हपर सँ जे देखलैन तँ माइयो आ भैयोक मन डरि गेलैन। आगू डेग बढ़बैक हिआउए ने होइन। बान्हक बगलेमे नमहर धार। जेकर पानि काफी तेज गतिमे चलैत। मामा बुझि गेलखिन तँए धैर्य बढ़बैत बजला-

"बहिन, ई कोन धार छिऐ! ऐसँ नमहर-नमहर धारमे नाह चलबै छी आ हेलबो करै छी। केहेन बढ़ियाँ नाह छइ। जहिना सभ पार करत तहिना अपनो सभ पार करब।"

तैबीच एक गोरे हरिनाहीए गामक भेट गेलैन। बान्हेपर पूछ-आछसँ भाँज लगि गेलैन। शहर-बजारमे बिना मतलबे किछु पुछब नीक नै होइ छै मुदा धारक इलाका, बोनक इलाका, मरूभूमिक इलाकामे ओहन नीक होइ छै जे संगी भेट जाइ छइ।

तीनू गोरे हरिनाही पहुँचला। डॉक्टरक नाओं सुनिते आनो-आन परिवारक लोक जमा भऽ गेल। पहुँचते सूइया-दबाइ चालू केलैन। कारी मण्डलक इलाज शुरू भेल।

चाहक नीक अभ्यासी डॉक्टर साहैब। ओना, चाहेटा हुनक अमलो रहैन। गाममे चाहक दोकानक कोन बात जे चाहपत्ती-चिन्नीक दोकान नहि। बेरमासँ जखन विदा भेला वा घोघरडीहामे जखन गाड़ीसँ उतरला तैयो नै मोन पड़लैन। मोनो केना पड़ितैन? बिनु देखल जगह केहेन अछि, केहेन नहि तइ दिस नजैर किए पड़ितैन। पहिल दिन तँ कहुना खेपला मुदा दोसर दिन तबाही हुअ लगलैन। बिनु चाह पीने मने भङ्गैठ गेलैन। इमहर माइयो आ भैयोकेँ बुझि पड़ैन जे केतए आबि गेलौं।

पहिल दिनक इलाजसँ हुनका (कारी मण्डल) मे किछु सुधार भेलैन। मामाकेँ (डॉक्टर साहैब) एक दिस चाहक झपनी धेने रहैन तँ दोसर दिस रोगक इलाजसँ मनमे खुशियो उपकैत रहैन।

अखन धरि गाममे गोर दसेक महींसो-गाए भऽ गेल छेलइ। सहरसा जिला (अखन सुपौल) आ मधुबनी जिलाक सीमा-कातमे हरिनाहियो आ हर्ड़ियो गाम बसल अछि। तइ बीचमे एकटा मरना धार अछि जे हरिनाहियो आ हर्ड़ीओ दुनू गामकेँ उपटौने छल। गोनर मण्डलजीक घर गाममे सभसँ पच्छिम छैन। किएक तँ जहिना बजार आगू मुहेँ करि कऽ घुसकैत चलैए तहिना ने नव गामो चलैए। पूवे-पच्छिमे गाम, ओना ओ सूर्यमण्डल गाम भेल। जे बासक हिसाबसँ (पहिलुका) नीक नै भेल, किएक तँ आगि-छाय आ हवा-बिहाड़िक दृष्टिसँ उजार बेसी हएत। धारक भीता काते-काते जहिना पच्छिम तहिना पूब। गोनर मण्डल अपन दियाद चुल्हाइ मण्डलकेँ कहलखिन जे सभ दियाद लगाइये कऽ घर बान्हब। पछबारि भाग हुनकर घर तँए हुनको पच्छिमे दिस घर बन्हलैन। ओइ समयमे गाममे सभसँ पच्छिम गोनर मण्डलक घर रहैन मुदा अखन ओहूसँ बहुत पच्छिम तक गाम बढ़ि गेल अछि।

दिनक करीब तीन बजे, हरिनाहियोक महींस आ हर्ड़ियो गामक पछबारि टोलक महींस (जइ टोल परहक हेमलताजी छैथ। जे फुलपरासक पूर्व विधायक रहि चुकली अछि।) धारेक पेट आ किनछैरमे दुनू गामक महींस सभ चरैत रहए। बीचमे एकटा घार रहइ। हरिनाही बीस-पच्चीस घरक गाम आ हर्ड़ी तीन टोलमे बँटल। जे थोड़े हटि-हटि कऽ बसल। धारेक पेट आ किनछैरमे दुनू गामक महींस सभ चरैत रहइ। की-ने-की चरबाहा सभमे झगड़ा शुरू भेलइ। दुनू गाम लगे-लगे। हँसेरा-हँसेरी भऽ गेल! खूब नमहर मारि (लाठी-लठौऐल) भेल। केतेको गोरेकेँ कपार फुटल, हाथ-पएर टुटल। दू जा तिक दुनू टोल, खूब मारि भेल। कम घर रहितो हरिनाहीक किछु परिवार जे सिंहेश्वर स्थान दिससँ आबि बसले रहए, तइमे तीनटा सेसर खलीफा रहइ, तँए मारि बेसी हर्ड़ीबला खेलक। मुदा केस-फौदारी नै भेल। तेकर कारणो रहै जे एमहर फुलपरासक थानाकेँ चारि धार टपि आबए पड़ैत तँ ओमहर सुपौल सन्मुख कोसीक केते छाँट-छुँट पार करए पड़ैत।

गोनर मण्डलक घरसँ करीब पाँच बीघा पच्छिम मारि भेल। मरदा-मरदी तँ मारि करए गेल रहैथ मुदा स्त्रीगण आ बच्चा सभ तमाशा देखलक। बेरमोक

तीनू गोरे- डॉक्टरो साहैब, जगदीश प्रसाद मण्डलजीक माइयो आ भैयो मारि देखलैन। मारि देख तीनू भयभीत भऽ गेला। तीनूक पाछू अपन-अपन कारण रहैन। डॉक्टर साहैब थाना-कचहरी जनैत रहैथ तँए भयभीत रहैथ। अन्दाज रहैन जे जखने थाना औत तखने मारि केनिहार गाम छोड़ि देत। मुदा हम..?

तहिना जगदीश प्रसाद मण्डलक माए आ भैया- कुलकुल मण्डलकेँ सेहो बेरमाक 1956-57 इस्वीक पुलिसक दौड़ देखल रहैन। साँझूपहर सभकियो विचार केलैन जे काल्हि भोरे ऐठामसँ मरीजकेँ (कारी मण्डलकेँ) लेने गाम (बेरमा) चलि जाएब। सहए केलैन।

अपना ऐठाम (बेरमामे) तीनटा महींस आ दूटा बरद खुट्टापर रहै छेलैन। समांग घटने महींस तीन-सँ-एक भऽ गेल। बरद बिना बनैबला नहि। चारि-पान साल पहिनहि 1956-57 ई.मे कुलकुल मण्डल मिडिल स्कूल छोड़ि अमानत (अमीनी) मे नाओं लिखौलैन, छबे मासक पढ़ाइ। मुजफ्फरपुरसँ एकटा शिक्षक (अमीन) आबि गाममे स्कूल चलौने रहैथ। जइमे पहिने दस गोरे नाओं लिखौलैन। मुदा किछु दिनक पछाइत छह गोरे छोड़ि देलैन। चारि गोरे अन्तो-अन्त पढ़ि अमीन बनला।

अखन धरि जगदीश प्रसाद मण्डल महींस पाछू तँ नीक जकाँ नै पड़ल रहैथ मुदा भाय सबहक संगे चरबए कहियो-कहियो जाइत रहैथ। मुदा समांग घटने भारे पड़ि गेलैन। परिवारक आमदनी रहैन। पिसियौत भाइक परिवार गेने (बेरमासँ हरिनाही चलि गेने) बेरमाक परिवार एकाएक कमलैन। जइसँ परिवारक काजो घटलैन। अखन तक जगदीश प्रसाद मण्डलजीक माए घरसँ निकैल खेत-पथार नै जाइ छेलखिन, सेहो जाए लगली। जगदीश प्रसाद मण्डलक पिसियौत- गोनर मण्डलकेँ जे जमीन देल गेल रहैन ओ बेच कऽ लऽ गेला। जइसँ खेतो कमलैन। उपजो कमलैन। मुदा चारिम पीढ़ीमे आइयो ओइ परिवारक संग ओहने सम्बन्ध बनल छैन जहिना पहिने छेलैन। अखनो उमेश मण्डल (पुत्र) जीक संग निर्मलीमे जे संजय रहैए ओ पिसियौते भाइक पोता छिऐन।

जगदीश प्रसाद मण्डल हाइए स्कूलमे रहैथ तखन दुरागमन भेलैन।

बिआह पहिनहि भऽ चुकल छेलैन। पिसियौत भायकें गेलासँ परिवारेटा नहि, कमलैन बल्कि घरक कारोबार सेहो कमि गेलैन। परिवारक भीतर अन्दरूनी विवादक जन्म सेहो भेल। जगदीश प्रसाद मण्डलक पढ़ब विवादक कारण मूलमे छल। जेकर दूटा सिर (स्रोत) छेलइ। पहिल, कुलकुल मण्डल आ दोसर समाजक हित-अपेछितक। खुल्लम-खुल्ला तँ परिवारमे नै छल मुदा कुलकुल मण्डलक क्रिया-कलाप बदलए लगलैन। जइसँ घरक काज छोड़ि कुलकुल मण्डल भरि दिन नाचक पाछू पड़ि गेला। सासुरोमे नाच पार्टी चलैन।

1967 इस्वीक चुनाव आएल। जगदीश प्रसाद मण्डलजी सेहो कम्युनिस्ट पार्टीक सदस्य बनि गेल रहैथ। चुनावमे जिला भरिक बूथपर खूब धाँधली भेल। ओना, जहिना खूब धाँधली भेल तहिना गामे-गाम मारियो-पीट खूब भेल आ केसो-मोकदमा खूब बढ़ल। तैसंग जहलक आवाजाही सेहो बढ़ल। केस-मोकदमा भेने कोट-कचहरीक काज बढ़ल। राज्यमे (बिहार) सत्तरहेटा जिला छेलइ। ओइमे बढ़ोत्तरीक सम्भावना बढ़ल। सब्डिवीजन, ब्लौक इत्यादि सभमे बढ़ोत्तरीक सम्भावना बढ़ल।

1967 इस्वीक चुनावमे (अखुनका मधुबनी जिला, तइ समयमे अनुमण्डले छल) कम्युनिस्ट पार्टीक एम.पी. भोगेन्द्रजी (भोगेन्द्र झा) भेला। दूटा पार्लियामेन्ट सीटमे एकटा कम्युनिस्ट पार्टीकेँ आ एकटा सोशलिस्ट पार्टी (शिवचन्द्र झा) केँ भेल। ओना, जिलासँ काँग्रेस जहिना पार्लियामेन्टसँ हारल तहिना विधान सभामे सेहो हारल। कम्युनिस्ट पाटीकेँ चारिटा एम.एल.ए. आ एकटा एम.पी.क सीट भेटल। राज्यक सरकार बदैल गेल मुदा देशक (दिल्लीक) सरकार नै बदलल। विरोधी दलक सदस्य बढ़ल। जइ-जइ राज्यमे काँग्रेसी सरकार टुटल ओइ-ओइ राज्यमे विरोधीक सरकार बनल। मुदा एकछाहा केतौ ने बनल। खिचड़ी सरकार बनल। काँग्रेस पार्टीसँ एक ग्रुप टुटि जनक्रान्ति दल बिहारमे बनौने छल। जेकर नेतृत्व माहामाया बाबू करै छला। मुख्यमंत्री बनला। अखन भ्रष्टाचार मुख्य समस्या बनि गेल अछि। मुदा ओहू समयमे चोरनुकबा खूब रहए। चाहे जे कोनो विभाग रहै भ्रष्टाचारसँ आक्रान्त छल। माहामाया बाबूक सरकार, पैछला काँग्रेसी मंत्रीक विरोधमे सुप्रीम कोर्टक जजक नेतृत्वमे

जाँच आयोग बनौलक। अय्यर आयोग नाओं पड़ल।

बैद्यनाथ राम 'अय्यर', सुप्रीम कोर्टक जज छला। दक्षिणक छैथ। करीब पनचानबे-छियानबे बर्खक छैथ। जीविते छैथ। पूर्व बिहार सरकारक छहटा मंत्रीक विरूद्ध अपन जाँच रिपोर्ट दऽ देलखिन। करोड़ोक लूट साबित कऽ देने रहथिन।

1966 ई.मे बिहार रौदीक चपेटमे आबि गेल। ओना, पहिल बरख रहने ओते बुझियो ने पड़लै। जौं बुझि पड़ितै तँ 1967 इस्वीक चुनावी मुद्दा बनैत मुदा से नइ बनल। मुदा सरकार बनला उत्तर दोसर बरख खूब बुझि पड़ए लगलै। भुखमरी हुअ लगल। सरकारक सोझा जबरदस सबाल उठि कऽ ठाढ़ भेल। जमाखोर सबहक विरोधमे अभियान चलबैक निर्णय भेल। मुदा तेहेन नाटक ठाढ़ भऽ गेल जे अभियान मजाक बनि गेल। नाटक ई भेल जे दस बीसटा ओहन सभ पकड़ाएल जेकर कारोबार (अन्नक कारोबार) घोड़ा-घोड़ीपर चलैत रहइ। मुदा सोलहन्नी सएह नै भेल, किछु एहनो जमाखोर पकड़ाएल जेकरा गोदाममे लाखो क्वीन्टल अनाज रहइ।

पार्लियामेन्टक शपथ ग्रहण केलाक पछाइत भोगेन्द्रजी जखन मधुबनी घुमला तँ सकरीमे पहिल आम सभा केलैन। एक तँ नव सदस्य रहने आ दोसर अपन पार्टीक रहने करीब पनरह-बीस गोरे बेरमा गामसँ सभामे भाग लिअ गेलैथ। गाड़ीक सुविधा रहबे करैन। तहूमे लाल झण्डाबला सभ दिल्ली तक प्रदर्शन करिते छल। ओना, भोगेन्द्रजीक भाषणक गुण रहलैन जे ओ पहिनहि बाजि दइ छेलखिन जे 'जिनका जे प्रश्न पुछैक हुअए ओ पुछि दिअ।' जवाब देब हुनक भाषणक मूल बिन्दु छेलैन। भाषणो नमहर करै छला। समय भेटलापर तीन-तीन, चरि-चरि घन्टा बजिते रहि जाइ छला।

ओइ समय निर्मली-सँ-समस्तीपुर एकटा गाड़ी चलैत रहइ। बड़ी लाइनक केतौ पता नहि। मुदा कम्युनिस्ट पार्टीक लड़ाइक एकटा मुद्दा ईहो रहइ। कखनो उग्र तँ कखनो धीमी गतिसँ चलिते रहइ। ओना, पूबोसँ आ पच्छिमोसँ अबैबला गाड़ीक मेल सकरीए-मे रहै मुदा से नै भेलइ। काकरघटीमे मेल भेने पछबरिया गाड़ी पछुआ गेलैन। जइ कारणे सभाक आयोजन किछु बिलैम कऽ भेल।

सकरी स्टेशनसँ थोड़बे हटि कऽ दछिनबारि भाग सभाक आयोजन भेल।

गाड़ीसँ उतैर झण्डा फहरबैत आ नारा लगबैत जुलुस बनि सभा स्थल पहुँचला। तैसंग झंझारपुरक इर्द-गिर्दक सेहो बहुत गोरे संग भऽ गेल रहथिन। आयोजक रहथिन चीनी मिलक श्रमिक-संगी। ओइ समय छबे मास मिल चलइ। सालमे छह मास काज भेने छह मास बैसारीक समस्या रहबे करइ। तैसंग किसानकेँ ने कुशियारक कटनी होइ आ ने समैपर दाम भेटइ। सेहो सभ समस्या रहबे करइ। कुशियारक एक्के किस्मक खेती होइ जे अगहनमे तैयार भऽ जाइ। मुदा नमहर इलाकामे खेती भेने, समैपर कटनी नै भऽ पबइ। मीले कम। जेतबे ओ पेर सकत तेतबे ने लेत। तहूमे चलाकी ओकर ई रहै जे शुरूमे तैयार भेने शुरूहेसँ नीक उत्पादन (चीनीक मात्रा) हुअ लगै आ जेते पछुआइत तेते रस गाढ़ भेने चीनीक मात्रा बढ़ि जाइ।

पच्छिमसँ गाड़ी अबिते दरभंगा-जालेक विधायक खादिम हुसेन संगे भोगेन्द्रजी हाथमे चमड़ाक बैग लटकौने आगू-आगू आ दस पनरह गोरे पाछू-पाछू स्टेशनसँ सभा स्थल पहुँचला। हाफ शर्ट धोती पहिरने रहैथ। पैरमे चमड़ाक जूता रहैन। मंचपर सँ नारा हुअ लगल। अदहासँ बेसी मंच भरल। जे वक्ता बजैत रहैथ ओ अपन विचार सम्पन्न केलैन। चीनी मिलक ट्रेड-युनियनक जे नेता रहैथ ओ विस्तारसँ अपन समस्या रखलैन। जगदीश प्रसाद मण्डल सभ आगूसँ निच्चाँमे बैसल रहैथ। भोगेन्द्रजी दिससँ बजैसँ पहिने आने सभा जकाँ प्रश्नक आग्रह भेल। किछु प्रश्न एबो कएल।

अढ़ाइ-तीन घन्टाक पछाइत सभा विसर्जन भेल। सभामे भाग लेनिहार चारूकातक लोक चलि गेला, मुदा गाड़ीबला सभ स्टेशनपर आबि गेला। दुनू गाड़ी (निर्मली आ जयनगरवाली) मे एक-डेढ़ घन्टा देरी रहइ। स्टेशनेपर भोगेन्द्रजीसँ पहिल भेँट आ सोझहा-सोझही परिचय जगदीश प्रसाद मण्डलजीकेँ भेलैन।

पहिले-पहिल भोगेन्द्रजी पार्लियामेन्टक सदस्य भेल रहैथ। जहिना 1942ई.मे अंगरेजक खिलाफ देशक जन-जनमे राजनीतिक नव चेतना जागल रहै तहिना 1967 इस्वीक चुनावक पछाइत सेहो भेल। बिहारोमे ओहन-ओहन

राजनीतिक पार्टी बहुमतमे आएल जे अखन धरि (1967) विधान सभामे नै पहुँचल छल। जे पार्टी (काँग्रेस) अखन धरि बिहारोमे सत्ता-सीन रहल ओ नीक हारिक मुँह देखलक। ओना, बिहारे मात्रमे नहि, आनो-आनो राज्यमे भेल। काँग्रेसो एक ग्रुप टुटि कऽ जनक्रान्ति दल करिकऽ चुनावमे उतरल छल। काँग्रेस विरोधी दलक स्पष्ट बहुमत भेल छल। मुख्य पार्टीक रूपमे सोशलिस्ट पार्टी आ कमो-बेसी आनो-आनो पार्टी जीतल। सिरिफ विधान सभामे एहेन परिवर्त्तन भेल से बात नहि, गाम-गामक जन-गणमे अपन हार-जीत सेहो महसूस भेल। बेवहारिक दौड़मे जे किछु, मुदा भाषणक क्रम (सिद्धान्तिक) मे तँ जनताक सभ समस्या सामने एबे कएल। कारण जे सभ पार्टीक अपन-अपन विचार, लोकक बीच पहिनेसँ आबिए रहल छल। 34 टा सीट–माने 34 टा विधायक– विधान सभामे आ पान-सातटा कम्युनिस्ट पार्टीक सदस्य पार्लियामेन्टोमे पहुँचला।

आजादीक पछाइत पहिल बेर आमजन सत्ता (शासन) दिस बढ़ल। ओना, अखन धरि सरकारक अर्थ आम जनगणमे मात्र कोटाक मटिया तेल आ जे मुख्य बिन्दु कोटाक वस्तु बनल छल मात्र ततबए। डीलरक काजक लेखा-जोखा भरि शासन चलै छल। आन-आन समस्या तँ भाषणेक क्रमटा मे छल। किछु-ने-किछु बाढ़ि-रौदी चलिते छल ओकरे बँचबैक उपाय सरकारक कहब रहै छेलइ।

नवका तूर (आजादीक करीब आ पछातिक) सेहो जुआन भेल। जइसँ आनो-आनो काज (सरकारक) सोझहामे आएल। अखुनका मधुबनी जिला जे ओइ दिनमे अनुमण्डल छल। एगारहटा एम.एल.ए. आ दूटा एम.पी.मे बँटाएल छल। छह-छहटा एम.एल.ए. पर एम.पी.। दरभंगाक जाले क्षेत्र सेहो मधुबनीए-मे।

ओना, अखुनका मधुबनी जिलाक पच्छिमी भागमे जमीनक लड़ाइ सेहो नीक जकाँ चलि रहल छल, मुदा मुख्य छल पच्छिमी कोसी नहर। मिथिलांचलमे कोसी, कमला, बागमतीक जे उपद्रव साले-साल चलि रहल छै आ क्षति पहुँचबै छै, भरिसक तेतेटा बजटो ने केते सरकारकेँ होइ। खाएर जे हउ..! उनैस साए साठिक दशकक सबाल, समस्या आ लड़ाइ कम्युनिस्ट पार्टीक मुख्य लड़ाइ रहल

जेकर दशा, मनुखक एक जिनगीक (65-66 बर्ख) उपरान्तो की अछि से सबहक सोझहेमे अछि! जौं योजना क हिसाबसँ काज होइत तँ आजुक मिथिला ई मिथिला नहि, ओ मिथिला बनि गेल रहैत जइ मिथिलामे ऋृषि-मुनि इच्छानुसार बरखा बरिसबैत रहैथ। एतेक पनिबिजलीक उत्पादन होइत जे घर-घरमे पहुँचल रहैत। जइसँ जापान जकाँ लघु-उद्योगक संग-संग भारियो उद्योग लागि गेल रहैत। मुदा आइ की देखै छी। चुनाव होइत रहल, एमेले-एमपी बदलैत रहला। मुदा समस्या आइ ओहन विकराल रूप लऽ लेलक अछि जे आर्थिक तंगीक चलैत दिन-दहार लूट-पाट भऽ रहल अछि, प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष दुनू रूपमे। जौं जापान, जर्मनी आ पड़ोसी देश चीनक जमीनक प्रति एकड़ उपजाक तुलना अपन मिथिलांचलक भूमिसँ करब तँ आश्चर्य नहि, बिसवासो नइ हएत। की मिथिलामे सिरिफ साढ़े तीन हाथक मनुखेटा अछि जेकरा मात्र पेटेटा छै आकि ओकरा दूटा हाथो-पएर छै आ मातृभूमियो छइ। मिथिलांचलक ओ भूमि आ जलवायु अछि जे दुनियाँमे केतौ नै अछि। ने एते सुन्दर मुलाइम माटि अछि आ ने एहेन नीक पानि अछि आ ने एते रंगक मौसम अछि। मुदा आइ की देखै छी? ने अखन धरि नेपाल सरकारसँ नीक जकाँ समझौता भेल अछि आ ने कोसीक पच्छिमी-पूर्बी नहरक समुचित विकास। एक तँ योजनाक काज पछुआएल, तैपर काजक एहेन पेंच-पाँच अछि जे एकटा नहरो बनब कठिन अछि, दोसर बनलापर ओ समुचित काज कठिन अछि। पानि ऊपर-सँ-निच्चाँ असानीसँ अबैत अछि। मुदा निच्चाँ-सँ-ऊपर असानीसँ जाएत? नै जाएत। जौं गहींरमे नहर खुनि देल जाए तँ ओकर पानि ऊपर केना जेतइ? हँ! मशीनक माध्यमसँ जा सकैए, मुदा 'घरमे फुसि-फासि, सोम दिन बिआह!' जैठाम त्रेता युगक तीन-बित्ता हर आ सतयुगक बसहा-बरद सँ अखनो खेती होइए तैठाम केना मानल जाएत।

स्टेशन (सकरी प्लेटफार्म)पर आबि सभ गोलिया कऽ बैसला। पल्था मारि भोगेन्द्रजी सभकेँ सेहो तहिना बैसए कहलखिन। गाड़ी पकड़ैले सबहक मन छनगल। पल्था मारि बैसैक अर्थ निश्चिन्ती। पहिने ओ सभकेँ नाओं-ठेकान पुछलखिन। नाओं-ठेकान पुछला उत्तर कहलखिन, "कम्युनिस्ट अपन पार्टी छी, अपन पार्टीक ई अर्थ नहि जे कोनो जाति-मजहबक होइ, मनुख-मात्रक पार्टी

छी। हमरा सभकेँ ओहन समाज बनेबाक अछि जइमे ने कियो भूखल रहत आ ने नाँगट। सबहक बाल-बच्चा पढ़तै, सभकेँ रोग-व्याधिक आ आफद-आसमानीक इलाज हेतै तखन ने सभ आगू मुहेँ बढ़ैक कोशिश करता। अपना ऐठाम जे ऋृषि-मुनि भेला, ओ की केलैन? हुनका नै अपन सुखक चिन्ता छेलैन? किए ओ सभ अपन जिनगी गला लेलैन? ..ओ सभ बहुत केलैन। जौं से नै केलैन तँ एक कट्ठा जमीनमे जीवन बसर करैत केना छला। मुदा अपन धरोहरकेँ जौं ताला लगा रखबै तँ के बु झत? लखनजी (डॉक्टर लक्ष्मण झा) मिथिलांचल लेल जिनगी समरपित केलैन। मुदा की केलैन से के बुझत?”

दिल्ली जाइसँ पहिने भोगेन्द्रजी कम्युनिस्ट पार्टीक जिला-कार्यालयमे जगदीश प्रसाद मण्डलजीकेँ कहि देलखिन जे- “आब जे आएब तँ बेरमो जेबे करब, तँए ओइपर नजैर राखब।”

जहिना हाटो-बजारमे आ गामो-घरमे वस्तुक लेन-देन तीन तरहक लोकक बीच होइत अछि, एक वस्तुबला, दोसर लेबाल (कीनैबला)क बीच, मुदा ऐ बीच तेसरो फड़ि जाइए, ओ फड़बैए गर्ज। जखन वस्तु बेचनिहारो आ लेनिहारोकेँ समानक गर्ज रहैए तखुनका बेवहार सुलभ होइए। कारणो होइ छै जे वस्तु बेच वा कीनि कऽ अमुख काज करब, जे जरूरी अछि। दोसर तरहक होइए जे बेचनिहारकेँ काजक दुआरे अ धिक गर्ज रहल आ कीननिहार अगधाएल रहल- तैठाम बेचनिहार कटाइए आ कीननिहार नफगर रहैए। तहिना केतौ लेबाल (कीननिहार) गरजू रहल आ बेचनिहार ना-गरजू। तैठाम कीननिहार कटाइए आ बेचनिहार नफामे रहैए। किएक तँ मने-मन अगधाइत रहल जे पानिमे पाथर सड़ैए। तहिना लेबालोक बीच होइत रहै छै जे पाइ की कोनो कुट-कुट कटैए जे अनेरे केतौ फेक देब। यएह बिचला, दुनियाँक कलाकार छी जे अपने संग दुनियोँकेँ नचबैए। अदौसँ एक दिसक लोक दोसर दिसक लोककेँ विकट परिस्थिति पैदा करैत रहल अछि आ कण्ठ दबैत रहल अछि। मुदा से नै भेल। जहिना भोगेन्द्रजीक कार्यक्रमक जिज्ञासा बेरमा लोककेँ छल तहिना भोगेन्द्रोजी आ कम्युनिस्ट पार्टियोकेँ छेलइ। सकरी सभाक बात बेरमा गाममे जोर-शोरसँ चलए लगल...। एकदिस नीक-सँ-नीक कार्यक्रम हुअए, तइ पाछू सभ लागल, तँ दोसर दिस नव क्षेत्र भेटने भोगेन्द्रोजी आ पार्टियो कार्यक्रमकेँ

नीक-सँ-नीक बनबैक फिराकमे लगला। ओना, आइसँ 1967 ई.सँ पूर्व एकबेर कम्युनिस्ट पार्टी बेरमामे बनलो छल मुदा बेवहारिक पक्ष कमजोर रहने टिक नै पाएल रहए। नव-युवक बीच पार्टी बनल, कमोबेश अधिकतर युवक पढ़ल-लिखल। सबहक बीच पार्टीक कोनो तौर-तरीका नै बुझल तँए थाहि-थाहि किछु-किछु सिखैत, अकास-सँ-पताल धरिक बात उड़ि-उड़ि सबहक कानमे अबै जइसँ किछु-ने-किछु उत्साह तँ जगिते रहए। जौं से नइ होइतै तँ आन पार्टीक (पूँजीवादी) अपेक्षा चरित्र निर्माण केना एतए होइ छै? संघर्षे चरित्र खरादै छइ।

संसदक बैसार समाप्तिक तेसरे दिन भोगेन्द्रजी मधुबनी पहुँचला। अखन धरि भोगेन्द्रजी कँ तेना भऽ कऽ लोक नै चिन्हैत रहैन तँए औता आकि नै औता से असमंजस बनल रहए, बनबो सोभाविके रहै, किएक तँ आन-आन केतेक कार्यक्रम एहेन भऽ चुकल रहै जइमे नेता नै पहुँचल रहैथ। संसद समाप्तिक पराते भने भोगेन्द्रजी पटना पहुँच चुकल रहैथ। पहिल बेर बिहारसँ कांग्रेसक–विरोधी दलक–सांसद बहुमतमे दिल्ली पहुँचल रहैथ। बिहारोमे विरोधीए दलक सरकार, महामाया प्रसाद सिंहक नेतृत्वमे बनल रहए। कर्पूरी ठाकुर उपमुख्यमंत्री बनला। ओना, महामाया बाबू कांग्रेससँ टुटि कऽ आबि जनक्रान्ति दल बनौने रहैथ। बिहार सरकारमे सभसँ बेसी सोशलिस्ट पार्टीक विधायक रहैथ जइसँ सरकारोमे अधिक भागीदारी भेलैन। पहिल बेर धनिकलाल मण्डल जीत कऽ गेल रहैथ, मुदा तैयो विधान सभा अध्यक्ष बनला। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टीक कोटामे दूटा केबिनेट आ दूटा राज्यमंत्री बनला। दरभंगा जिलाक कोटामे तेजनारायणजी (श्री तेज नारायण झा) राज्यमंत्री बनला।

ओना, चारू गोरे अपना-अपना क्षेत्रमे कर्मठ रहैथ। जहिना इन्द्रदीप भाय (श्री इन्द्रदीप सिंह) विद्वान (अर्थशास्त्री) रहैथ तहिना चन्द्रशेखर भाय (श्री चन्द्र शेखर सिंह) सेहो क्रान्तिकारी रहैथ। श्री शत्रुघ्न बेसरा आदिवासीक नेता रहैथ तँ तेजनारायणजी किसान नेता। एक तँ ओहिना सरकार दल-दलमे डोलैत रहए तैपर रौदी आरो डोलबैत रहइ।

किसान नेताक संग-संग भोगेन्द्रजी बिहारक नेता सेहो रहैथ तँए काजक

भार बहुत अधिक पड़ि गेल रहैन। पटना आबि राज्यक स्थितिक विचार-विमर्श करैत-करैत पहिल दिन बीत गेलैन। मुदा पराते भनेसँ क्षेत्रक समय बना लेने रहैथ। राता-राती मधुबनी आबि गेला। मधुबनी अबिते सभकेँ खबैर भऽ गेल जे 'काल्हि भोगेन्द्रजी बेरमाक कार्य-क्रममे रहता।'

ओना, सभ प्रचार करिते रहैथ, पर्चो छपबाइये नेने रहैथ, दिनमे आम सभा करता आ रातिमे कार्यकर्ता-मीटिंग। खाइयो-पीबैक ओरियान भेल रहए।

आम सभाक अन्तिम समय पाँच बजेक पछाइत भोगेन्द्रजी जीपसँ बेरमा पहुँचला। आम सभामे उपस्थित सबहक मनमे भऽ गेलै जे आब ओ नै औता। फौनो-फान अखुनका जकाँ नहियेँ रहै, भोगेन्द्रजीकेँ अबैसँ पहिने आम सभा मरहन्ने जकाँ रहल, मुदा हुनका अबिते जेना रंगे-रूप बदैल गेल। केते गोरे जे उठि-उठि कऽ रस्ता पकैड़ नेने रहैथ सेहो सभ घुमला। संग-संग किछु नवो लोक पहुँचला। जीपसँ उतैर भोगेन्द्रजी बजला- "एक गिलास पानि आ चाह पिआउ। ताबे मंचपर बैसै छी।"

लोक आगुताइत जे जखन भोगेन्द्रजी पहुँच गेला तखन हुनक समयकेँ अनेरे दुइर करै छिऐन। मंचपर भोगेन्द्रजी चुपचाप बैस देखैत-सुनैत रहैथ। पानि पीब चाह पिलैन।

चाह पीबते बजैक आग्रह भेलैन। आग्रह होइते ओ कहलखिन- 'सभकेँ पुछि लियौन जे किनको किछु पुछबाक छैन?'

मुदा सभ तँ सुनैले उत्सुक, तँए एकोटा प्रश्न नै आएल रहए। उठिते दिल्लीक कांग्रेसी सरकारक खेरहा संक्षेपमे ओ कहलखिन जे केना अखन पूजीपति, कारखानादार आ सामन्त (राजा-महराजाक) क बीच विवाद फँसल अछि। विवादक चर्च करैत बजला जे देशक विकास अवरूद्ध भऽ गेल अछि। मुदा से बात कमे लोक बुझलक। किएक तँ गामक लोक सरकारक माने कोटाक गहुम आ थाना मात्र बुझै छल, गोटि-पँगरा चापा-कलो गड़ा जाइ छेलइ। ताबत चीनी-मटिया तेलक कोटो भेले रहइ। ओना, गहुमो कोटेक हिसाबसँ भेटै मुदा लेबालक अभाव (पाइक दुआरे) रहने से नै बुझि पड़इ।

भोगेन्द्रजी दिल्ली सरकारक लगले बिहार सरकारक चर्च केलखिन।

रौदीक स्थिति (भयावहता) आ बिहार सरकारक आँट-पेट खोलि कऽ रखि देलखिन। कोसी-नहरक चर्च विस्तारसँ केलैन जे ई योजना मिथिलांचल लेल की अछि? मिथिलांचल चर्चक क्रममे ऐठामक सामाजिक शोषण, जे एक-दोसरकेँ आगू बढ़ैसँ रोकैत अछि इत्यादि, विस्तारसँ चर्च केलखिन।

ओना, भोगेन्द्रजीक भाषण दू घन्टा-सँ-चारि घन्टा होइ छल, मुदा से बेरमामे नइ भेल। घन्टा पुरैत-पुरैत समय समाप्त भऽ गेल। सभा समाप्त होइते ओ कहलखिन जे 'ओना, कार्यकर्ता-बैसार करैक कार्यक्रम सेहो अछि मुदा से नीक जकाँ नै भऽ सकत। मुदा तैयो अहाँ सभ तैयारी करब तँ जेतेकाल छी तहीमे ओहो भइये जेतइ। तैबीच चाह एलै, ओ जलखै नै केलैन। चाहे पीबैकाल अय्यर-आयोगक चर्च सेहो केलखिन। किछु कांग्रेसी नेता, जे सभ सरकारमे रहला, गोल-मालक जाँच करता।

ओना, जइ हिसाबसँ बेरमामे कम्युनिस्ट पार्टीक पहिल आम सभा छल तइ हिसाबसँ बहुत नीक भेल छेलै, जे भोगेन्द्रजी अपनो बजला।

कार्यकर्ता मीटिंग शुरू होइते जेना भोगेन्द्रजीक रूप बदैल गेलैन। बजला-

"कम्युनिस्ट पार्टी राजनीतिक पार्टी छिऐ, अहाँ सभ पार्टीक सदस्य बनि पार्टी बनेलौं, एकरा सम्हारबोक भार अहीं सबहक ऊपर रहत। अहाँ सभ अपनाकेँ क्रान्तिकारी पार्टीक सदस्य बुझि सामाजिक बेवस्थाकेँ बदैल सुधारू, जाधैर सामाजिक बेवस्था नै बदलत ताधैर सर्व-कल्याणकारी समाज नै बनत। जाधैर सर्व-कल्याणकारी समाज नै बनत ताधैर किछु गोरे लुटबे करत आ किछु गोरे लुटेबे करत। कमाएब अहाँ, खा जाएत दोसर। मुदा पार्टी तँ गामसँ लऽ कऽ दुनियाँ भरिमे पसरल अछि। तँए एक-दोसरमे जुटि कऽ केना रहब, ई तौर-तरीका सीखए पड़त। गामसँ लऽ कऽ दुनियाँ भरिमे लूट-खसोट चलि रहल अछि, जे साधारण नइ अछि, सभ तरहक शक्ति ओकरा छइ। ओइ शक्तिक मुकाबला करैक जे शक्ति अछि ओ बनबए पड़त। अखन तँ हमहूँ अगुताएले छी, तँए नीक जकाँ नै बुझा पाएब। कनी निचेन होइ छी तखन फेर आएब। अखन किछु मूल बात जे अछि से कहि दइ छी। अहाँ गाममे पार्टी बनेलौं, गामक जे समस्या अछि ओकरा पकड़ू। पार्टीक सभ सद स्य एकठाम बैस ओइ समस्यापर विचार करू। लोके लऽ कऽ समाज बनै छैक। जेते गोरे अहाँ सभ छी

जौं ओतबो गोरे एकजुट भऽ समाधान करब तँ असानीसँ समाधान होइत जाएत। ओना, जेते असान बुझै छिऐ बेवस्था तोड़ब ओते असान नै छइ। विरोधीक आक्रमणक संग अपना पार्टियोमे मतभेद हएत, तैसंग परिवारोमे हएत। बड़-बढ़ियाँ खाइ-पीबैक जोगार सेहो केने छी। सभ एकठाम बैस खाएब-पीब तखन ने खाइ-पीबैक छुआछूतक रोग जे अछि से टुटत। जाबे से नै टुटत ताबे मन-भेद होइते रहत। निअमित बैसार करू। जाबे अपना पार्टी कार्यालय नै भेल अछि ताबे टोले-टोल बैसार करू। ओइ टोलक की समस्या छै आ ओकर समाधान केना हेतै, बैसारक मुख्य काज भेल। ई तँ सामाजिक स्तरपर भेल मुदा ऐ संग आरो क्षेत्र अछि। कोनो समस्या लऽ कऽ ब्लौकमे प्रदर्शन करब, ब्लौक भरिक पार्टीक प्रदर्शन हएत। ओहीमे बेरमाक जे समस्या अछि ओकरो मुद्दा बनाएब। अहिना जिलोमे होइ छइ। राज्यक राजधानियोंमे होइ छै, दिल्लियोमे होइ छइ। सभमे भाग लेब। दुनू दिसक समस्या रहत, तँए ऊपरका समस्या प्रमुख भेल।”

ओ अगुताएल रहबे करैथ, नअ बजे करीब विदा भऽ गेला। हुनका गेला पछाइत खेनाइ-पिनाइ भेल। कार्यक्रम समाप्त भेल।

गाममे एकटा नव नजैरक जन्म भेल। जेना पहिने गामकेँ लोक बुझै छल तइसँ भिन्न बुझैक प्रक्रिया शुरू भेल। ओहुना चारि गोरे एकठाम भऽ कोनो काज शुरू हुअ लगल। ओना, पहिनौं किछु लोक सामाजिक काजमे समाज-सहयोगी बनै छला, मुदा ओ दायरा कमि कऽ किछु परिवार धरि समटा गेल छल। अपन काज, अपन बातकेँ छिपा कऽ राखब सोभाव बनि गेल छल, अखनो अछि।

चारि गोरेक बीच रहला आ बजलासँ बजबाक अभ्यास हुअ लगै छइ। तैसंग ईहो होइ छै जे दोहरा-तेहरा कऽ एक्के बात बाजी वा किछु नव गप बाजी। पार्टीमे जुटलासँ दिल्लीक रैली तक जगदीश प्रसाद मण्डलजी भाग लिअ लगला। नव-नव लोकसँ भेँट-घाँट हुअ लगलैन, क्षेत्रक हिसाबसँ नव-नव कला-संस्कृति देखैक अवसर सेहो भेटए लगलैन। तैसंग ईहो भेलैन जे दू-अना, चारि-अनामे नीक-नीक किताब सभ सेहो भेटए लगलैन, जइसँ जगदीश प्रसाद मण्डलजीकेँ नव-नव जानकारी हुअ लगलैन। ❑

1967 इस्वीक पछाइत...

1967 इस्वीक पछाइत गामसँ लऽ कऽ देश भरिमे दोरस हवा उठल। मुदा हवोक रूखिक सीमा तँ भिन्न-भिन्न अछि, केतौ रेतबला भूमिमे अपनो रस चटबैत अछि, तँ केतौ समुद्रमे ज्वार उठबैत अछि, केतौ पहाड़सँ टकरा या तँ मेघे दिस उड़ि जाइत अछि वा पजरबाहि ताकि-ताकि पड़ाइत अछि। केतौ समतल भूमिमे गाछ-बिरीछ उखाड़ैत तँ केतौ सरोवरक हल्फी, तँ केतौ मन्द गतिक सुहावन हवा सेहो दैत अछि।

अवसरक लाभ जेकरा जेते भेटैक चाहिऐ से नै भेट पेलइ। जौं से नहि, भेट पेलै तँ औद्योगिक क्षेत्रक अपेक्षा कृषि क्षेत्र किए पछुआ गेल? भलेँ तमसेलापर बाजि दिऐ जे महाराष्ट्र, कर्नाटक औद्योगिक क्षेत्रमे अगुआ गेल आ बिहार पछुआ गेल, ई तामसपर बाजब भेल। मुदा महाराष्ट्र वा कर्नाटकक उद्योगकेँ देखै छिऐ तँ ईहो देखए पड़त जे ओइठाम जमीनपर जीनिहारक दशा की छइ। की ई बात झूठ जे बिहारक अपेक्षा ओइठामक किसानकेँ आत्महत्याक नौवत छैन। तँए देशक सभ राज्यक अपन-अपन समस्या छइ। अपना-अपना ढंगसँ देखए पड़तै। मुदा की ई उचित नै जे बिहारो स्वतंत्र भारतक अंग छी, एकरूपता हेबाक चाहिऐ। आइ बिहारे नहि, आनो-आनो राज्यकेँ बिहारोसँ बेसी समस्या छै जेकर समाधान जरूरी अछि। भलेँ बंगाल, केरल जकाँ नहि, मुदा आनो-आन राज्यमे देखौंस तँ लगबे कएल। मिथिलांचलो ऐ दोरस हवासँ अलग नै रहल। पुरना दरभंगा जिलाक मधुबनी सब्डिवीजनमे, जे अखन जिला अछि, जमीनक भरपूर एकरूपता आएल, मुदा खेत तँ तखन ने खेत जखन ओकरा भरपूर पानि भेटइ। उचित बीआ, उचित खादक संग मशीन नेने कुशल किसान सेहो भेटइ।

दस बरख पूर्वहिँसँ कोसी नहर योजनाक पाछू प्रगतिशील किसानो आ वुद्धिजीवियो उठि कऽ ठाढ़ रहला, मुदा कियो सुननिहार नहि। जौं सुनलो गेल तँ

काजक तेहेन रूप धेलक जे पचास बर्खोमे योजना नै पूर्ति भऽ सकल अछि। धार-धुरक संग एहेन लापरवाही भेल जे मिथिलांचलक अदहासँ बेसी जमीन माटिसँ बालु बनि गेल अछि। ओना, धार बहुतो अछि, जइमे किछु एहनो अछि जे हजारो बर्खसँ अपन दिशा नै बदललक, मुदा कोसी-कमला-बलानकेँ तँ भगैतो खेला-खेला आ गीतो गाबि-गाबि तेते सुआगत होइत रहल अछि जे अदहासँ बेसी जमीनकेँ शक्तिहीन, कमजोर बना देलक अछि। बालु केना उपजाउ भूमि बनत? छोट सबाल नै अछि। राजनीतिक दशा एहेन जे मुँहपुरुखियाइयेक पाछू पड़ि सभ अपनेमे ओझराएल अछि। मिथिलांचलक कोनो समस्या मिथिलेक नहि अपितु देशक छी। समस्याक समाधान केना हएत तहीमे सभ ओझरा-ओझरा राजनीति कऽ रहला अछि। खाली आठ बजे रातिमे सितारपर सुनता- “पवन प्रिय पावन मिथिला देश..!”

जहिना बेरमा देशक अंग छी तहिना तँ देशो बेरमाक अंग छिऐ। तँए देशक दोरस हवा बेरमोमे बहल। साइकिलक औभर-वाइलिंग जकाँ गामक वाइलिंग शुरू भेल। एकसंग रंग-बिरंगक हवाक प्रवेश बेरमा गाममे भेल। अड्डा बन्दी हुअ लगल। किछु लुत्ती गामोसँ उठल तँ किछु बाहरोसँ पसहि-पसहि आबए लगल।

अखन धरि गाममे जाति-सम्प्रदायक हवा नै आएल छल। जहिया कहियो मारि-दंगा हुअए ओ या तँ आन गामसँ हुअए, वा एक टोल दोसर टोलक बीच। बीसो जातिसँ ऊपरबला गाम बेरमा। पाबैन-तिहारमे गजपट होइते आएल अछि। मुदा तैयो तँ चलिते रहलै। गजपटो केना ने हउ, अदहासँ बेसी स्त्रीगण भादवक रवि करिते छैथ। मुदा पाबैनक विधानो भिन्न-भिन्न। कियो दुनू साँझ निखण्ड करै छैथ, तँ कियो एकसंझू। कियो नोनेटा परहेज करै छैथ, तँ कियो अन्न छोड़ि फलेटा सेवन करै छैथ। तहिना घड़ी पाबैन अछि। एक तँ सालक दू-तीन मास–सौन, आसीन आ चैत–मे होइए, तैपर बुधवारि घड़ी, सोमवारि घड़ी आ शुक्रवारि घड़ी सेहो होइए...।

कबीर पंथक प्रवचनकर्ता आबि-आबि माया-जालक निन्दा करैत आ सेवक सभकेँ चेतेबो करिते छैथ। सेवको रंग-बिरंगक छैथ। तहूमे बेरमामे आरो

गजपट। एक दिस साए घरक ब्रह्मण बस्ती टोल, टोल ऐ दुआरे नै जे गो ठिया नै फुटझाड़ा अछि, मे एकोटा बैष्णव नहि। ओना, समाजक पंथनिरपेक्षक खियालसँ नीके अछि। तहिना दोसर दिस दलितोक टोल अछि। थाल-पानिसँ लऽ कऽ अकास धरिक शिकारी। बीचक जे जाति अछि ओ धार्मिक पंथ (साम्प्रदायिक) सँ जुड़ल अछि। जातिक भीतर वैष्णव-साकठक बीच विवाद चलैत अछि तैसंग एक-दोसर जातिक बीच सेहो चलैत अछि।

कबीर पंथक बीच समझौता भेल। समझौता भेल जे श्राद्ध-कर्मक पछाइत सत्यनारायण पूजा आ तेकर पछाइत कबीर पंथी भनडारा सेहो हुअए, से हुअ लगल। एक दिस दोसर सम्प्रदायक विरोधमे बजबो करैत आ दोसर दिस संग मिलि रहबो करैत अछि। तहियो कबीर पंथ मजगूत छल, अधिक समर्थक अछि, आइयो अछि। तैबीच एकटा घटना मण्डल (धानुक) जातिमे फँसल। द्वालख सुबे दासक प्रभाव, मण्डलो-मुखियो (धानुक-मलाह) आ बरैइयोमे रहैन। रमौतक चला-चलती गाममे कम। ननौरमे बुद्दी दास रमौतक महंथ बनि गेला। दियादिक लाटसँ बेरमा आबि अपने दियादमे एक गोरेकेँ कण्ठी दऽ सेवक बना लेलैन। दियाद सेवक बनि गेलैन। ओना, सालमे एकबेर सुबेदास मास दिन लेल एबो करै छला मुदा बीचमे जौं केतौ भनडारा भेल तँ दल दऽ बजा इयो लेल जाइ छेलैन।

ननौरबलाक चेलाकेँ अपन चेला (रमौत-सँ-कबीरपंथी) बना लेलैन। एक दिस बिनु वैष्णव (साकठ) केँ चेतैबतो तँ दोसर दिस लुटो-पाट चलैत। सेवक लुटेलासँ ननौरबला वुद्दी दास फरमान जारी केलैन-

“जहिना ओकरा (घुरण दास सेवककेँ) कानमे मंत्र देलिऐ आ ओ दोसर मंत्र लऽ लेलक तहिना करुतेल टहका कऽ ओकरा कानमे देबै आ ओइ संग लागल मंत्रो निकालि देबइ।”

डंकापर चोट पड़ल। द्वालखबला जवाब देलखिन जे हुनकर (वुद्दी दासक) पंथे कमजोर छैन। ओइसँ जीवकेँ थोड़े गति-मुक्ति हेतइ। पहिने दान कऽ लथु। जौं से नै करता (सेवकक कानमे तेल ढारि देता) तँ से नहि चलतैन..!

कसम-कस हुअ लगल। भरि गामक दुआर-दरबज्जाक गपक मुख्य मुद्दा

यएह बनि गेल। समाजक किछु लोक खुशी जे भने धानुक-धानुकक बीच लड़ाइ अछि तँ दोसर दिस जाति-पातिपर चोट पड़ि गेल छल। कारण जे जहिना कम्युनिस्ट पार्टीक रैली, धाक तोड़ि सड़कपर अनैत अछि, तहिना समाजक बीच जे कबीर पंथ माननिहार छला, हुनका सबहक बीच खेनाइ-पीनाइमे एकरूपता आबि गेल छेलैन। कबीर पंथीमे भनडारा महतपूर्ण आधार छइ। जहिना जगरनाथमे अँटका प्रसाद होइ छै तइ सदृश कबीर पंथक बीच एक-दोसरमे प्रसादीक चलैन अछि।

कबीर पंथ-रमौत दुनू पंथक तना-तनीमे गाम बँटाए लगल। तीन-चारि टुकड़ीमे गाम बँटि गेल।

कबीर पंथ (सम्प्रदाय) सँ कमजोर संगठन रमौत सम्प्रदायक छल। एक-गाम-दू-गाम केतेको गामक कबीर पंथबला सभ मैदानमे उतरैक तैयारी करए लगला। बेरमाक बगलेक गाम जगदर अछि। ओना, परोपट्टामे जगदर-बेरमाक नाओंसँ जानल जाइत अ छि। जगदर छोटेटा गाम अछि। भूमिहार ब्रह्मण आ राजपूत बहुसंख्यक अछि। ओना, बरही, यादव, तेली, दुसाध, धुनिया, सोनार, मल्लाह सेहो अछि मुदा अल्पसंख्यक।

जगदरमे नथुनी सिंहक सरदारी छेलैन, आ अस्सी प्रतिशत भूमिहार हुनकर लठैत रहथिन। जइसँ पचकोसीमे झगड़ा-झंझटक कारोबार चलै छेलैन। जगदरक नथुनी सिंह सेहो कबीरपंथी। ओ लोहिया पट्टीक राजपूते महात्माक सेवक। ओ संख्यामे कम मुदा शक्तिशाली रहैथ। सम्प्रदायक रूपमे जगदर केतेको टुकड़ीमे बँटल। राजपूत कबीर पंथी दिस तँ भूमिहार राधा-कृष्ण सम्प्रदाय दिस, यादव-बरही, दुसाध कबीर पंथ दिस, तँ धुनियाँ इस्लाम दिस। मल्लाह तँ सहजहि थाल-पानिमे रहनिहार छी तँए वैष्णव सम्प्रदायमे किए जेता।

कबीर पंथीक झंझटक हल्ला सूनि लोहियापट्टीबला महात्मा जगदरमे आबि कऽ आसन लगा देलैन आ आन-आन सेवकान सभकेँ अबैले सेहो कहि देलखिन। महाभारतक लड़ाइ जकाँ बेरमाक धरती सन-सन करए लगल।

शास्त्रार्थक समय निर्धारित भेल। मेला जकाँ गाम भऽ गेल। परोपट्टाक आँखि बेरमा दिस टकटकी लगौने, मुदा उचित भेल, सही भेल ननौरबला वृद्दी

दास कनी पाछू हटि मारि-दंगासँ गामकेँ बचा लेलैन।

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक परिवार आरो सतरंगी। एक दिस देवस्थानसँ जुड़ल समाजक सभ पाबैन, तँ दोसर दिस पिताजी सुबे दासक पिताक सेवक (कबीर पंथमे जेकरा सेवक कहल जा छै ओकरे दोसर ठाम चेलो कहल जाइ छइ) जगदीश प्रसाद मण्डलजीक पिताजीपर कबीर पंथी विचारधाराक प्रभाव। मास-मास दिन दरबज्जापर सतसंग-भजन चलिते रहै छेलैन। तेसर दिस जगदीश प्रसाद मण्डलजीक माए, समस्तीपुर जिलाक साहो-पटनियाबलाक सेवक। नहिरेसँ सीख भऽ आएल रहैथ, हुनकर तेसरे सम्प्रदाय, गुरु वैष्णवो बनबैत आ साकठो चेला मंत्र दऽ बनबैत, सालमे एकबेर घुमैत-घामैत ओहो आबि कऽ पान-सात दिन रहै छला। ब्राह्मण छला, अपने हाथे भोजन रन्है छला।

बेरमा दुर्गास्थानमे बलि-प्रदान नै हेबाक यएह कारण छल जे एक स्थानक समाज वैष्णव सम्प्रदायसँ जुड़ल तँ दोसर स्थानमे नथुनी सिंहक वर्चस्व रहैन तँए से नै भेल।

जहिना चुल्हिपर चढ़ल बरतनमे चाउर-पानि देला पछाइत मड़सटको, मड़बझुओ, गुड़खीरो खिचड़ियो आ सुन्दर भात सेहो बनैत अछि तहिना बरतन देल चाउर-पानि जकाँ बेरमाक दुर्गा-पूजा एकसंग केतेको वस्तु बनौलक। अखन धरि इलाकामे दुर्गा-पूजा एक जातिक वा महनथानाक पूजा छल, ओइपर चोट पड़ल। संग-संग ईहो चोट पड़ल जे सभ जातिक कुमारिक पहुँचक संग साँझ सेहो पहुँचौल (दीप लेसि साँझ देब) गेल। जेकर प्रचार आनो-आन गाममे भेल। दोसर दिस बलि प्रदान नै हएब सेहो एकटा रंग पकड़लक। यएह परिस्थित बेरमा दुर्गापूजाकेँ राजनीतिक रूप पकड़ौलक।

बेरमा गामक दुनू स्थानक बीच एकटा जबरदस खाधि बनौलक। एक स्थान छेहा समाजक बनल रहल, तँ दोसर सत्तासँ जुड़ि गेल। सत्तासँ जुड़ैक कारण भेल जे मधेपुर ब्लौकक प्रमुख बेरमेक छला। अट्ठाइस पंचायतक ब्लौक मधेपुर छल। ओना, मिला-जुला कऽ जातिक आधार नहि, राजनीतिक आधार ठाढ़ भेल। सौंसे मधेपुरमे केतेको जातिक मुखिया छल। सिरिफ मुसलमान

मुखिया हटल रहल, नहि तँ सबहक समर्थन रहैन। कारणो छल जे जाति कोनो किएक ने हुअए मुदा मुखियाक माने कांग्रेसी छल। तइसँ ऑफिसो एकछाहा एकभग्गुए छल। दुनू हथियारक प्रयोग ओ सभ केलैन। जेतए जातिक गर लहैन तेतए जातिक आ जेतए से नहि, तेतए राजनीतिक रंग चढ़बैथ। जइसँ चन्दाक रूप रोजगार दिस बढ़ल। ब्लौक ऑफिस उठि कऽ सेहो दुर्गा स्थान पहुँचए लगल। जइ दिन मेला होइ तइ दिन या तँ कोनो नव योजनाक आवेदन लिअ पहुँच जाइत वा कोनो बँटवारा करए।

ओना, दुर्गापूजाक पहिल लाभ गौंआँकेँ ई भेल जे किछु गोरे छोड़ि अधिकांश परिवारमे वृद्धावस्था पेंशन भेट गेल। ब्लौकक सभसँ छोट पंचायत बेरमा आ सभसँ बेसी गोरेकेँ पहिल बेर वृद्धा पेंशन भेटल।

मुदा भीतरे-भीतर जबरदस प्रतिक्रिया भेल। किछु गोरे बलिक प्रसाद दुआरे रूसि रहला तँ किछु गोरे फज्झैत सुनि गाम-गाममे चर्चक मुद्दा बनल।

गामक राजनीतिमे सेहो मोड़ आएल। मोड़ अबैक कारण भेल जे गामक भीतर जे जातिक बनाबट अछि ओहो केतेको रंगक अछिए। ओना, दुर्गापूजामे बाह्मण बँटा गेल रहैथ। दुनू स्थानमे हुनकर समर्थन रहैन। एक दिस पण्डित व्याकरणाचार्य उदित नारायण झा पण्डित भेला तँ दोसर दिस वैदिक व्याकरणाचार्य पण्डित कामेश्वर झा भेला।

1962 इस्वीक मुखिया (पंचायत मुखिया) चुनावमे ब्राह्मणे मुखिया हारबो केलाह आ जीतबो केलाह। बचनू मिश्र, जिनका अक्षरक बोध नै रहैन। मुदा इमानदारीसँ काजक निर्वहनक चलैत गामे नहि, अंचलक नेताक श्रेणीमे छला। बचनू मिश्र अपने तँ मुखिया नै बनला मुदा अपन समर्थक मुखिया रहैन। हारला उत्तर राजनीतिमे पछार खेलैन।

सरसैठक चुनावमे काँग्रेसकेँ जबरदस धक्का लगल रहए। मधेपुर ब्लौकक नेता जानकी बाबू (श्री जानकीनन्दन सिंह) छला, जे विधायक रहि प्रतिनिधित्व कऽ चुकल छला। ओ टुटि कऽ महामाया बाबूक संग जनक्रान्ति दलमे आबि चुकल छला। जे लाभ सोशलिस्ट पार्टीकेँ भेटल आ वासुदेव बाबू (श्री वासुदेव प्रसाद महतो) एम.एल.ए. भेला। ❑

जातिक बनाबट-

बेरमाक ब्राह्मण पाँच खण्डमे विभाजित अछि। ओना, चुनावक नाओंपर एक रहै छल मुदा सामाजिक बेवहारमे दूरी बनल छे लैन। कम्युनिस्ट पार्टी जे 1962 ई.मे पहिने बनल छल ओइमे ब्राह्मण सभ टुटि कम्युनिस्ट पार्टी बनेने रहैथ। पाँचो खण्डक अलग-अलग सामाजिकता छेलैन। कथो-कुटुमैती आ खानो-पीउनमे दूरी छेलैन। बरइ, कोइर, कियोटमे एकरूपता छल। एकरूपता ई जे खेनाइ-पीनाइ, पाबैन-तिहार एकरंगाह छेलैन। धानुक दू खण्डमे विभाजित छल, अखनो अछि। दुनूक बीचक दूरी अधिक अछि। तेकर कारण अछि जे बहुत पहिनेसँ धानुक खबासियो करैत आएल अछि आ किसानियोँ जिनगी बना जीबैत आएल अछि। तहिना मल्लाहो विभाजित अछि। मुसहर परिवार जेरगर अछि मुदा ओकरामे सेहो फुटफाट होइते रहै छइ। तेकर कारण होइ छै जे कोनो भोज-काजमे सभकेँ सभ नै खुआ पबैत अछि जइसँ अपनामे विभाजित रहैए।

मधेपुर ब्लौकसँ लऽ कऽ गाम धरिक चोटसँ बचनू मिश्र चोटा गेला। पुरना संगी सभ जे रहैन ओ सभ संन्यास लऽ लेलैन। सिद्धान्तक नाओंपर अपन भोँट अर्पित केने रहला। बचनू मिश्रक ब्रेन प्रभावित भऽ गेलैन। जइसँ यत्र-कुत्र बाजए लगला। नतीजा भेलैन जे पोखैरमे डुबा-डुबा एते मुकिऔलकैन जे पीठीमे जबरदस घा भऽ गेलैन। दरभंगामे ऑपरेशन भेलैन तखन घा ठीक भेलैन। ❑

बेरमामे दुर्गास्थान बनैसँ पूर्व...

बेरमा गाममे दुर्गास्थान बनैसँ पूर्व छोट-पैघ अनेको स्थान छल, कोनो-ने-कोनो रूपमे अखनो अछि। बलदेव बाबू (सरिसब पाही) बेटाक उपलेखनामे एकटा शिवालय बड़की पोखैरक उत्तरबरिया महारपर बनौलैन। अखुनका हिसाबसँ मन्दिर कोनो खास नहि, मुदा जइ दिन बनौल गेल, बहुत सुन्दर मन्दिर रहए। ओना, अठासीक भुमकममे खसि पड़ल मुदा स्थान आरो चमैक गेल। ओही मैदानमे दुर्गोपूजा होइए आ मुसलमानक दाहाक मेला सेहो लगैए। मेलामे अकसरहाँ वेपारियो आ देखनिहारो हिन्दुए-क परिवार रहैत अछि।

दोसर स्थान राधा-कृष्ण, राम-जानकी, हनुमान-महादेव सबहक सम्मिलित स्थान अछि। एक्के स्थानपर रामो-जानकी आ राधो-कृष्ण छैथ। स्थान बहुत पुरान अछि। बौधू दास स्थान बनौलैन।

बौधू दास शुद्ध वैरागी छला। परिवार नै छेलैन, मुदा स्थानकेँ स्थान बनौने रहैथ। कम-सँ-कम एकबेर अपनो सौंसे गाम जरूर घुमै छला आ सभसँ हब-गब करै छला। लोको उपकैड़-उपकैड़ हुनका कहैत रहैन जे 'बाबा, औझुका सिदहा हमरे दिससँ रहतै।'

असगरे घुमै छला। ओना, ओ ठकुरवाड़ी बनौने छला, मुदा बिनु मुर्तियेक। लोकक दुख-दर्दकेँ हृदयसँ पकड़ै छला। भखरौली (सुखेत) नील कोठीक सेहबाक (अंगरेज वेपारी) अन्याय नै बरदास कऽ सौंसे बेरमा -लोककेँ कहलखिन जे 'एकरा भगबैक अछि। तेपटा जमीन लऽ लऽ सभटा खेत मारने जाइए।'

डेढ़-हत्थी पेना लऽ कऽ जे नित्य बौधू दास घुमै छला आ वएह नेने आगू भेला। मात्र आगूए नहि भेला कइयो कऽ देखा देलखिन।

ओही स्थानपर महावीर दास भेला। गरीब परिवारक महावीर दास कबीर

पंथक सीख, स्थानपर आबि गेला। बौधूओ दासक उमेर निच्चाँ मुहेँ भेलैन। महावीर दासकेँ रखि लेलैन। वैष्णव रहबे करैथ। मुदा बौधू दासक प्रभाव रहबे करैन, जइसँ बहुत उमेरक पछाइत बिआह केलैन। साधारण परिवारसँ आएल महावीर दासक विचार बहुत उदार छेलैन। भूमिहार रहितो सबहक परिवारमे कबीर पंथी परिवार बुझि भात-रोटी सभ खाइ छला। वैदागिरीक ज्ञान भेलैन। वैदागिरी खूब बढ़लैन। वएह आमदनी देख बिआहो करौल गेलैन आ केबो केलैन। ताधैर स्थानमे बीघा पाँचेक, समाजक दान कएल जमीनो भऽ गेल छेलैन।

महावीर दास हफीम खाइ छला। मुदा सोभावसँ बहुत उदार रहैथ। परोपट्टामे नाम कमेलैन। भगवानक दरवार (ठकुरवारी) मे पैघ-सँ-पैघ आ छोट-सँ-छोट जे कियो संगीतज्ञ औता जहाँ धरि बनि पड़त खुशीसँ विदा करबैन। से भेबो कएल। परोपट्टाक दरवारी दास होथि आकि छठू दास, हिताइ दास होथि आकि लखन दास, जनिक ढोलकिया बम्बइमे नामी छैथ, तहिना नाटक-नौटंकी इत्यादि-इत्यादि। अपन सोभाव वएह रहैन जे जखन हफीमक निशा सिरचढ़ रहैन तखन विदा करैथ।

गामक तेसर स्थान छी बरहम स्थान। अखनो बीघासँ ऊपर जमीन स्थानमे अछि। पक्का माकन अछि। आँगनवाड़ी केन्द्र, धर्मराज स्थान सभ सटले-सटल अछि। जाधैर पण्डित उपेन्द्र मिश्र, जे वेद, व्याकरण, साहित्य आ ज्योतिषक आचार्य छला, बरहमे स्थानमे साले-साल कातिक मासमे पनरह दिन भागवत करै छला। ओना, ओ तेते गंभीर आ संयमी छला जे एक शब्द फाजिल ने बजै छला जइसँ बनौआ पण्डितक बीच उपहासक पात्र बनल रहला जे हुनका थोंथिए ने छैन। अपन स्थान बुझि गामेपर सँ चौकी नेने अबै छला आ आसनक जे प्रक्रिया छै से करैत बैस जाइ छला। पहिने दू-तीन दिन प्रचारे होइमे लगि जाइ छल मुदा जेना-जेना प्रचार होइत जाइ छेलै तेना-तेना सुननिहारोक आ भागवतकेँ आगू बढ़बैक ओरियानो करैत जाइ छला।

एकटा महावीरजी स्थान, पोखैरक माहरपर अधसुखू कटहरक गाछ लग धूजा गाड़ि स्थान स्थापित भेल। पूजा शुरू भेल। एकटा अद्भुत भेल। अद्भुत ई

भेल जे अधसुखू कटहरक गाछ पानि पीब जोर केलक। गाछ लहलहा उठल। मझोलके गाछ, जेना डारि-पात सभमे फड़ैक शक्ति आबि गेलइ। डेढ़ साएसँ अढ़ाइ साए तक फड़ हुअ लगलै। भलेँ तीन-चौथाइमे कोह नहियेँ होइ, कमरीए टा होइ। वएह कटहरक गाछ स्थानक प्रभावकेँ तेज केलक। इलाकामे समाचार पसैर गेल। अष्टयाम कीर्तन (रामनवमी, चैत) शुरू भेल जइमे तीन मनसँ पाँच मनक बीच गहुम-चाउरक प्रसाद बनै आ खर्च होइत छल। जे एक-एक मुट्ठी करि कऽ बाँटल जाइ छल। लकड़ीक मण्डप बनल रहै छल जेतए विसर्जनक पछाइत नगर कीर्तन होइत रहइ। नगर कीर्तनक अर्थ भेल चारि गोरे मण्डपकेँ उठा आगू-आगू सौंसे गाम घुमै छला आ पाछू-पाछू कीर्तन-भजन होइत समाजो घुमै छला। जिनका जे जुड़ैत रहैन से से चढ़ेबा चढ़बै छला। जइसँ साज-बाज कीनल जाइ छल।

तहिना मुसहर सभ सेहो आसीन मासमे पूजा करै छला आ अखनो करै छैथ, मिरदंग-झालि लऽ दस गोरे सौंसे गाम घुमि चन्दा करै छेलैथ/ छैथ। जइसँ पूजाक खर्च चलै/ चलैए। तहिना मुसलमानो सभ दाहा बनबै छैथ। आ दाहाक संग सौंसे गाम घुमै छैथ। एहेन भायचारा बेरमामे चलि आबि रहल अछि। तहिना सालमे दू स्थानपर दुर्गा पूजा, महावीरजी स्थानमे दर्जनो अष्टयाम, नवाह, तीन दिनक कबीर पंथक सन्त सम्मेलन, दर्जनो साहित्यिक संगोष्ठी, दुआर-दरबज्जापर कीर्तन-भजन इत्यादि-इत्यादि चलिते रहैए। तेतबे नहि, तीन-तीनटा महंथो, तीन सम्प्रदायक, अदहा दर्जन कीर्तनो मण्डली, जे रोजगार बनौने छैथ, सभ चलि रहल अछि। आखिर मिथिलाक समाज छिऐ किने।

एक तँ ओहिना सरसैठक चुनाव हवा बहौलक, तैपर बेरमाक भगवती (1969 ई.मे स्थापित) सेहो अपन दुआरि खोलि देलैन। गामक आयात-निर्यात आन-आन समाजसँ बढ़ल। दुनू हवा चलल , एक दिस सभ जातिक बीच दुर्गापूजा एली तँ दोसर-दिस नव जवानक हृदयमे किछु करैक उत्साह सेहो भरल। ओना, समाज समुद्रोसँ नमहर होइते अछि। तँए समाजक भीतर की सभ होइ छै, कहब कठिन अछि। मुदा किछु जे देखबामे अबैए ओ छी स्त्रीगणक माध्यमसँ नैहर-सासुरक बीच पाइ-कौड़ी, गहना-जेबरक बन्हकी-छनकी। कोन गामक गहना कोन गाम गेल कहब कठिन। दोसर गामोक बीच महाजनी आ

आनो-आनो गामक बीच चलिते अछि। जमीन्दारीक रूआब तँ खनदानी रूआब बनैए, जौं से नइ बनैए तँ अंगरेज सेहबा चलि गेल आ साहैबक बीआ केना छिटा गेल। मैनजन, महाजन, जमीन्दारक संग जाति-साम्प्रदायिक सेहो केतेको सूत्र लागि गेल अछि।

बेरमावासीकेँ ॠण दइमे अगुआएल जातिक महाजन। खाली एकटा पछुआएल दाता, मुदा कारोबार छोट। वेपारीक शासनो जमीन्दारसँ भिन्न होइत। खाएर जे हउ? श्राद्ध-कर्म आ बिआह-कर्म रोकब पुरोहित सभ घोषणा कऽ देलैन। गामक लोकक बीच समस्या ठाढ़ भेल जे आब की हएत? कबीर पंथी महात्मा सभकेँ रस्ता भेटलैन, घोड़-दौड़ शुरू केलैन। समाजमे उठैत आगि ठमकल रहल। कबीर पंथी सभ तेहेन जे जएह घर बसबए चाहै छैथ तहीमे आगि लगबै छैथ। गति-मुक्तिक विचार तँ समाजमे दइ छथिन मुदा औझुका बात कहबे ने करै छथिन। आइ हम की छी, सबहक प्रश्न छी। कबीरक पाँति छैन-

“साईं इतना दीजिए...।”

मुदा के केतए-सँ दैथ तैठाम कनी झल भऽ जाइ छइ। तहिना मायाक बुनियादसँ ऊपर उठि विचार रखै छैथ। जइसँ झल अन्हार भऽ जाइ छइ। अध्यात्म ओहन पद्धति छिऐ जे मनुखकेँ मनुख बनैक लूरि दइ छइ। खाली लूरिये नहि, ओहन बुधियो दइ छै जेकरा ‘सुपर मैन’ कहै छिऐ। किनका ई अभिलाषा नै छैन जे सुपरमैन बनी? मुदा, से किए ने भऽ पबैए। जंगलमे लाखो गाछ एकसंग जीवन-यापन करैत हवो-बिहाड़िक झोंक सहैए। मुदा...।

एकैसम शताब्दीक मांग अछि जे स्वतंत्र मनुख बनि स्वतंत्र विचरण कऽ सकी। मुदा जैठाम बाट-घाट सभ असुरक्षित अछि तैठाम दिल्ली दूर नहि तँ लग अछि। तखन जाए दियौ जेहो खेलक सेहो पचताएल जे नै खेलक सेहो पचताइए।

1960 ई.सँ जगदीश प्रसाद मण्डल खेतीसँ थोड़-बहुत जुड़ि गेल रहैथ। मिरचाइ, भट्टा, कोबी, अल्लू इत्यादि खेती शुरू केलैन। धान, मरूआ, रब्बी-राइक खेती जने हाथे हुअ लगलैन। हिनकर जेठ भायकेँ खेतीसँ कम सरोकार

रहैन। तहूमे अमानत पढ़ि लेने रहथिन। जमीनक खिस्सा-पिहानी ओहन जे महिनो भरिमे अन्त नै लइत। मुदा अपनो जिनगी लेल तँ लोक किछु सोचिते अछि। नाच दिस झूकि गेला। मुदा गरीबक कलाकेँ उभारब धिया-पुताक खेल नहि। खाएर जे हउ।

भोगेन्द्रजीक सम्पर्कमे एला पछाइत जगदीश प्रसाद मण्डलजीक खेतीक प्रति आरो जिज्ञासा तेज भेलैन। तेज ऐ दुआरे भेलैन जे जर्मनी, जापानक खेतीक बात ओ मनमे बैसा देलखिन। हिसाब जोड़ैथ तँ दस कट्ठा खेत एक परिवारक (पाँच गोरे) लेल बेसीए बुझि पड़ैन। तहूमे साइबेरियाक ओहन किसान अछि जे सालक छह मास, आठ मास ढकल बर्फ हटिते अगुताएलमे तेना कऽ खेती कऽ लइए जे बढ़ियाँ उपजा उपजा लइए। आइ भलेँ मिथिलांचलक अदहासँ बेसी भाग बलुआ गेल अछि, माटि ऊपर बालु भरि गेल छइ। समस्या ओते भारी अछि जे जहिना बालु तरसँ ऊपर आबि भूमिकेँ मारि देलक तहिना ओकरो अँटावेश करैत किसानक हाथमे खेत आबए। बिहारक मूल पूजी खेत छी, जेते खेती समृद्ध हएत तेते राज्यो समृद्ध हएत।

एक तँ अपन हाथक पूजी खेत, दोसर जखन राजनीतिसँ जगदीश प्रसाद मण्डलजी जुड़ि गेलैथ तखन तँ काजो बढ़ि गेलैन। खेती दिस ढंगसँ बढ़ैक कोशिश करए लगला। पूसा मेलासँ खेती-बाड़ीक किताब कीनि-कीनि आनए लगला। तैसंग किसानक जे कार्यक्रम होइ तइमे सेहो जाए-आबए लगला। तेतबे नहि, राजनीतिसँ जुड़ने कोट-कचहरी सेहो घुमए लगला।

मधेपुर ब्लौकमे जुबेर साहैब पी.ओ. रहथिन। बहुत शरीफ लोक। अपनापनक भाव बहुत अधिक रहैन। हुनकासँ सम्पर्क भेलैन। ओ एग्रीकल्चर ग्रेजुएट। स्कूल-कौलेज जकाँ घन्टो-घन्टो खेतीक बात लोककेँ बुझबैत रहथिन। हुनका सम्पर्कसँ ई भेलैन जे जेतए हुनकर कार्यक्रम होनि तँ हिनका जरूर जानकारी देथिन। एग्रीकल्चर महाविद्यालय- पूसो-ढोलीमे सालमे एकबेर नमहर आ छोट-मोट कार्यक्रम चलिते रहै छल।

1960 ई.सँ पूर्व बेरमा गाममे ने एकोटा बोरिंग रहए आ ने दमकल। सभसँ पहिने (1971-72) स्व. सत्य देव झा, जे पढ़ल-लिखल तँ नहियेँ छला मुदा

एवरेडी बैट्रीक कम्पनी- कलकत्तामे नोकरी भऽ गेल रहैन, सेवा निवृत्त भेले रहैथ। बंगालक खेतीक जानकारी सेहो भइये गेल रहैन। सोचला जे पाँच बीघा खेत कीनि जौं बोरिग करा लेब तँ परब रिस भऽ जाएत। से करबो केलैन। वएह बोरिग गामक पहिल छी।

खेतीक जानकारी भेने पानिक महत लोक बुझए लगै छइ। राजनीतिक पार्टी बनियेँ गेल रहए। सरसैठक रौदीक पछाइत बोरिग-दमकलक योजना सेहो जन्मल, मुदा सतमसुआ! बेरमा गाममे बी.डी.सी.क बैसार भेल। डी.एम. सेहो आएल रहैथ। ब्लौकक सभ रहबे करैथ। तोहफाक रूपमे डी.एम. साहैब, तिहाइ सब्सिडीक रूपमे बोरिग-दमकलक चर्चक संग किसानक दशा-दिशाक चर्च सेहो केलैन। चारि श्रेणीमे किसानक बँटबाराक चर्च करैत सबहक लाभक चर्च केलैन। जगदीश प्रसाद मण्डल आ चारि गोरे आरो माने पाँचटा किसान मिलि विचार केलैन जे अवसरक उपयोग जरूर कएल जाए। पूसा-ढोलीसँ लऽ कऽ जिला-ब्लौकक बीच जे किसान मेला वा गोष्ठी होइ तइ सभमे जाइत-अबैत रहैथ। ओना, पाँचो गोरे बोरिग गड़बैक विचार केलैन मुदा दू गोरे नै गड़ौलैन। बोरिग गड़ौला पछाइत नव-नव धान, गहुम इत्यादिक बीआ सेहो आनए लगला। अखन (2012 ई.मे) जेते धानक उपज नै भऽ रहल अछि तइसँ बेसी आठम दशकमे हुअ लगल छल। सीता धान, जे मेही सेहो होइत अछि आ खाइयोमे नीक अछि, सवा क्वीन्टल कट्ठा उपजए लगल। सिरिफ धाने गहुम नहि, अल्लू-कोबी, टमाटर इत्यादिक खेती सेहो जोड़ पकड़लक। जे गाम कर्जक तरमे दबल छल ओ अपना पैरपर ठाढ़ हुअ लगल। गामसँ जमीन्दारो सभ चलि गेल रहैथ। एक गोरे मात्र बँचल रहला, जिनका भाँजमे एक सय दस बीघा जमीन रहैन। जैपर पछाइत जबरदस लड़ाइ भेल।

बी.डी.सी.क बैसारमे डी.एम. साहैब सुदिखोर महाजनक चर्च विस्तारसँ केने रहैथ। संग-संग ईहो कहि देलखिन जे, 'दोबरसँ फाजिल जे महाजन लेता हुनकापर कानूनी कारवाइ हेतैन।'

कर्जदार सभ निचेन भऽ गेला जे जहिया हएत तहिया ने देबइ। नै रहने केतए-सँ देबइ। मुदा महाजनक आक्रमण भेल। पकड़ा-पकड़ी शुरू भेल।

खेतीक संग-संग गाममे आरो-आरो काज सभ हुअ लगल। बेरमाक जेतेक बान्ह-सड़क अछि ओकरा नक्शाक अनुकूल बनौल गेल। जइसँ गामक रूपे-रेखा बदैल गेल। ई भेल जन-सहयोगसँ। पछाइत सरकारियो योजना सभसँ माटिक काज आ खरंजा आदि होइत रहल। अखन तँ सहजहि बरेमाक ओहन रूप बनि गेल अछि जे एकोटा परिवार एहेन नै अछि, जेकरा घरक आगू चरिपहिया सवारी नै जा सकैए। तहिना प्रति दू परिवारपर पानि पीबैक साधन बनि गेल अछि। तहिना प्रति आठ बीघापर बोरिंग (प्राइवेट) अ छि। ओना, पच्छिमी कोसीक नहरक दूटा शाखा सेहो उत्तरे -दच्छिने, पूबो आ पच्छिमो बनि रहल अछि। तैसंग स्टेट बोरिंग सेहो गड़ाएल अ छि। मुदा चालू नै भेल हेन। तहिना आवागमनक सुविधा सेहो अछिए। एक दिस रेलबे स्टेशन तीन किलोमीटरपर अछि तँ दोसर दिस एन.एच. दू किलोमीटरपर अछि। जहिना वसन्त ॠतु अबिते मेघमे ठेकल गाछसँ लऽ कऽ माटिमे ओंघराएल धरतीमे नव पात, नव कलश, नव कोढ़ीक संग नव फूल दैत अछि तहिना बेरमा गामक समाजक फुलवाड़ीमे फूलक अंकुर दिअ लगल। रंग-बिरंगक समस्या (पोजीटिव-निगेटिव दुनू) उठि-उठि ठाढ़ हुअ लगल।

जगदीश प्रसाद मण्डलजी सभ विचार केलैन जे समाजक उत्थानमे जातिक कट्टरपन बाधा छी। ओना, जौं जातिक बीच कथा-कुटुमैती होइत अछि तँ ओ दू समाजक बीचक प्रश्न ब नि जाइत अछि। मुदा समाजक बीच जातिक छूआ-छूत बहुत नमहर खाधि बनबैए...। तँए महिनामे एकबेर बैसार करब आ ओ करब टोले-टोल घुमि-घुमि, ई सबहक विचार भेलैन। बैसारमे कोनो बेसी जोगारक प्रश्न नहि, मुदा टोलबैयाक विचारसँ, जौं ओ सभ खाइ -पीबैक बेवस्था करैथ तँ सेहो बढ़ियाँ, सभ खाएब, ई सबहक विचार भेलैन। अखनो धरि खाइते छैथ। सभ जातिक बरियातियो आ भोजो-काजमे खाइते छैथ। हँ ई बात जरूर अछि जे अखनो तितम्हा चलिते रहल अछि, मुदा सभ जातिक सहयोग रहने कम पड़ि जाइए। ई बहुत नीक कदम भेल।

परोपट्टामे जेना पसाही लागि गेल। ओना, झंझारपुर ब्लौकमे कमलासँ पच्छिम नागेन्द्रजी (डॉ. नागेन्द्र कुमार झा, डॉ. धीरेन्द्रक माझिल भाए) आ

बेरमासँ पूब फुलपरास ब्लौकमे कामेसरजी (श्री कामेश्वर राम) सेहो क्रान्तिक सूत्रपात केलैन। जमि कऽ तीनू ब्लौकमे पार्टीक प्रभाव बढ़ल। तैबीच नागेन्द्रजी पार्टी स्कूल चलौलैन। लग रहने तीनू दिन जगदीश प्रसाद मण्डल सभ भाग लेलैन। केन्द्रक नेता सबहक संग रहैक मौका भेटलैन। हुनको सबहक इच्छा भेलैन जे बेरमोमे अहिना हुअ। से भेबो कएल।

टोले-टोलक मीटिंगमे टोलक समस्या मुख्य मुद्दा बनल रहै छल जइसँ गामक अध्ययन अधिक-सँ-अधिक गोरेकेँ हुअ लगलैन। चौक-चौराहापर सिनेमा-सर्कशक गप-सप्प नै भऽ गामक समस्याक गप शुरू भेल। मुदा चालैन जकाँ रोगाएल समाज...।

ओना, आन गामसँ भिन्न बेरमाक बनाबटो अछि। तेकर मुख्य कारणमे एकटा ईहो कारण अछि जे आइ धरि गमकट्टा (धार)क पल्ला नै पड़ल। कहैले बहुत पहिनेसँ एकटा सुपैन (प्राचीन नाम सुपर्णा) धार अछि मुदा अजेगर साँप जकाँ ई एक्केठाम बैसल रहल। तहूमे तीनियेँ मास धार रहैए बाँकी मास मुर्दघट्टीसँ लऽ कऽ चारागाह बनल रहैए।

बेरमा गाममे अधिक बासभूमि रहने ऊँचगर जमीन पर्याप्त अछि। मझोलका किसान बेसी रहने जमीनक छोट सीमांकन। मुदा पटबैक बेवस्था नै रहने बाड़ियो-झाड़ीमे मड़ुए-गम्हरीक खेती होइ छल। तरकारी-खेतीले ऊँचगर जमीन–माने चौमास–खाली बरसातीए लेल होइए, बाँकी मध्यमो जमीन (चौर छोड़ि), दू बेर (दू फसल) उपजैत अ छि। किछु बोरिंग भइये गेल, चापाकल सेहो लोक गड़ौलक। तरकारी खेती जोर पकड़लक। केतेको परिवार उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। महाजनी सेहो बन्न भइये गेल रहए। जइसँ किछु समस्या उठल रहए।

भुमहुर आगि जकाँ तरेतर गामक राजनीति जोड़ पकड़ए लगल। भगवती स्थान अगुआएल। तैसंग एकटा आरो भेल। आरो ई भेल जे खुदरा-खुदरी सभ कियो सभ-स्थान (देव स्थान) अबै-जाइ छला मुदा मने-मन बँटाएल छला। खाली डिहवारे स्थानटा सार्वजनिक बुझल जाइ छल। जेकर स्पष्ट रूप बिआह, मूड़न, उपनैन इत्यादिमे देखल जाइत अछि। बेरमाक डिहवार स्थान एकहरे वंशक स्थापित कएल अछि। दुर्गापूजा एकहरे दियादकेँ तोड़लक। भेल ई जे

एकहरे परिवार (दियादी) गामक ब्राह्मणमे सभसँ नमहर दियादी अछि जे दू टोलमे विभाजित छैथ। उत्तरबारि टोल आ दछिनबारि टोल।

बड़की पोखैरक उत्तरवरियो आ दछिनवरियो महारपर दुर्गापूजा होइत अछि। पोखैर बीचमे सीमा अछि। गामक सीमा (टोल-टोलक) गजपटे रहि गेल। जेना आन-आन गाममे केतौ सड़क सीमा होइए तँ केतौ स्कूल, से बेरमामे नै भेल। पानियेँमे सीमा गड़ा गेल।

उत्तरबारि दुर्गा-स्थानक अगुआइ बेरमा निवासी मधेपुर ब्लौकक प्रमुख आ जगदरक नथुनी सिंह केलैन। प्रमुख गामक भगिनमान, तँए एकहरे परिवारमे गुन-गुनी उठल। मुदा दुनू गोरे माने प्रमुखो आ नथुनियो सिंह एकहरे परिवारसँ दुर्गाक माटि लेलैन। दछिनबारि टोलक एकहरे अपन स्थान बुझि दस-अना छ-अना हुअ लगला। आवाजाहीमे बढ़ोतरी भेल। भोज-भात सेहो बढ़ल। ओइ समय बचनू मिश्र जे राजनीतिक दृष्टिसँ माटि धऽ नेने छला, आर्थिक विषमता रहबे करैन। ओना, चारि भाँइक भैयारी छेलैन। चारू भाँइ गामक सेसर देहबला माने हाड़-काठक। मुदा मोकदमामे ओझरा गेल रहैथ। दछिनबारि टोलक एकहरे परिवारमे बचनू मिश्रक नीक पैठ रहैन। ओ दिन-राति एकबट्ट कऽ दछिनबरिया दुर्गाक माटि सेहो एकहरे परिवारसँ लियौलैन।

एकहरे परिवार विभाजित भऽ गेल। ब्राह्मण बँटा गेला, जइसँ पूजा-पाठक कोनो अभाव कहियो नै भेल अछि। अही बीच कपिलेश्वर राउतक बाबा मरलैन। पुरोहित अपन ललकारा भरलैन। लड़ाइ फँसि गेल। लड़ाइ ई फँसल जे एक दिस पुरोहित अपन शक्ति देखबए लगला तँ दोसर दिस कपिलेश्वर राउत अरिकऽ ठाढ़ भऽ गेलैथ। मुदा पाँचे-सात दिनक बीच (सराध-मृत्युक बीच) इलाका गनगना गेल। मृत्यु दिन विवाद तँ नै उठल मुदा नव चेतना जरूर जागल। नव चेतना ई जे पार्टीक भीतर बन्धनक रूपमे जिनगीकेँ पकड़लक, मृत्युक समाचार सुनिते लोकक ढबाहि लागि गेल, जेना समस्ये हेरा गेल। कियो कपड़ा कीनए गेल, कियो बाँस काटि चचरी बनबए लगल, कियो अछिया खुनए गेल। बजरूआ कारखाना जकाँ काज चलए लगल। मुदा जहिना एक कम्पनीक इंजनक पार्ट दोसर कम्पनीक लगौने अनेरो खड़खड़ाइत-झड़झड़ात रहैत अछि

तहिना शुरूहेसँ हुअ लगल। चचरी बनबैसँ पहिने बाँस कटैमे रक्का-टोकी शुरू भेल। रक्का-टोकीक मूल कारण भिन्न-भिन्न जातिक भिन्न-भिन्न विधि-विधान। मुदा संयोग एहेन भेल जे सभ टोलक लोक एकठाम पहुँच गेला। जहिना गजेरी धुआँक गन्ध लगिते प्रेमी दिस आँखि उठा-उठा देखए लगैए तहिना जइ काजक जे प्रेमी ओ अपन-अपन प्रेमी दिस ताकए लगला। मुदा ऐ बातपर सभ सहमत जे जइ जातिक काज छी हुनकर महत बेसी होइ।

घरबैया (कपिलेश्वर राउत, जागेश्वर राउत आ लखन राउत- तीनू भाँइ) कुबेरक खजाना खोलने। जइ काजमे जे जरूरत होइ, पुछैक कोनो खगता नहि। अपन गाछी-कलम अछि, बँसबारि अछि। तीनटा बाँस चचरी ले कटल।

चचरी बनबैकाल केहेन बल्ला आ फट्ठा होइ, तइले फेर रक्का-टोकी उठल। मुदा पार्टीक भीतर एहेन-एहेन नेता रहैथ जे घरहटियो रहैथ। तँए हुनके जुतिसँ चचरी बनल।

फेर लकड़ी कटैमे झंझट उठल। एकटा शीशोक (जइमे शारील नै भेल रहै) सुखल गाछ। जइसँ काज चलि सकै छल। मुदा भेल ई जे बिना बुझने-सुझने अपने फुरने दू गोरे फड़ैबला आमेक गाछ काटि कऽ खसा देलक! मुदा कएले की जा सकैए। सुखल जरनाक सेहो जरूरत अछिए, ओहो शीशो कटाएल। तीन-चारि दिन तक डोम लकड़ी उघिते रहि गेला। खाएर जे हउ..। मुदा सैकड़ो आदमी एकठाम बैस असमसान देखलक। पसाही जकाँ कोन लुत्ती केमहर उगि कऽ पकैड़ लैत, तेकर ठेकाने ने रहल। एक गोरे असमसानसँ आएल। आन गाम जाइक रहै, दाढ़ी-केश कटा कऽ चलि गेल। दाढ़ी केश तेसर दिन कटाइ छै, तहिना सीमा टपैक बात सेहो उठल। जेना सौंसे गाम रंग -बिरंगक पसाही लागि गेल। कोनो एक मुहरी गप नहि, सभ गँरिमुराह। केकरो मुँह किम्हरो तँ केकरो नाँगैर किम्हरो। मुदा ललकाराक मैदानमे तँ ललकरे जोर पकड़ै छइ। तँए कियो अपना तर्ककेँ वितर्क-कुतर्क मानैले तैयारे नहि। मुदा जहिना कलकत्ताक सड़कपर गाड़ी-पर-गाड़ी लगले रहै छै तहिना तेतेक समस्या–गप-सप्पक क्रममे–उठए लगल जे गप्पे-गपमे ओझरा जाइ छल। कोनो घटनाक गप कोनो घटनामे मिलि जाए। जहिना दू देशक बीच लड़ाइमे सीमा कातक लोककेँ

नीन हराम भऽ जाइ छै तहिना गामक लोकक बीच भऽ गेल। पहिल दिन बहुतो गोरे नै बुझि पेला, दोसर दिन पता चललैन जे किछु गोरे जहिना अपन कुरहैड़-टेंगारी लऽ कऽ गेल रहैथ ओ संगे नेने चलियो एला, चलैन अछि जे तेराइत तक सभकेँ छुतका लागि जाइ छै, तँए तीन दिन धरि ओहो सभ किछु ने करत। जे सभ कुरहैड़-टेंगारी लऽ कऽ आएल रहैथ हुनका जगदीश प्रसाद मण्डलजी पुछलखिन जे किए अनलिऐ?

ओ सभ जवाब देलखिन जे झंझारपुरबला पार्टीक (लकड़ी कारोबार केनिहार) कुरहैड़ छिऐ, आइ समाज दुआरे काज कामै केलौं , जौं कुरहैड़ बरदा जाइत तखन तँ काजे बन्न भऽ जइतै। तही बीच एक गोरे बाजि उठला जे आन गामक कुरहैड़ भेल किने, गामक कुरहैड़केँ ने छुतका लगतै आकि आनो गामक ओजारकेँ छुतका लागत...। मुदा कुरहैड़बला गप ओते नै पकड़लक जेते केशबला पकड़लक।

रंग-रंगक गप गाममे चलए लगल। तेरहा सराधमे दियाद-वाद सहित नह-केश दिन केश कटौता, तँए घरवारीकेँ कोनो मतलबे नहि। मुदा समाजमे एक जातिक संग आनो जाति आ एक टोलक संग आनो टोलक लोक रहैथ तँए वैचारिक टकराव टोले-टोल, घरे-घर हुअ लगल। विचित्र स्थिति बनि गेल। जहिना गाममे झंझट बढ़ल तहिना पंचैतियो बढ़ल। अधिक पंचैतियो बढ़ने झंझट कमबो कएल आ बढ़बो कएल। कियो बजै छल जे जखन मुरदा जरौला पछाइत पोखैरमे नहेलौं, आँगन आबि लोह-पाथर छुलौं, अपना ऐठाम आबि सोहराइ वा मिरचाइ खा नहा कऽ कपड़ा बदैल लेलौं तखन छुतका केतेटा अछि जे तैयो लगले रहि गेल?

तँ कियो बजै छल जे केश-कट्टा दियाद होइ छै आकि आनो हेतइ। तँ कियो बजै छल जे काल्हिए दस रूपैआ दऽ कऽ केश बनौने छेलौं , केना कटा लेब?

गाममे गपो चलैत आ पराते भने किछु गोरे केश कटा लेलैन। बिना पनचैतीए पनचैती भऽ गेल जे केशमे किछु लागल रहै छै जिनकर मन मानए कटाउ, नइ मन मानए तँ नै कटाउ। दू दिन अहिना चलल। तेसर दिन छौर-

झँप्पी हएत। अखन धरि सभ (समाज) कोनो निर्णय नै केने छल जे की कएल जाए, मुदा परिस्थितिक सामना जरूर कएल जाएत से तँइ छल, ई सबहक मनमे रहबे करैन। जखन जे समस्या उठत तेकर समाधान तखने करब।

जइ दिन छौर-झँप्पी छल ओइ दिन घरवारी (कपिलेश्वर राउत) एकटा समांगकेँ महापात्र ऐठाम पठौलैन। बेरमामे महापात्र नै अछि, कछुबीक पुजबै छैथ। जेहो सभ नै बाजक चाही सेहो सभ महापात्र कहि निर्णय सुना देलखिन जे नै जाएब, कछुबीसँ आबि ओ समांग बाजल। छौर-झँप्पीक समय भेल जाइत रहइ। की कएल जाए? बिदेसर ठाकुर (नौआ) बाजल जे 'छौरझँप्पीक सभ लूरि हमरा अछि। हम झँपबा देबइ।' सएह भेल।

सराध-कर्ममे पुरोहितक (ब्राह्मण) ओत्ते महत नै होइत अछि जेतेक महापात्रक। निर्णय किछु नै भेल, भेल एतबे जे जहिना महापात्रकेँ कहलयैन तहिना पुरोहितोकेँ पुछि लियौन। सएह भेल।

दोसर दिन जखन पुरोहितकेँ पुछल गेलैन तखन ओहो ओहने जवाब देलखिन जे नै जाएब। सभ विचारिये नेने रहैथ।

दिनेमे बेरूपहर अपनामे बैसार भेल। सर्वसम्मति निर्णय भेल जे पुरोहित-पात्र छोड़ि देल जाए। सराधमे दू काज होइ छइ। क्रिया-कर्म आ भोज। जे खर्च क्रिया-कर्ममे हएत ओ भोजेमे लगा दियौ। ओना, बरइ सभ गाममे नै छैथ, किछु गनल-गूथल गाममे छैथ, जइसँ सभ कुटुमैतीमे सघन गूथल छैथ।

उपरोक्त निर्णय लइते जहिना शंख फूकि महाभारत शुरू भेल तहिना शंख फुका गेल। चौबगली गाममे समाचार पसैर गेल। आन-आन गाममे सेहो रंग-बिरंगक सबाल उठए लगल। केतौ उठल जे जौं क्रि या-कर्म नै हएत तँ भोज नै खाएब। केतौ उठल जे कियो अपन बाप-दादाक करैए तइसँ की पंचक (भोज खेनिहारक) मुँह थोड़े छुबा जाएत?

कुटुम सभ जिज्ञासा करए कपिलेश्वर राउतजीक घरपर आबए लगलैन। जे आबैथ हुनकर जवाब होनि जे सामाजिकता टुटने कुटुमैती थोड़े टुटि जाएत। समाज बनि कऽ नहि, कुटुम बनि कऽ तँ खेबे करब।

गामोमे जातिक बीच विवाद उठल। मृत्युक दसम दिन, जइ दिन नह-केश कट्टी हएत। भिनसुरकेपहर करीब आठ बजेमे बैसार भेल। बैसार ऐ लेल भेल जे अखन धरिक भोज-भात खाजा-मूंगबापर अँटकल छल। लोकक जीवन स्तर एते निच्चाँ जे खाजा-मूंगबा वा लड्डू धरि मात्र पहुँचल छल, तँए खान-पानमे धक्का मारल जाए। तँए रसगुल्ला-लालमोहनक संग पर्याप्त दहीक बेवस्था हुअए। भोज-भातक ई स्थिति अखनो थोड़-थाड़ अछिए मुदा पहिने किछु जाति भोजक मामलामे बदनाम छल। एक तसली चाह बनल, जिनका जेते मन फुरलैन से तेतेक पिलैन। पानो चलल। ओना, पान बर्जित अछि तैयो।

अखन धरि जातिक ओझरी छुटि चुकल छल। एगारहो गामक जाति सहमत भऽ गेला जे भोज खाएब। वातावरणमे उठल जे कियो अपन माए-बापक किरिया-कर्म करत आकि अनकर। तइसँ अनका की जे अनेरे कुटुम-परिवारसँ मुँह फुल्ला-फूल्ली कऽ लेब।

अखन धरिक सोझराएल काज देख सबहक मन हरियर। तैपर चाहक झोंक सेहो रहबे करइ। तेतबे नहि, रसगुल्ला-लालमोहन आगूए-मे छल, सभकेँ बुझले जे गौंआँ-सँ-अनगौंआँ धरिक हिस्सा बरबैरे अछि...।

गप शुरू होइते तीनू बहिन (कपिलेश्वर राउतजीक बेटी) आबि प्रश्न ठाढ़ केलकैन जे 'नह-केशक भोज हम करब', प्रश्न जटिल भऽ गेल, तीनू कहै छै हम करब। 'अच्छा' कहि तीनू बहिनकेँ विदा कएल गेल। मुदा ओझरी लगिते गेल। जखन नमहर भोजक योजना बनि गेल तखन छोटकाकेँ तँ रोकए पड़त। कुबेरक भण्डार तँ नै छिऐ जे जेते निकालब तेते बढ़तै। नह-केशक भोजमे खाइले केकरा देल जाइ छै, ओकरे ने जे कठियारी गेल रहल। भोज कथीक होइ छै, तँ भतभोज। सभ जातिक बीच तँ भातक चलैन नै छइ। तखन? एक्के काज केनिहारमे दू रीति नीक हएत। होइत-हबाइत नह-केश दिनक भोजे उठाव भऽ गेल। तीनू बहिनकेँ कहल गेल जे भोज नमहर भइये रहल अछि तहीमे अहूँ सभ जे दिअ चाहै छी से मिला दियौ। ओते घरवारीकेँ असान हेतइ। होइत-हबाइत तीनू बहिन राजी भऽ गेली।

दोसर प्रश्न उठल जे पुरोहित-महापात्र नै औता तेकर की करब? कियो

जातिक पुरोहित ताकए लगला तँ कियो किछु। मुदा किछु आन जातिमे शुरू भऽ गेल मुदा से नै भेल। तँए जातिमे भेटबे ने कएल। किछु गोरेक विचार जे जखन ओ सभ (पुरोहित-पात्र) एबे नइ करता तखन सोल्होअना छोड़ि दियौ। किछु गोरेक विचार जे जखन गामेमे देखै छिऐ राम, सदाय, पासवान इत्यादिकेँ जे अप्पन सभ किछु छै तखन हमहूँ सभ किए ने बना ली। तखन की हुअए?

अन्तमे निर्णय भेल- रामअवतार राउतकेँ पुजबैक भार देल गेलैन आ बिदेसर ठाकुर सहयोगी बनि पुजा देथिन।

फेर एकटा प्रश्न ठाढ़ भेल- 'पुजौल केना जाए?'

कोन जरूरी कोनो चीजक अछि, से नहि तँ केरे पातपर पुजौता आ दछिनामे दुनू गोरेकेँ एक-एक जोड़ धोती देल जेतैन। सएह भेल। सराधे दिन (एकादशा दिन) भोज करैक विचार भेल। भोज भेलइ। काफी जस भोजमे भेल। मुदा जातिक बीच जे रिएक्शन भेल ओ...।

अखन धरि–दसो दिन धरि–रंग-रंगक बैसार गाम-सँ-आन गाम धरि होइते रहल। अन्तमे, रतीश बाबूक (नवानी) निर्णय भेल जे 'जतिया आगू पतिया नै लगै छइ।'

कपिलेश्वर राउतक ऐठामक घटना (बाबाक सराध) गाम-सँ-बाहर धरि जेना आगिक लुत्ती भऽ गेल। ऐ घटनासँ छोट-पैघ अनेको घटना जन्म लेलक जइमे दूटा घटना ओइमे महत्वपूर्ण रहल , पहिल रामावतार राउतक संग जे भेल से आ दोसर बिदेसर ठाकुरक संग जे भेल से। दुनू गोरेक योगदानो नीक रहलैन।

मधेपुर ब्लौक-थानाक संग-संग विधान सभा क्षेत्र सेहो छल। आब नै अछि। ओइ समय अट्ठाइस पंचायतक ब्लौको आ थानो छल, तँए राजनीतिक अड्डा सेहो रहल। कोसी-कमलाक बीच बसल ब्लौक अछि। तँए दुनूक (पूबमे कोसी, पच्छिममे कमला) बीच जेते छोटका-बड़का, मुइलहा-जीतहा धार अछि सभ मधेपुर ब्लौक होइत गुजरिते अछि। एक दिस कोसी कटनियाँ कऽ बालुसँ बलुऔने अछि तँ दोसर दिस कमलो। किम्हरो बालु अछि तँ किम्हरो मोनि-मान सेहो अछिए। देशक आजादीक लड़ाइमे मधेपुर ब्लौकक योगदान बिहारक कोनो ब्लौकसँ कम नै रहल अछि। जय प्रकाश बाबू, सुरज बाबू आ लखनजीक

(डॉक्टर लक्ष्मण झा) आवाजाही बेसी रहलैन, जइसँ अधिकांश गाममे स्थानीय नेतृत्व सेहो उभरल, अंचल स्तरपर सेहो उभरल। मधेपुर ब्लौकक उत्तरी छोरपर बेरमा पंचायत अछि जे झंझारपुर आ फुलपराससँ लगल अछि। जहिना उत्तरी छोरपर बेरमा पंचायत अछि तहिना पूर्बी छोरपर मटरस पंचायत अछि।

मटरस पंचायतक जानल-मानल परिवार रामावतार राउतक छेलैन। रामावतार राउत (मटरसबला) सम्पैतशाली रहैथ मुदा कोसीमे गामे तहस-नहस भऽ गेल। कोसीक पछबरिया बान्हक भीतर पंचायत पड़ैत अछि। गामे होइत धार सेहो बहै छइ। 1947 इस्वीक आजादीक पछाइत क्षेत्रक जे सम्पैतशाली लोक सभ छला वएह सभ गामक मुखियो आ मुँहपुरुखो छला। वर्गीय आधारपर राजनीतिक पार्टी (कांग्रेस) ठाढ़ छल। तँए जेते गुदगर लोक छला, सबहक भितरिया सम्बन्ध सेहो छेलैन। भितरिया सम्बन्धक माने ई जे हुनका सबहक बीच जातीय बन्धन कमजोर छेलैन। ऐठाम एकटा विचारणीय प्रश्न अछि जे हुनका सभकेँ अपनामे माने एक-दोसर परिवारक बीच लेन-देन, खान-पीउन, मदैत-सहायता सभ किछु छेलैन मुदा जातिक बीच राजनीतिक विभाजन सेहो पनैप गेल छल, जेकर बल राजनीतिक पार्टी सभकेँ भेटै छेलइ। लत्ती जकाँ ओ परिवार माने सुभ्यस्त परिवार सभ सजल छला।

बेरमाक रामअवतार राउत जे तहिया मैट्रीक पास नव युवक छला, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टीक वफादार कार्यकर्त्ता रहैथ। भा.क.पा.मे एक टर्म (तीन वर्ष) जिला परिषदमे सेहो रहला। जहिना कपिलेश्वर राउत तीन भाँइ, कपिलेश्वर, जागेश्वर आ लखन राउत तहिना रामअवतार राउत सेहो तीन भाँइ-सीताराम, रामअवतार आ राम प्रसाद राउत। दू भाँइ रामअवतारक बिआह मैटरसे भेल। ओना, बरइ जाति सभ-गाममे नहियेँ अछि मुदा किछु गाम सघन आबादीबला तँ अछिए। जेहने सघन आबादीबला गाम मटरस तेहने बेरमो अछि, साए घरक लगभग अखनो अछि। मुदा दुनू गामक बीच एकटा दूरी सेहो अछि। जहिना मटरसमे एक परिवारक वर्चस्व रहल, जइसँ सामन्ती सूत्र अधिक मजगूत रहलै, मुदा से बेरमा नै अछि। कम ऑंट-पेटक (निम्न-मध्यम) परिवार सभ बेरमा गाममे अछि, तँए दुनू गामक विचारोमे दूरी अछिए। तहूमे कम्युनिस्ट

पार्टी सेहो कोनो-ने-कोनो रूपमे 1962ई.सँ बेरमामे रहल। ओना, ओइसँ पहिनौं केस-फौदारी गाममे पकैड़ लेने छल। मालिक सभ (जमीन्दार) सँ लड़ाइ चलि रहल छल। चाहे ओ बलदेव बाबू (बलदेव झा, सरिसव पाही) होथि आकि लक्ष्मीकान्त, रमाकान्त साहु, झंझारपुर होथि। आन्दोलनक रूपमे तँ नहि, मुदा बेकतीगत रूपमे तँ छेलैहे, जइसँ किछु बजनिहार तँ छलाहे। राजनीतिक आधारपर 1962 ई.सँ मोकदमा उठल जे किछुए दिनक पछाइत मरि गेल। सभकेँ (पार्टीबला) अगिलगी केसमे फँसा सजा करबा देलकैन।

मटरसक मुखिया रामावतार राउत, बेरमाक रामअवतार राउतपर आक्रमण केलक। आक्रमण ई भेल जे दुनू भाँइ –सीताराम राउत आ रामअवतार राउत–क बिआह मैटरसे रहैन। सीताराम राउतक ससुर साधारणे परिवारक आ रामअवतार राउतक ससुर (बेटाक अभावमे) बबाजीए। दुनू गोरेकेँ मटरसक रामावतार सामन्ती चाप दऽ कऽ दुनूकेँ बेटी आपस अनैले कहल खिन। दुनू मजबूर भऽ गेला।

रामअवतारक ससुर तँ कहि देलखिन जे तोरा सबहक गाम छिअ, जे मन-फुरह से करह, हम जाइ छिअ। आ ओ घुमन्तू बबाजी भऽ गेला। तथापि अपन दल-बलक संग रामावतार राउत बेरमा एला। बेरमाक प्रमुख विन्ध्यनाथ ठाकुर अपन दल-बलक संग तैयारे रहैथ। तैसंग जातिक बीच (माने बरइमे) विभाजनक मजगूत बान्ह (खेनाइ-पिनाइ बन्न) पड़िए गेल रहए। विषम स्थिति बनि गेल। विषम ई जे जाति-सम्प्रदाय एते सक्कत बनल छल जेकरा तोड़ब धिया-पुताक खेल नहि। जौं रोकल जाए तँ केना? जखने लड़ाइ उठत आकि जातिक मुद्दा बनि जाएत..!

करीब बारह बजे दिनमे रामावतार राउत बेरमा पहुँचला। विन्ध्यनाथ ठाकुर पहिनहिसँ मुसताइज। टोलबैए (गामक बरइ टोल) ऐगला वाहन, बेरमाक रामअवतार राउतक घरक चारूकात मर्द-औरत थहाथही करए लगल।

रामअवतारक पिता- सुबध राउत दुनू परानीक संग तीनू बेटाक बीच दरबज्जापर बैस नौताएल छागर जकाँ मरैले पुश्तैनी घराड़ीपर पीठ ओरि देने रहैथ। एक-दोसरक सभ मुँह तकैत, मन कहैत माए तूँ केतेकाल, बाबू अहाँ

केतेकाल, बेटा तूँ केतेकाल, बौआ तूँ केतेकाल..!

दुनू दियादिनी (रामअवतारक पत्नियोँ आ भौजाइयो) भनसा घरक ओसारक खुट्टा लगा बैस कनैत रहथिन। दुनू दियादिनीकेँ कहल गेलैन-

“अपन-अपन गहना-गुरिया जे अछि से लऽ लिअ।”

दुनू दियादिनी किछु ने बजैत। दुनूक बाँहि पकैड़ टोलक स्त्रीगण आँगनसँ निकालि बलजोरी सीमा टपा देलकैन...।

ऐ संग दोसर घटना- रामअवतार राउतकेँ करीब चारि बीघा जमीन छेलैन, जइमे जमीन्दारीक घुरछीक चलैत अस्सी प्रतिशत जमीनपर मोकदमा ठाढ़ कएल गेल।

कोर्टक सभ बेवस्थाक भार आने-आन लऽ लेलखिन। मुदा जमीनक सबूतो होइ छै आ दखलो होइते छइ। दखलबलाकेँ एते लाभ जरूर होइ छै जे उपजबैक मौका भेटै छइ। सबूतक विवाद कोर्टमे उठल। मुदा समाजक तागत मजगूत। तँए दखल रामअवतारेक रहलैन। पछाइत सबूतो कोर्टसँ भइये गेल।

करीब डेढ़-दू बर्खक पछाइत रामावतार राउत (मटरसबला) समझौता केलैन। समझौताक मुख्य कारक भेल जे सुबध राउत डँटि कऽ अरि गेला जे पहिने ओ अपना बेटीक बिआह करए तखन देखा देबै, देखा देबैक अर्थ भेल जे जाति तोड़ि आन जातिमे कुटुमैती शुरू कऽ देब।

होत-सँ-होतांग होइत देख सभ सहमला। सहमैक एकटा कारण ईहो भेल जे केतेको दिन लाठी उठि चुकल छल। शक्ति परीक्षण भऽ चुकल छल। मुदा असल परीक्षण भेल जइ दिन इन्दिरा गाँधी शहीद भेली ऐ घटनाक पछाइत।

समझौताक पछाइत दुनू लड़की मटरससँ बेरमा आपस तँ एली, मुदा मानसिक रोगसँ पीड़ित भऽ गेली। एक सन्तानक पछाइत जेठकी, सीतारामक पत्नी आ दू सन्ता नक पछाइत मझिली माने रामअवतारक पत्नी, मरि गेलखिन। पछाइत दुनू भाँइक बिआह भेलैन जे परिवार अखन चलि रहल छैन।

दुर्गा पूजासँ होइत कपिलेश्वर राउतक घटनामे बिदेसर ठाकुरक नीक

योगदान रहलैन। बोनिहार परिवार रहितो बिदेसर ठाकुरकेँ बात पकड़ैक ढंग आ दोसरकेँ बुझै-बुझबैक ढंग नीक छेलइ। परिवार बड़ नमहर नहि, मुदा छोटो नहि। संयुक्त परिवार टुटैक पैघ कारण गरीबी सेहो होइत अछि। समाजमे एहेन परिवारक कमी नहि जे कहता- “ई सैयो घरक टोल फल्लैंक वंश छिऐन।”

मुदा अखन तेते केसा-केसी भऽ गेल अछि जे सम्पैत तँ गेबे केलैन जे एक्कोटा-समांगो एहेन नै बँचला जे जहल जा खनदानक मर्यादा नहि तोड़लैन।

तीन पीढ़ी ऊपरसँ बिदेसर ठाकुरक एक पुरखियाह परिवार तँए पुश्तैनी खेतो आ जजमनिकोमे काट-खोंट नै भेल, पोता धरि सेहो सएह भेल अछि। एकटा बेटा आ चारिटा बेटी बिदेसर ठाकुरकेँ। अपन आठ कट्ठा खेत, जइमे तीन कट्ठा धनहर, डेढ़-दू कट्ठा घराड़ी, महार (बड़की पोखैरक ढिमका) बाँकी गाछी-बिरछी। दस कट्ठा बटाइयो धनहर करैत रहैथ। गामक जजमनिकामे करीब चौथाइ गाम हिस्सामे रहैन। जेकर कमाइलक (साली) तरीका सेहो रंग-रंगक। मुदा ओहन गिरहस्त (दाढ़ी-केश कटबैबला) बेसी, जे समैपर अगहनमे कमाइल दऽ दइ छथिन। दाढ़ी-केश मिला कऽ एक पूर्ण आदमीक कमाइल एक धारा माने 12 सेर कच्ची, जे करीब सात किलोक लगभग होइए आ अदहा कमाइल एकटा केशक होइए। अही जिनगीमे चारू बेटियो-जमाए, नाइतो-नातिनकेँ देखलैन, तहिना बेटो-पुतोहु आ पोतो-पोती देखलैन।

बिदेसर ठाकुर संग एकबेर जगदीश प्रसाद मण्डल मधुबनीक चकिया जहलमे रहैथ, आरो करीब दस आदमी गामेक रहथिन। बिदेसर ठाकुर कातमे जा कऽ गाँजा पीबैत रहैथ।

गाँजा पीबैत बिदेसर ठाकुरकेँ जहलक जमेदार देख लेलक। पकड़ने आबि डंडा-बेड़ी कऽ देलकैन। एहेन परिस्थितिमे की कएल जाए। खाएर जे हउ, पच्छिमी मधुबनीक एकटा साथी सेहो रहथिन, मुँहगर-कन्हगर। रातिमे खेला-पीला पछाइत सांस्कृतिक कार्यक्रम एक-डेढ़ घन्टा करै छला। डंडा-बेड़ी नेने बिदेसर ठाकुर सेहो अपने बनौल गीत-

“हमरा सन के अछि बुड़िबलेल
बाले-बच्चे महींस पोसलौं।

प्रमुख, नथुनी सिंह, दरोगा
खुटापर आबि खोलि लेल।
हमरा सन..?
जखने जेलक अन्दर एलौं
पीपरक गाछ तर गाँजा लटेलौं।
जमेदार आबि डंडा-बेरी ठोकि देल।
हमरा सन..?
घामे-पसिने खेती केलौं
तुलसी-फूल ओ कनकजीर।
खोहे तरसँ सरूप सिंह
डेढ़ियामे तोल लेल
हमरा सन..?
और-तँ-और कवि-कोकिल महाकवि विद्यापतिकेँ
बहुत पहिनहियेँ छीनि लेल
हमरा सन..?”

गाबि अपन वृतान्त सुनौलैन। पच्छमी मधुबनीबला साथी काफी प्रभावित भेला। अपना लग बजा अपनो जिनगीक बात आ बिदेसरो ठाकुरक बात सुनौलकैन/सुनलैन। भिनसरे जमेदारकेँ कहि डंडा-बेड़ी हटबैत ‘कवि’ घोषित कऽ देलकैन। जेलक स्टाफ सभ बिदेसरकेँ ‘कविजी’ कहए लगलैन। मुदा जहलक भीतरेमे, बाहर नहि।

मनचोभिया नाचक नीक कलाकारमे बिदेसर ठाकुर रहल छला। अपन एहेन गुण जे फिल्मियो गीत आ सामाजिको गीतमे दू-चारि-पाँति ओही तर्जपर गाबि लइ छला।

बिदेसर ठाकुरक मृत्यु दुखद भेलैन। आम तोड़ैकाल गाछपर सँ खसि पड़ला जइमे डाँड़क हड्डी थकुचा गेलैन। ओना, इलाज-बात जरूर भेलैन मुदा

कोनो कि गट्टा टुटब आकि घुट्ठी टुटब छी जे बड़बढ़ियाँ बड़ बेश। मुदा साल भरि ओछाइन धेला पछाइत उठि कऽ ठाढ़ भेला। चौकपर सैलून शुरू केलैन। जइसँ पनरह-बीसक नगदो आ जजमनिको काज सम्हारए लगला। सुति कऽ जगदीश प्रसाद मण्डल उठले रहैथ आकि सुनलैन, बिदेसर ठाकुर मरि गेला। साँझमे गप-सप्प भेले रहैन। तँए बिसवासे ने होनि, मुदा एहेन गप झूठो तँ नहियेँ होइत अछि। किए तँ गारियोक सीमा जीविते धरिक अछि, मृत्यु तँ सराप छी।

बिदेसर ठाकुरक घटना देख जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ सजल-धजल सामन्त आँखिक परदापर नाचए लगै छैन।

किछु परिवार (जाति-विशेष नहि सम्पदा विशेष) केँ छोड़ि अधिकांश परिवार अपन जिनगीक अनुसार काज-उदम करिते छैन, बिदेसर ठाकुरक पत्नी महींसिक पड़ै कीनि बहन्तू महींस बनौलैन। नीक पौस, एकटा बरद सेहो। थानाक दारोगा सिपाही-चौकीदारक संग, नथुनी सिंह अपन लठैतक संग आ विन्ध्यनाथ ठाकुर सेहो अपन दूत-भूतक संग बिदेसर ठाकुर ऐठाम पहुँचल। रस्ता कातमे घर, थहाथही लोक करए लगला। तीनू गोरे नथुनी सिंह, विन्ध्यनाथ ठाकुर आ दरोगा कनफुसकी कऽ महींस खोलि लेलकैन! खोलला पछाइत की हुअए। कोनो कि घुमा कऽ देब अछि आकि अपन बनाएब अछि। दरोगाजी की कहि लऽ जेता? केतबो ढील कानून छै तैयो तँ कोर्टकेँ कागत चाहबे करी। विन्ध्यनाथ ठाकुरकेँ दमे नै अँटलैन। दुत-भूत मुड़ी डोला देलकैन। लंठोक शक्तिमे जातिक विभाजन रहले अछि।

होइत-हबाइत महींस नथुनी सिंह अपना ऐठाम लऽ गेला। सभतूर बिदेसर ठाकुर गाममे घुमि-घुमि गौंआँकेँ कहलकैन। मुदा एक नोर कानैक सिबा दोसर उपाइए की अछि। जखन बिदेसर ठाकुर सबहक (करीब दस-बारह आदमी) बीच पहुँचला तखन जान दइले तैयार। लड़ाइयोक उत्साह होइ छै, जौं से नै तँ मनोरंजन लेल लोक किए जान गमबैए। किछु गोरे एहने, तँए एक रंगक विचार उठल। एक पंचायतक समस्या दोसर पंचायत पहुँच गेल तँए एक पंचायतक नहि दू पंचायतक समस्या बनि गेल। मुदा मूल तँ ओतए अछि जे एकटा महींसक खातिर मनुखक जिनगी जाए? महींसक तँ बोन लगा सकैए

मनुख, मुदा हजारो महींसिक बोन बुते एकटा मनुख ठाढ़ कएल हएत?

तत्-काल वातावरणमे नरमी आएल। मुदा जहिना हरदीक जड़िमे जहर सेहो फड़ैए, किएक तँ हरदी कहै छै हम बिखकट्टा छिऔ। तहिना किछु दिनक पछाइत बिदेसर ठाकुर सभकेँ बैसा बाजल-

“जेते लोक महींस खोललक ओइमे बेसी हमरे जजमान अछि, ओकरा सभकेँ केश-दाढ़ी काटब छोड़ि देबइ। हमर कमाइ जाएत मुदा ओकरा बत्तू बना टहलेबै। मुदा कमाइयो केना जाएत? कमेबे ने करबै तँ कमाइल कथीक लेबइ।”

प्रश्न उठैत अछि जदी कियो अपन समस्याक समाधान लेल ठाढ़ हुअए तँ की कएल जाए? सबहक बिच्चेमे बिदेसर ठाकुर संकल्प लऽ लेलैन जे केश नै काटबै। केश नै काटैक बात जेना अकासमे उड़िया गेल; बलजोरी करैक दम किनको नै अँटलैन।

इलाकाक स्थिति भिन्न-भिन्न तरहक, तँए भिन्न-भिन्न तरहक लड़ाइयो। जमीनक लड़ाइमे नागेन्द्रजी (डॉक्टर नागेन्द्र झा, पैटघाट) केँ थानामे टांगि सैयो लाठीसँ देह चुइर देने रहैन, जइसँ जिनगी भरि हाथ-पएर टेढ़े रहलैन। कामेसर राम (फुलपरास) पच्चीस-तीस गोरेक संग तीन सालसँ जहलमे रहैथ, जे सभ मर्डर केसमे फँसल। तहिना राम प्रसाद सहनी (पचही) केँ ट्रकमे उनटा बान्हि रोडपर घिसियौने रहैन।

बेरमा गाममे अखन धरि जे कोनो मोकदमा भेल छल ओकर कोनो जवाब मोकदमासँ नै देल गेल छेलै, जे महींसिक घटनासँ शुरू भेल। तीनू गोरेपर–दरोगा, नथुनी सिंह आ विन्ध्यनाथ ठाकुरपर–मोकदमा कएल गेल। ओना, दर्जनो केस भऽ चुकल छल। थानाक एक पक्षीय बेवहार देख सभ निर्णय कऽ लेलैन जे ने थाना केस करए जेता आ ने कोनो केसक सम्बन्धमे कहए जेता। जे हेतै से कोर्टेसँ हेतइ।

कोर्टमे केस भेल। महींसक बरामदगी हाइ कोर्टसँ भेल। वीरेन्द्रजी (माननीय न्यायमूर्ति, उच्च न्यायालय-पटना) काज केने रहथिन। बिदेसर ठाकुरक केशकट्टी झंझटक पंचैतीमे प्रमुखजीक पंच बौकू ठाकुर (नौए) भेला। बिदेसर ठाकुर अपन पंच अपने हेता, दसटा समाज सुननिहार हेतैन, प्रमुखोजी

अपन सुननिहार रखैथ, मुदा बजता दुनू पंचेटा, निर्णय भेल।

पनचैतीक अजीव आकर्षण, आकर्षणक कारण भेल जे केते-बेर बिदेसर ठाकुर असगरोमे पटका-पटकी कऽ लइ छला। तइमे बिदेसर बदनाम भऽ गेल छला। पनचैतीक दोसर आकर्षण छल बौकू ठाकुरक भाषा।

"जिनगीक पहिल दिन एहेन भाषासँ भेँट भेल।", जगदीश प्रसाद मण्डल मोन पाड़ै छैथ।

एक तँ आलंकारिक शैली, तैबीच एक पाँति प्रमुखजीक पक्ष आ बिदेसर ठाकुरक विपक्षमे बाजि जाथि तँ दोसर पाँति बिदेसरक पक्षमे प्रमुखजीक विपक्षमे बाजि जाइथ। सुननिहार सभ भाषेक (शब्द-जाल) जालमे ओझरा जाइथ। बिदेसरो ठाकुरक समाज आ प्रमुखोजीक समाज बौकू ठाकुरक भाषेमे ओझरा जाइथ। पनचैती की हएत जे घौंघौजे भऽ जाए।

पक्ष-विपक्षक बीच जाधैर समदर्शी बनि सोरहपर माने सोलहअनापर कील नै गड़त ताधैर ओकर सोर पताल दिस केना जाएत? जाधैर सोरसँ सिर बनि धरती-सँ-अकास दिस नै उठत ताधैर सोर पाबि-पाबि सोरहा केना हएत? केतेको बेर पर-पनचैती बैसल मुदा ने समझौता भेल आ ने झंझट फड़ियाएल। तैबीच एहेन भेल जे सभ दियाद बिदेसरो ठाकुर अपना समाज (नौआ समाज)मे बैस फेरसँ गिरहस्तक बँटबारा कऽ लेलैन। मुदा पनचैती पछुआएले रहल। ❑

बिनु डायरीक जिनगीमे...

बिनु डायरीक जिनगीमे तारीक-मड़कुमा घटना होइत अछि दिन-महिना नहि। तैबीच लौकहीमे जिला-सम्मेलन भेल। लौकही हाइ स्कूलपर सम्मेलनक आयोजन भेल रहै, लौकहा स्टेशनसँ सवारीक अभावमे किछु गोरे छोड़ि जगदीश प्रसाद मण्डल सभ पएरे गेल रहैथ। सवारी अभावक कारण सड़क रहैन। एकटा जीप, तइमे के सभ जेता। ऑफिसक कागजातक संग जिला कार्यालय।

तैसंग भोगेन्द्रजी चारि दिनक सम्मेलन भेलैन। नीक जुटान भेल छल। जिला भरिक संगी, जिला भरिक चालि-ढालिक संग जुटान।

सम्मेलनक दोसर दिन दुनू प्रतिनिधि–जगदीश प्रसाद मण्डल आ रामअवतार राउत–क संगे भोगेन्द्रजी सँ भेँट केलैन, ओ एकटा छोटे कोठरीमे असगरे सिमटीएपर बिछान बिछा चरिहत्थी गमछा ओढ़ने जगले पड़ल छला। दुनू गोरेकेँ पहुँचते उठि कऽ बैस पुछि देलखिन-

“की हाल-चाल गामघरक अछि?”

भोगेन्द्रजीमे जबरदस गुण रहैन जे कोनो बातकेँ जड़िसँ पकड़ै छला। कपिलेश्वर राउत ऐठामक सराधबला घटना भऽ चुकल छल, एक-हरफीमे रामअवतार सुना देलकैन। मुदा हालेमे अपनो ओही काजसँ गुजरल रहैथ, केस कटौले रहैन। कोन तरहेँ समाज छानि-बान्हि कऽ पार लगौलकैन, तइसँ गुजरले रहैथ। बिटिया-बिटिया सभ सबाल उठौलखिन। सविस्तार घटनाक चर्च रामअवतार कऽ देलखिन, भोगेन्द्रजी गुम भऽ गेला।

किछु समैयक पछाइत गुम्मी तोड़ि अपनो घटनाक चर्च केलैन। रामअवतार राउतजी नवका पुरहित भेले रहैथ, तँए भोगेन्द्रजी मानि जाथिन। पुनः दोहरबैत रामअवतार पुछलखिन- “कॉमरेड, हमरा ऐठामक केहेन भेल?”

भोगेन्द्रजी जवाब देलखिन-

“जहिना सोझे नाक छुअब होइए आ घुमा कऽ छुअब सेहो होइए, तहिना सुदिखोरी, महाजनी सोझे छुअब भेल बाँकी जे भेल से घुमा कऽ छुअब भेल। तँए एकरा सामाजिक-आर्थिक रूपमे देखियौ। समाजक भीतर आर्थिक ढाँचा एहेन ठाढ़ अछि जेकर समीकरण जरूरी भऽ गेल अछि। मुदा से के करत?”

कहि चुप भऽ गेला। तही बीच पूर्व विधायक लाल बिहारी आबि गेला। सम्मेलनक काज बुझि ई दुनू गोरे बहरा गेलखिन।

जगदीश प्रसाद मण्डलजी मधेपुर जिला सम्मेलनक पछाइत जिला नेतृत्वमे एला आ क्षेत्रमे समय देब शुरू केलैन। गामे-गाम ओझराएल, अपन-अपन मुद्दा अपन-अपन लड़ाइ। केतौ माछक कारोबार तँ केतौ मुँहपुरुखीक। जमीनक छुतियो ने केतौ, तहिना महाजनियोँक। जिला सम्मेलनक कार्यक्रममे जे मुद्दा छै तइसँ भिन्न लड़ाइ छइ। लक्ष्मीकान्त-रमाकान्त साहुक जमीनपर बटाइदारी शुरू भेल। अपनो बुझै छैथ आ बेरमाक लोक सेहो बुझैत अछि जे अपने खेती करै छला आकि बटेदार छला। बटाइदारी शुरू होइते एकटा मुर्दघट्टी परतीपर आठ-दसटा सरधुआ पोखैरक घर जकाँ घर ठाढ़ कऽ, जखन जगदीश प्रसाद मण्डल सभ खेत दिस बढ़ला कि अपना-अपना घरमे आगि लगा, अट्ठाइस गोरेकेँ अगिलग्गी केसमे फँसा देलकैन। आठ-दसटा घर बनबैक कारण छेलै केसकेँ सीरियस बनाएब, मुद्दै-गबाह हएत। तैबीच एकटा घटना घटल। किसुन देव मण्डल चाहक दोकान करै छला। ओहो पार्टीक जुझारू कार्यकर्त्ता।

किसुन मण्डलक चाहक दोकान जगदीश प्रसाद मण्डल सबहक बैसारक अड्डा सेहो छेलैन। जगदीश प्रसाद मण्डल सभ चारि-पाँच गोरे रहैथ। पचाससँ ऊपर सदाए (मुसहर) सभ कोदारि-सहत लेने आबि चाहक दोकानक आगूमे यत्र-कुत्र बाजए लगला। ठाढ़ भऽ कऽ जगदीश प्रसाद मण्डल सभ जवाब दिअ लगलखिन। सदाय सबहक हाथमे हथियार, तैपर ताड़ी-दारू पीब दोसराक कहलमे।

तैबीच गाम दिस हल्ला भऽ गेलै जे किसुनदेव ऐठाम हसेरा-हसेरी भऽ

गेलइ।

हल्ला सुनिते-देरी जे जेत्तै रहए से तत्तैसँ लाठी लऽ कऽ दौगल। टोल आ दोकानक बिच्चेमे मारि फँसि गेल। जबरदस मारि भेल। केते गोरेकेँ कान-कपार फुटल। केस-फौदारी आ जहलक भय समाप्त भऽ गेल छेलइ। एकतीस दिनक भीतर अट्ठाइसो मुदालहक जमानत भऽ गेलैन। जमानतक पछाइत जमीनक दखल-दिहानी शुरू भेल। गड़बड़ भऽ गेल रहै जे, जे असल बटेदार रहै ओ केस नै केलक आ जे बटेदार नै रहै ओ केस केलक। स्पष्ट रूपमे गाम दू भागमे बँटा गेल रहए। ओना, ऊपरसँ दुइए पार्टी बुझि पड़ै मुदा चोरनुकबा–माने भीतरे-भीतर–तेसरो पार्टी बनि गेल रहए। तेसर ई रहै जे खुलि कऽ सोझहामे नै अबै मुदा दिन-राति कनफुसकी पाछू लागल रहए। पहुलके धक्कामे जमीन्दार बुझि गेल जे जमीन जेबे करत। बनियाँ रहबे करए, तरे-तर जमीन बेचब शुरू केलक। ओना, जमीनसँ सम्बन्धित किछु पुरनो कानून छेलै, किछु नवको बनल जेना हदबन्दी, आ किछु नहियोँ छेलइ। तीस-चालीस बरख पहिने बकास्तक लड़ाइ भऽ चुकल छल। ओना, बकास्तक लड़ाइ असानीसँ सम्पन्न भेल रहए। लोकोक बीच अधिकारक महत छल। किछु गोरे बेकतीगत रूपमे केस लड़ि बिनु अधिकारक सेहो जमीन दखल कऽ लेने छला। जमीनक बीच कानूनी ओझरी नीक जकाँ तँ नहि, मुदा लागि जरूर गेल छल।

1935 ई.सँ पूर्व जे अंगरेज विरोधी आजादीक दिशा छल ओइमे धक्का लागल। वामपंथी विचार अपन पहचान बना नेने छल। 1925 ई.मे कम्युनिस्ट पार्टी सेहो बनि गेल छल। सुभाष बाबू सेहो अपन दृष्टिकोण रखलैन।

जमीनक ओझरी ई भेल जे बटाइदारी कानून पैछला सर्वेमे सिकमी बटाइ करि कऽ खतियान बनि चुकल छल। भूदानी आन्दोलन सेहो उठिये चुकल छेलइ। बटाइदारीक संग हदबन्दी (अर्थात् बीस बीघासँ ऊपरबलाक जमीन लऽ लेल जेतइ।) कानून सेहो बनि चुकल छल। तहूमे पच्छिमी मधुबनी जिलामे बटाइदारी लड़ाइ धुरझार चलैत रहइ। ओना, सिरिफ जमीनदारे नहि, बेसियो जमीनबला आ ओकर जे लगुआ-भगुआ सहित किछु राजनीतिक दल सेहो जाति-सम्प्रदायक नामपर राजनीतिक पार्टी ठाढ़ कऽ नेने छल। एक तँ गरीबक

बीच सामन्ती संस्कार धकेल कऽ निच्चाँ खसौने रहै, दोसर कम्युनिस्ट पार्टीकेँ समाजक भीतर जाति-धर्म विरोधी कहि घृणाक पात्र बनौने रहै, जइसँ किनको दरबज्जापर पहुँचलापर विचित्र स्थति पैदा होइ छल। मधुबनी-दरभंगा जिलाक सौभाग्य रहल जे, जे जाति समाजक नियामक रहला ओही जातिक नेतृत्वमे कम्युनिस्ट पार्टी बनल रहए, कम्युनिस्ट पार्टीक भीतर ब्राह्मण नेतृत्व अधिक छल। ओना, सभ जातिक बीच कम्युनिस्ट पार्टीक पहुँच रहल। खास कए कऽ खजौली आरक्षित भेने अनिवार्यो भऽ गेल रहए।

1955 इस्वीक पूर्व बिहारक राजनीतिमे जातिक प्रभाव नगण्य छल मुदा जोर पकड़ए लगल। जइसँ वर्गीय स्वरूप नै पनैप जातीय स्वरूप पनैप गेल। जाति-जातिक विभाजन भऽ गेल। मुदा आजादीक फल एते तँ भइये गेल छल जे सभकेँ भोँटक अधिकार भेट गेल छेलइ।

सरकारक बीच कुर्सी पटका-पटकी 1962 ई.सँ शुरू भऽ गेल छल। एम.एल.ए, एम.पी.क बदला-बदली हुअ लगल। आमजन ठकाइत रहला। ठकाइत-ठकाइत एते ठका गेला जे गामक बीस बीघा जमीनबलाकेँ बेटी बिआहमे जमीन बेचए पड़ए लगलैन! क्षेत्रक विकास मात्र रूकबे ने कएल अपितु पाछू मुहेँ ससरए लगल। ‘पच्छिमी कोसी नहर’, ‘मैथिली भाषा’ आ ‘जमीनक सबाल’ कम्युनिस्ट पार्टीक मुख्य मुद्दा सभ दिन रहल।

एक दिस कोसी नहर हुअए तेकर आन्दोलन, तँ दोसर दिस नै हुअए तेकर आन्दोलन!

भूदानी आन्दोलन अपन स्वरूप बिगाड़ि पाइक अड्डा बनि गेल, जइसँ मामला आरो ओझरा गेल। ओझरा ई गेल जे एक्के जमीनक पर्चा तीन-तीन गोरेकेँ भेटल। जइसँ जमीनबलाक झगड़ा जमीन लेनिहारोक बीच फँसि गेल। प्रशासनिक स्थिति ओहने छल जे एकछाहा बुझि पड़ैत।

बेरमाक जे कम्युनिस्ट विरोधी रहैथ, नमहर साँस छोड़लैन। जहिना अड़ना पाड़ा मुइने नढ़िया सभ साँझूपहरमे ढोल बजा-बजा नचैत तहिना साँस छोड़ि कम्युनिस्ट विरोधी सभ नाचए लगला। लूटा-लूटी जोर पकड़लक। गाममे

खेतक जजातक (तरकारी, अन्न, फल) चोरि बढ़ल। ओना, तइसँ पूर्व चोरिसँ गाम एते आक्रान्त रहै छल जे जबरदस समस्या रहै, मुदा संक्षेपमे, एक गोरेकेँ गाछमे टाँगि आ दोसर गोरेकेँ सामूहिक मारि जखन पड़ल तहिए-सँ चोरिमे कमी आएल। ओना, चोरिक रंग-रूप बदलने चोरक कमी नै भेल मुदा रंग-रूप बदलने लोक ठकेबे करत। चाहे पितरिया सोना होइ आकि एकक तीन। जमीनक लड़ाइ उठने जे जेत्तै रहए से तेत्तैसँ बंशी पाथि देलक। झंझारपुरक लक्ष्मीकान्त रामाकन्त दुनू भाँइ छैथ। एक भाँइक हिस्सा कृष्ण चन्द्र झा (कैलू मास्टर) लेलैन दोसर हिस्सा बैजनाथ मण्डल लेलैन। कम्युनिस्ट पार्टी महादेव मण्डलसँ बटाइदारी केस करबौने छल। जगदीश प्रसाद मण्डल सभ अट्ठाइसो मुदालहक संग अट्ठाइसटा गबाह लऽ कऽ जमानत करबए एक दिन पहिने गेला। कियो-कियो साइकिलसँ जाइ छल, सेहो रखि देलक जे जौं भीतर जाए पड़त तँ साइकिल जपाल भऽ जाएत। जौं थाना गेल तँ पेशेवर म नुखक गति हेबे करतै। पहिले दिन, गामसँ निकलला पछाइत बैजनाथ मण्डल हल्ला उठौलैन, एकटा लिफाफ नेने चिट्ठी गाममे, देखौलक जे कैलू मास्टरक बेटा हमरा माए-बहिनकेँ गारि लिख कऽ पठा देलक हेन। ओना, अखनो धरि ओ चिट्ठी देखैक मौका जगदीश प्रसाद मण्डलजीकेँ नै भेटलैन। ओना, दुनू गोरेक भीतरिया इच्छा रहैन जे सोल्होअना हमरे हुअए। एक गोरे जबुरिया करबैक फिराकमे दोसर गोरे बलजोरी कब्जा करैक फेरमे।

महादेव मण्डलक बटाइकेँ जगदीश प्रसाद मण्डल सभ रोकि देलैन। रोकैक कारण बैजनाथ मण्डलक जेठ भाय महादेव मण्डल। ओही परिवारक लेल ने जे कीनियेँ लेलक।

अगिलग्गी केसक जमानत करा गाम पहुँचते किछु गोरे बाजला जे 'कैलू मास्टरक बेटाकेँ बैजनाथ मण्डल मारबो केलक आ पकैड़ कऽ दरबज्जापर रखनौं अछि।'

किछुए-कालक पछाइत कैलू मास्टर साहैबक बहिन जे जीविते छैथ, डाँड़क ऑपरेशन भेल छैन, तइसँ जौं ब्रेन प्रभा वित भऽ गेल होनि तेकर तँ नहि, मुदा जौं नीक छैन तँ मुखौतरी भऽ जाए, आबि कऽ जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ

कहलकैन जे 'बैजनाथ हमरा भातिजकेँ मारबो केलक आ पकैड़ कऽ रखने अछि, से कहक छोड़ि दइले।'

जगदीश प्रसाद मण्डलजी गेला, कहलकैन, ओ छोड़ि देलखिन।

ओ घटना 307 क रूपमे उठल। कैलू मास्टर, तीनू भाँइ महादेव मण्डलकेँ जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ, रामअवतार राउतकेँ आ सत नारायण राउतकेँ मुदालह कऽ देलकैन, ओइ केसमे सजा सभकेँ भेलैन जे हाइकोटसँ फड़ियाएल। वीरेन्द्रेजी (न्यायमूर्ति, पटना हाइ कोर्ट।) काज केने रहैथ।

कैलू मास्टर साहैबक घटनाक प्रभाव सभसँ बेसी दुर्गा स्थानपर पड़ल। शुरूक बैचमे कैलूओ मास्टर साहैब, रामअवतारो राउत आ जगदीश प्रसाद मण्डलो संगे-संगे चन्दा करए जाथि; दुर्गा स्थानक बेवस्था करैथ। भलेँ ओ अपना भगवतीकेँ कहथिन जे 'दुश्मनकेँ सांगि करिहह आ जगदीश प्रसाद मण्डल सेहो अपना भगवतीकेँ वएह बात कहैथ। पनरह बर्खक पछाइत ओहो (कैलू मास्टर) आ जगदीश प्रसाद मण्डल आ रामअवतार राउत ऐगला पीढ़ीकेँ सुमझा देलखिन।

लक्ष्मीकान्तबला जमीन चौथाइ-सँ-अधिया दाममे निकैल गेल। ओना, किछु इम्हरो-आम्हरो भेल, कहबी छै, 'लूटमे चरखा नफा।' एक गोरे रजिष्ट्री ऑफिसमे मुंशीयागरी करै छला, हदबन्दीक नकल लऽ नेने रहैथ। बिक्रीक सूनि-गूनि पबिते विरोध कऽ दैथ आ तरेतर झाड़ि लैथ। गामक जमीन गौंआँक हाथ आएल। केस-मोकदमा सोलह करि कऽ समाप्त भेल।

लक्ष्मीकान्त साहुक जमीनक लड़ाइक पश्चात बेरमामे आन्दोलनक रूपमे ने एकोटा जमीन्दार रहला आ ने लड़ाइ उठल। आन-आन जमीन्दार जमीन बेच कऽ पहिनहियेँ चलि गेल छला, खाली लक्ष्मीएकान्त-रमाकान्त बँचल रहि गेल छला। सेहो भइये गेल। ❑

भूदानी आन्दोलन...

बेरमामे भूदानी आन्दोलन तेनाहे जकाँ भेल। कारण जे जइ समय भूदानक जमीन देल गेल ओइ समय बेरमामे तेहेन जमीनबला नहियेँ छला। एकटा परिवार गठरी झाक रहैन। गठरी झाकेँ पण्डिताइमे लाखे राज-ब्रह्मोत्तर करि कऽ जमीन भेटल रहैन मुदा ओ जमीन बेरमा गाममे नहि, गामसँ बाहर छेलैन। मालिक-मलिकानक गाम बेरमा, जइसँ भूदानमे कम जमीन देल गेल। तहूमे बँटबारा होइसँ पहिनहि ओ सभ जमीन बेच-बिकीन नेने छला। तैसंग ईहो भेल जे तेहेन-तेहेन कार्यकर्त्ताकेँ जमीनक सबूत आ बँटैक भार देल गेलैन जे ओ सभ आरो डुमा देलैन। एक-एक जमीनक सबूत तीन-तीन गोरेकेँ जिला कार्यालयमे भेट गेल। एक तँ ओहिना कमजोर आदमीकेँ उठबैक आन्दोलन छल, मुदा सबूतक ओझरी तेहेन ओझरी लगा देलक जे कोनो लाभ किनको नइ भेलैन। जौं थोड़-थाड़ किछु भेबे केलैन तँ ओइसँ समस्याक समाधान थोड़े भऽ पबैत, भूदानी आन्दोलनसँ बेरमामे तँ तेहेन लाभ नहियेँ भेल मुदा बसैबला घराड़ीक जमीनक समस्या जरूर हल भऽ गेल। तेकर कारण भेल जे एक दिस आम जमीन, दोसर लक्ष्मीकान्तबला, तेसर एक गोरे (गंगाराम/भोला राम मण्डल) गंज परहक छला हुनको जमीन छिना गेलैन। तैसंग अपनो छेलैन आ किछु गोरे कीनबो केलैन।

लक्ष्मीकान्त, रमाकान्तक लड़ाइक बिच्चेमे एकटा दोसर झंझट ठाढ़ भऽ गेल। छोट-छीन मुद्दा नमहर बनि गेल। ओ एना भेल- सतदेव झा नामक एक गोरे बेरमामे। शुरूमे माने जुआनी अवस्थामे ओ अपराधिक प्रवृत्तिक छला, जे चालीस बर्खसँ ऊपरक भेला तखन गाम छोड़ि कलकत्ता गेला। शुरूमे मोटिया सभ संग मटियागिरी केलैन। किछु सालक पछाइत बैट्री (अमेरिकन कम्पनी, एवरेडी) फैक्टरीक चिमनीक काज भेलैन। विदेशी कम्पनी रहने नीक दरमाहा भेटलैन। वएह जखन रिटायर कऽ गाम एला तँ कम्युनिस्ट पार्टीक संग उलैझ

नमहर विवाद ठाढ़ कऽ देलैन। भेल ई जे सतदेव झाकेँ बेटा नै भेलैन। सिरिफ एकटा बेटीए टा भेल छेलैन। गरीबीक चलैत बेटीक बिआह अधिक उम्रक लड़काक संग केलैन। दू सन्तानक पछाइत जमाए मरि गेलखिन। अपनो परिवार छोटे रहैन। दुनू नातियो आ बेटियोकेँ अपना ऐठाम–माने बेरमा गाम–लऽ अनलैन। अपनो सेवा निवृत्त भेला पछाइत दुनू परानी कलकत्ता-सँ-गाम आबि गेला। गाम आबि पाँच बीघा खेत कीनलैन। एकटा बोरिंग गड़ौलैन, एकटा दमकल लेलैन। बेवस्था ऐ ढंगसँ शुरू केलैन जे जौं समुचित ढंगसँ चलौल जाइत तँ नीक किसान परिवार ठाढ़ होइत मुदा से नै भेलैन। खेतक बेवस्थाक संग जोड़ा बरद लेलैन, घर बनौलैन। बहुत नीक तँ नहि, मुदा मजगूत घर जरूर बनौलैन।

गौंआँक मतभेदक एकटा कारण ईहो भेल जे अपन घराड़ी छोड़ि दोसर घराड़ी कीनि दोसर ठाम घर बनौलैन। जे जमीन कीनि घर बनौलैन ओ जमीन बिका गेल छल। दोसर गोरे कीनने रहैथ मुदा रजिष्ट्री नै भेल रहइ।

सतदेव झाकेँ रजिष्ट्री भेलैन, जमीन कब्जा भेलैन जैपर घर बनौलैन। मुदा समाजक मनमे आबिए गेल जे ई अनुचित भेल।

पहिलुका कीननिहार पाछू हटि गेला। कलकत्ता सन शहरमे जिनगी बितौनिहार सतदेव झा खेती नै कऽ पाबि सकला। दुनू नातियो बचहने रहैन। पैछला (कलकत्ताक) कमाइ सठि गेलैन। मुदा खाइ-पीबैक चसकीक संग जीवन-शैली सेहो खर्चीला बनियेँ गेल रहैन। खेत बेचब शुरू केलैन। जेठका नातिक बिआह सेहो करा लेलैन। अदहा-सँ-बेसी खेत जखन बिका गेलैन तखन बेटियो आ दुनू नातियो झगड़ा करब शुरू केलकैन।

सतदेव झाकेँ बेटियो आ नातियोसँ झगड़ा ऐ लेल शुरू भेलैन जे जखन अपना ऐठाम (बेटीक सासुर आ नातिक गाम) सँ चलि एलौं आ एतुको सभटा जमीन बेचनहि जाइ छैथ, तखन हमरा सभकेँ की हएत? अपने दुनू परानी बुढ़ छैथ, दू-चारि सालमे मरि जेता मुदा हम सभ केतए जाएब?

उचित विचार रहितो पारिवारिक छल तँए दोसर हाथ नै बढ़बए चाहैत। मुदा बेटी-नातिक झगड़ासँ सतदेव झाकेँ दूरी बन लैन आ विरोधी (कम्युनिस्ट

विरोधी) सँ नजदीकी बनलैन। नाति (प्रमोद झा) सासुर गेल। सासुर रहिका ब्लौकक भोज-परोर गाम। ओइ इलाकामे जमीनक लड़ाइ धुरझार चलि रहल छल।

सासुर पहुँच प्रमोद झा अपन ससुरकेँ सभ बात कहलखिन। संगे लागल ससुर बेरमा एलैन। प्रमोद झाक ससुर गाँजा पीबै छेलैथ, अखनो छथिए। बेरमा आबि तीनि-चारि दिन रहला। गजेरीक पार्टी बना लेलैन। तइमे किछु कम्युनिस्टो पार्टीक लोक हुनक मेरिया भेला। खूब नीक जकाँ खा-पीब भोजनो बनौलैन जे आइ सतदेव झा जेतए भेटता तेत्तै पकैड़ कऽ औंठा निशान लऽ लेब।

ई गप जगदीश प्रसाद मण्डल सबहक जानकारीमे नै रहैन। पान-सात गोरेक बीचक योजना रहै, सएह भेल। बाधमे पकैड़ पाँचो गोरे पटैक कऽ स्टाम्पपर निशान लऽ लेलकैन।

विरोधी (कम्युनिस्ट विराधी) केँ मौका हाथ लगलैन। अपन-अपन चालि सभ चालि देलकैन। जगदीश प्रसाद मण्डल सभकेँ मुदालह बना केस कऽ देलकैन। थानासँ कहियो लाट-घाट नै रहलैन, थाना खुलि कऽ विरोधीक संग छल। जखने केस होइ छेलै तखने कोर्टमे हाजिर भऽ जमानत करा लइ छला। सिरिफ (307 दफा) एकटा केसमे एहेन भेल जे जाबे एकटा मुदालह हाजिरा करा जमानत कराबैथ-कराबैथ तैबीच जप्ती-कुर्कीक आदेश करा थाना आबि जब्ती-कुर्की कऽ लेलकैन। घरक केबाड़ खोलि लेलकैन, दमकल सीज कऽ लेलकैन।

पार्टी आन्दोलनसँ हटि मामला दोसर दिस मोड़ा गेला।

सतदेव झाक एगारह कट्ठा जमीन जगदरक भीड़मे। नथुनी सिंहक विचारसँ ओ जमीन एकटा जगदरेबला हाथसँ बिक्री भऽ गेल छल। खेतमे धान रहै, धान काटैक झंझट उठल। बेरमा-जगदरक भीड़ानी भेल। ओही दिन नथुनी सिंह अपन दल-बलक संग पाछू हटला। मुदा भीतरे-भीतर गरमाहैट बढ़ल।

ओना, जगदरक संग दूरीक आनो कारण छल , ओ कारण छल पाँचिम दशकमे जगदरक एक गोरे बेरमा एला। संगमे पाछू-पाछू कुत्तो रहैन। कुत्ता-कुत्तामे पटका-पटकी भऽ गेल। यत्र-कुत्र गारि कुत्ताबलाकेँ पढ़लक। बाता-बाती

बढ़ि गेल...।

ओइ समय गरीबीक चलैत बेरमाक बोनिहार जगदरमे काजो करै छला आ रीनो-पैंच करै छला। बाता-बाती होइते जगदरक हँसेरी बेरमा पहुँच गेल। निआरल लड़ाइक योजना होइ छै मुदा बिनु निआरल लड़ाइ तँ नारेपर लदाइए। बेरमा-जगदरक नारा उठल, जगदरक सभ लोक मारि खा गाम गेला। मुदा प्रश्न तँ मालिक-बोनिहारक उठल। जेकरा ऐठाम रूपैओ आ धानो कर्जाक अछि ओ सोहाइ लाठी कपारपर मारलक, केना बरदास कियो करत। खूब जमगर आगि उठए लगल मुदा ठंढाएल। तैबीच एकटा आरो घटना भेल। घटना भेल जे चनौरा-महंथकेँ दरभंगा-महंथानासँ लड़ाइ उठल।

चनौरा महंथक दहिन गबैया जगदरक नथुनी सिंह। राय-विचार कऽ दरभंगामे मारि करैक योजना बनौलैन। गेबो केलाह। कानूनक दायरामे झंझट रहबे करै; महंथक संग नथुनी सिंह आ नथुनी सिंहक संग जेते जगदर-बेरमाक लंठ सभ छल ओ सभ कियो भरि पेट मारियो खेलक, जहलो गेल। मुदा से तेतबे नै भेल। भेल ईहो जे जहलोक भीतर ओहिना कुटनी भेलैन।

1978 ई.मे पंचायत चुनाव भेल। जगदीश प्रसाद मण्डलजीकेँ सीधा मुकाबला भेलैन। दुइए गोरे उम्मीदवार रहैथ। बहुमत-अल्पमतक परिचय गामक सभ बुझै छल। **एकटा कनीटा उदाहरण-**

जखन विरोधी नीक जकाँ ओझरा गेला, तैबीच भोगेन्द्रजीक मध्यस्थतामे पनचैतियो मानि लेल गेल। मुदा पंचेक बीच विवाद फँसि जाइ। अन्तमे ई भेल जे ने कम्युनिस्ट पार्टीक बहरबैया पंच औता आ ने प्रमुखजीक (विन्ध्यनाथ ठाकुरक) बहरबैया पंच औतैन। मुदा पनचैती तँ पछुआएले छल। जखन सभ छोड़ि देलैन तखन गामेक पंच बनैथ। जइमे एकटा शर्त्त लागल जे दुनू पक्षक बीच जे नइ सम्बन्धित किनको होथि ओ पंच हेता। तकतियान भेल तँ एको गोरे शेष नै बँचला। ओहने शेष बँचला जे भीम जकाँ अभिमन्युक संग रहथिन।

पंचायत चुनावसँ पूर्व 1977 ई.मे दिल्लियोमे आ पटनोमे सरकार बदलल। देशमे एक नव परिस्थिति पैदा लेलक। बेरमोक कम्युनिस्ट पार्टी अनेको लड़ाइ लड़ि चुकल छल। जइसँ गुण-अवगुण बुझि चुकल छल। तँए चौगुणा

उत्साह सभकेँ रहबे करइ।

टुटैत सामन्ती बेवस्थाक एकोटा घृणित काज पंचायत चुनावमे शेष नै रहल। एकटा उदाहरण- बहुमत अल्पमतमे नामो बदैल देल जाइ छल। जहिना केतौ राक्षसक अर्थ रक्षा केनिहार छल, सुरक अर्थ सुरापान करैबला। काज करैमे फल्लाँ राक्षसे छी। असगरे लहासकेँ पीठपर लादि असमसान लऽ गेल।

चुनाव घोषणाक विरोधमे मुखियो आ सरपंचोक मामला कोर्ट पहुँचल। सरपंचक मामला निचले कोर्टसँ फड़िया गेल। मुखिया चुनावक मामला हाइ-कोर्ट पहुँचल। चुनाव अवैध भेल। जहिना ठाकुरक बरियाती ठाकुरे-ठाकुर तहिना बिनु पंचायतीक मुखिया बिना सभ मुखीए-मुखिया।

मुखिया-सरपंचक काजो तहिना। मात्र गामक पनचैती। सरपंच भेने सेहो बदैल गेल। ओना, पार्टीक भीतर किछु दरारि बनि गेल। दरारि ई जे जिनका सरपंचक उम्मीदवार बनौल गेलैन हुनके खिलाफ दोसर नोमीनेशन कऽ देलैन। पार्टी अपन निर्णय आपस करैत चुनाव लड़ल।

गामक वातावरणमे गुमराहट रहए। नीक-नीक अपराधीक गाम बेरमा। एक ग्रुप छह-छह बरख जेल काटि चुकल छला। ओहो सभ जीविते छैथ। जे चुनाव (पंचायत चुनाव) मे बूथपर लाठी हाथे किछु गोरे बैसलो रहै छल आ किछु गामोमे घुमैत रहए। कसमकस रहने चुनाव शान्तिसँ भेल। मुदा गिनती काल एक गोरे (प्रमुखक गिनती एजेन्ट) दस-बारहटा मोहर देल बाइलेट हाँइ-हाँइ कऽ खा गेल। तही बीच पार्टीक एजेन्ट देखलक आकि हाँइ-हाँइ कऽ पान-सात थापर ओकरा मुँहमे लगा देलकैन। थापर लगिते मुहसँ उगललक।

छह बरख जहल कटलाहा एक गोरे एकटा खस्सीक चोरिमे पकड़ा गेल। खस्सी शिवलाल महतोक। चोर-मोट पकड़ाएल। मारि-पीट शुरू भऽ गेल। आदैत छोड़बै-जोकर मारि लगलैन। संग-संग ईहो भेल जे पकैड़ कऽ थाना पहुँचा देल गेल। तहिना दोसराक संग (दोसर अपराधीक) सेहो भेल। ओना, खुदरा-खुदरी फसाद होइते रहै छल, मुदा से सभ कमल।

पंचायतक विधि-विधानक जे किताब छल सेहो तेहने छल। लोक-सभामे भोगेन्द्रजीक प्रस्तावकेँ स्वीकृति भेटल। गाँधीजीक कल्पना आ मगध

जनतंत्र वैचारिके दुनियाँमे छल बेवहारिक जमीनपर नहि।

तही बीच (1977 ई.मे) एकटा मित्र जगदीश प्रसाद मण्डलजीकेँ भेटलैन। ओ रहैथ स्व. काली कान्त झा, आइ.पी.एस।

बेरमाक बगले पूबमे कछुबी गाम अछि। कालीबाबू कछुबीए-क। 1969 इस्वीक बैचक आइ.पी.एस छला। ओ गाम आएल रहैथ। झंझारपुर बजारक कोनो काज रहैन। बेरमा कछुबीक बीच बाधक अड़िपेरियासँ लऽ कऽ पक्की सड़क धरि केतेको रस्ता अछि। जगदीश प्रसाद मण्डलजीक घरसँ सीधा पूब हुनकर घर छैन।

कालीकान्त झा असगरे पएरे झंझारपुर जाइत रहैथ तँए सोझ-साझ रस्ता हिआ-हिआ बढ़ैत रहैथ। जखन बेरमा मुसहरी लग एला तँ रस्ता दू-दिशिया बुझि पड़लैन। दुनू घुमि कऽ आगू मिलैत अछि जैठाम सँ झंझारपुरक रस्ता सोझ भऽ जाइ छइ। मुसहरीक बगलेमे गामक डिहवारक स्थान अछि। स्थान रहने चारू दिससँ लोकक आवाजाही, तँए चारूकात रस्तो अछिए। ओइठाम कालीबाबू आबि जखन आगू हिऔलैन तँ सोझका रस्ता पच्छिम मुहेँ बुझि पड़लैन। डिहवार स्थान जगदीश प्रसाद मण्डलक घरक बगलेमे पुबारि भाग अछि। ओही रस्तासँ आगू बढ़ला। तँ हिनकर दरबज्जेपर चलि एला। ओना, चेहरासँ जगदीश प्रसाद मण्डलजी हुनका चिन्हैत रहथिन। मुदा एक स्कूलमे पढ़ैक कहियो अवसर नै भेटलैन। तेकर कारण छल, शुरूमे कालीकान्त झाजी गाममे किछु दिन पढ़ि नवानी विद्यालयमे नाओं लिखौलैन आ जगदीश प्रसाद मण्डलजी अपन गामक स्कूलसँ टपि कछुबीक प्राइमरीमे नाओं लिखेलैन। अखन तँ मिडिल स्कूल धरि मिलि गेल अछि मुदा ओइ समय मिडिल स्कूल अलग छल। सभ बेवस्था अलग छेलइ।

मध्यमा पास कऽ कालीकान्त झाकेँ जखन धुरझार संस्कृत पढ़ए-लिखए आबि गेलैन तखन हुनका पिताजीकेँ सन्तोष भऽ गेलैन। पछाइत तमुरिया हाइ स्कूलमे दसमामे नाओं लिखौलैन। ओइ समय बिनु सर्टियो-फिकेटक दसमा धरि एडमीशन होइ छेलइ। दसमा-एगरहमाक मिश्रित सिलेवस छल। साल भरिक पछाइत दसमाक परीक्षा होइ छेलै जे स्कूलेमे होइ छल। नहियेँ जकाँ विद्यार्थी

फेल करै छला। जेना आन-आन बहुत देशमे अखनो अछि। दसमा-एगरहमाक बीच एसेसमेन्ट प्रथा सेहो छल। दू साए नम्बरक एसेसमेन्ट होइत रहइ। जइसँ मैट्रिकक बोर्ड परीक्षामे अस्सीए-अस्सीए नम्बरक विषय होइ छल। एसेसमेन्टक नम्बर विद्यालयइये अर्थात स्कूलेसँ पठौल जाइ छेलै जे बोर्डक अर्थात् मैट्रिकक रिजल्टमे जोड़ि देल जाइ छल। मुदा एकटा बात बीचमे जरूर छेलै जे बाइस-बाइस नम्बर एलापर पास होइ छल। मुदा तहूक भीतर एकटा आरो बात छेलै जे समाज अध्ययन दसे नम्बरमे पास होइत रहइ। एकर माने ई नहि जे दस नम्बर असान भेल। अधिकांश विद्यार्थी बीस नम्बरक भीतरे रहै छला, गोटि-पँगरा आगू बढ़ै छला। आर्ट विषय (फेकेल्टी) लऽ कऽ नाओं लिखौलैन। मुदा साले भरिक पछाइत अर्थात् दसमाक परीक्षा स्कूले नै आनो-आन स्कूलमे चर्चाक पात्र कालीबाबू बनि गेला। कारण भेल जे अखन धरि हाइ स्कूलमे अठमासँ लऽ कऽ बोर्ड धरिक परीक्षामे साइंसक विद्याथीक रिजल्ट अगुआएल रहै छल। दसमामे फस्ट अर्थात् पहिल स्थान भेलैन।

आर्ट विषयमे एकटा धक्का लागल। धक्का ई लागल जे अखन धरिक परीक्षामे नम्बर दइक जे बेवहार छल ओ दोसर रंगक। घुसुकुनियाँ कटैत आर्टक नम्बर घुसुकै छल, जखन कि साइंसक विषयमे साए-मे-साए छल। कनीटा उदारहण- जखन हाइ स्कूलक सम्बन्धमे चर्च भेल तखन ओ कहलैन-

"खा कऽ स्कूल विदा होइकाल हाथक तरहत्थीपर पाँचटा अंगरेजी शब्द वा एकटा प्रश्नक उत्तर लिखि लइ छेलौं आ स्कूल पहुँचैत-पहुँचैत रटि लइ छेलौं। जाइयोकाल आ अबैयोकाल अहिना करै छेलौं। स्कूल पहुँचते पहिने कलपर जा बढ़ियाँ जकाँ हाथ धोइ लइ छेलौं , तखन बैसै छेलौं। ओना, शिक्षा पद्धतिमे सेहो किछु अन्तर अछि। रटैक चलैन सभ रंगक अछि।"

प्रथम श्रेणीसँ कालीकान्त झा मैट्रीक पास केलैन। मुदा घरक स्थिति ओते नीक नहि तँ खराबो नहियेँ। कारण जे ओ महापात्र परिवारक छला। से जमीनदारीए जकाँ पसरल अछि। तहूमे महापात्रक कम जन-संख्या रहने अखनो धरि अबादे छैन। ओइ समयमे सी.एम कौलेज बहुत नीक कौलेज बुझल जाइ छल। नीक विद्यार्थीक एडमिशनो होइ छल।

1959 ई.मे चारिटा कौलेज खुजल जइमे जनता कौलेज झंझारपुरो आ सरिसो कौलेज सेहो खुजल। मैट्रीक केलाक पछाइत सी.एम. कौलेज नै जा। ओना, आर.के. कौलेज सेहो नीक छल, मुदा दुनूक बेवहारिक पद्धतिमे किछु अन्तर छेलइ। जैठाम आर.के. कौलेजमे सबहक गुनजाइश छल तैठाम सी.एम. कौलेजमे नै छल। दोसरो कारण छल सी.एम. कौलेज सरकारी बनि चुकल छेलइ। छात्र प्रवेशक सीमा निर्धारित रहइ। सी.एम. कौलेजक इच्छा रहितो कालीबाबू सरिसो कौलेजमे नाओं लिखौलैन। कारण भेलैन जे एकठाम दूटा विद्यार्थी पढ़बैक बदलामे रहै-खाइक जोगार लगि गेलैन। परिवारक आमदनी ओते खराब नहि, जइसँ सी.एम.कौलेज नै जा सकै छला मुदा सहयोगक अभाव रहलैन। लिटरेचर इंग्लीशक संग प्रथम श्रेणीमे आइ.ए. पास केलैन। दरभंगामे रहैक गर लागि गेलैन। अंगरेजी आनर्सक संग सी.एम. कौलेजमे नाओं लिखौलैन। आनर्स ग्रेजुएट भऽ निकलला।

जगदीश प्रसाद मण्डलजी जइ समयमे जनता कौलेजमे पढ़ैत रहैथ तइ समय आनर्सक पढ़ाइ नै होइत रहइ। खाली मैथिलीमे तीनटा शिक्षक रहैथ, जइसँ मैथिलीमे होइत रहए।

जगदीश प्रसाद मण्डल हिन्दी, राजनीति शास्त्रक विद्यार्थी रहैथ। प्राइवेटे सँ हिन्दी आनर्सक तैयारी केलैन। ओना, दू गोरे अर्थात् दूटा शिक्षक कौलेजमे रहैथ मुदा पढ़ाइ नै होइत रहए। बी.ए.क फार्म धरि जनते कौलेजसँ भरलैन, परीक्षा सी.एम. कौलेजमे भेलैन।

कालीकान्त झा डिहवार स्थानक पछबरिया रस्ता पकड़ने जगदीश प्रसाद मण्डलक दरबज्जापर आबि गेला। आइ.पी.एस. अफसरकेँ दरबज्जापर आएब अपनाकेँ सौभाग्यशाली बुझलैन। पकैड़ कऽ दरबज्जापर बैसौलैन। पुछलखिन तँ कहलकैन जे 'झंझारपुर जाइ छी, काज अछि।' कहलखिन जे 'अहाँ असगरे छी, तहूमे पएरे छी दिक्कत हएत।' कहलकैन- 'कोनो दिक्कत नै हएत।' फेर कहलखिन- 'हमहूँ संग भऽ जाइ छी। किछु गप-सप्प करैक मौका सेहो भेटत?' मुदा ओ पुलिस नजैरबला। कहलकैन- 'साइकिल दिअ घुमैकाल देने जाएब।'

कालीबाबू साइकिलसँ झंझारपुर गेला।

जिनगीक पहिल भेँट दुनू गोरेक बीच अहिना भेल छेलैन। ओइ दिन ई अन्दाजमे नै आएल छेलैन जे सम्बन्ध एते गाढ़ आ जिनगी भरि निमहतैन। अन्दाजमे नै अबैक कारण छेलैन जे केतेको पुरान हित-अपेछित टुटि गेल छेलैन। ओना, नवका बढ़बो केलैन।

एकटा उदाहरण- एकटा गामेक संगी छेलखिन, कौलेजमे संगे पढ़ने रहैथ। मुदा हुनका जातिक सीमा घेरने छेलैन। स्टेट बैंकमे हुनका नोकरी भेलैन। नीक दरमाहा। अनधुन आमदनी। विचार एते बदैल गेलैन जे गाम एलापर भेँट-घाँट नै होइ छेलैन। कुसंयोग एहेन भेलैन जे दसे-बारह बर्खक पछाइत स्कूटर एक्सीडेंटमे ओ जखमी भेला आ गाम आबि किछु दिनक पछाइत मरि गेला। जगदीश प्रसाद मण्डलजीकेँ अखनो दुख होइ छैन जे मुइला पछाइत देखए (जिज्ञासा) नै गेलखिन। मुदा जिनगीक अनुभवसँ विचार एहेन बनि गेल छेलैन, जे दोस्त-दुश्मनक बीचक दूरीक फलाफल की होइ छै से बुझि गेल छला।

कनीटा उदाहरण- एक गोरे जगदीश प्रसाद मण्डलजीक खूब नजदीकी रहथिन। हुनका ऐठाम बिआह रहैन। दिन-राति रहला। मुदा हुनका (जिनकर काज रहैन) दोस्त-दुश्मन बुझैक लूरि नै रहैन। सभ रंगक लोक काजमे लागल छल। एक गोरे जिनका बदनाम करैक विचार मनमे रहैन, चाहे जे पैछला कोनो कारण हउ, दालिमे दोहरा कऽ नून दऽ देलखिन। पछाइत जखन दालि नुनगर भऽ गेलै तखन जगदीश प्रसाद मण्डलक नाओं लगा देलखिन।

अहिना दोसरठाम भेल। बिनु अदहन देनहि बरतनमे सुखले दालि दऽ हिनकर नाओं लगा देलकैन। तहिना, एकबेर भेल जे गामक दुर्गापूजामे ई कार्यकर्ता छला, नाचक भार भेटलैन जे नीक नाच हुअए। तइ समय गाम-घरमे नाटक-नौटंकी कम छल आ नाच बेसी अनेको तरहक छल। एक गोरे नाच आनैक भार लऽ लेलैन। बढ़ियाँ नाचक खूब प्रचार भेल। जखन नाच आएल तँ जेहने नीकक प्रचार भेल रहए तेहने हहासो भेल।

जखने कियो परिवारसँ निकैल समाजमे डेग उठबैए तँ ओ ई मानि चलैए जे नमहर काजमे बेसियो आ भारियो, दुनू होइ छइ। अपना भरि लोक परियासे करैए, मुदा किछु त्रुटि रहि जाइ छै, तखन कि कएल जाएत? हँ! एते जरूर जे

अधिक-सँ-अधिक काजक सभ पहलूपर नजैर राखक चाही। अहिना कोनो घटनोक होइ छइ। कियो बीमार छैथ वा कोनो दोसरे कारण छैन, रंग-बिरंगक सुझाव लोक दैत अछि। जे नीको रहै छै अधलो रहै छै, तैठाम एहने समस्या उठबाक सम्भावना बनियेँ जाइत अछि।

स्वर्गीय कालीबाबूक पहिल बहाली डी.एस.पी.क रूपमे अगरतला (त्रिपुरा)मे भेल रहैन। चारि साए रूपैआ महिना दरमाहा रहैन। समैयो सस्त रहइ। अन्त तक ई बात बजैत रहला जे सिगरेट आ दारू पीबै छेलौं। करीब पाँच बरख पीलौं। प रिवारमे मतभेद उभैर गेल रहैन। उभरैक कारण स्पष्ट छल। एक साधारण थाना-सिपाही दस बीघाक प्लॉट कीनि, तीनि मंजिला मकान बना, पाँच लाखक बेटियो बिआह कऽ लइए तैसंग समांगो सभकेँ नोकरी लगा लइए मुदा तैठाम ई (कालीबाबू) छुच्छे हाकिम छैथ। मुदा ओ परिवारकेँ बुनियादी ढंगसँ बदलए चाहै छला। अपन खनदानी वृत्तिकेँ अधला वृत्ति कहैत रहला। परिवार कर्जमे डुमल रहलैन। दियादीक झगड़ा कोर्टमे चलैत रहैन। ओइ विवादकेँ जेना-तेना कालीबाबू निपटौलैन। कर्जसँ परिवारकेँ मुक्त केलैन। पछाइत घर बनबैक विचार केलैन। भट्ठा लगा ईंटा बनौलैन। अपनासँ छोट भाए माझिल भाएकेँ अगरतलेक हाइ-स्कूलमे काज धरौलैन।

कालीबाबू सालमे एकबेर निश्चित रूपे गाम अबिते छला। मास दिन गाममे रहै छला। तैबीच तीन-चारि बेर भेँट जगदीश प्रसाद मण्डलजीसँ भऽ जाइ छेलैन। मुदा मात्र तीन-चारि भेँटमे साल भरिक किरिया-कलापक की हएत। हुनक अपन रूटिग छेलैन। काजो-उदेम ठेकना कऽ अबै छला। आठ दिन होइत-होइत काज निपटबै छला। पछाइत कुटुमारे (सासुर-मात्रिक-बहिन इत्यादि) करै छला। मास दिन पुरैत-पुरैत काजो निपैट जाइ छेलैन। आ छुट्टियो बीत जाइ छेलैन। काजक दौड़मे काजे गप-सप्प करैक मौको दइए। एकटा काजक भार जगदीश प्रसाद मण्डलजीक ऊपर रखै छला आ समांगो सभकेँ लगबै छला। सम्बन्ध बढ़लैन। एनाइ-गेनाइक संग खेनाइ-पीनाइ सेहो बढ़ि गेलैन।

हाइ स्कूलमे फस्ट करैमे भूगोलक योगदान बेसी छेलैन। एक दू नम्बर

कम होइ छेलैन। पूर्वांचलक त्रिपुरा, मणीपुर, मिजोरम, अरूणाचल, नागोलैंड इत्यादिक नीक अध्ययन छेलैन। ओना, धार्मिक प्रवृत्ति दिस बढ़ला। पूजा-पाठ दिस बढ़ि गेला। डी.एस.पी.-सँ-एस.पी. भेला पछाइत अपन बदली ट्रेंनिग कौलेजमे करा लेलैन। ता एस.पी. ओहीमे रहला।

तीन-चारि सालक पछाइत (अपेछा भेलापर) जगदीश प्रसाद मण्डलजीकेँ त्रिपुरा अबैले कहए लगला। मुदा जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ दोहरी ओझरी लागल रहैन। परिवारसँ लऽ कऽ मोकदमाक खर्च धरिक। ने कोट-कचहरी अबै-जाइसँ छुट्टी आ ने दोसर दिस जाइ-अबैक छुट्टी।

1998 ईस्वी अबैत-अबैत जगदीश प्रसाद मण्डलजीकेँ पूर्वांचल देखैक जिज्ञासा एते बढ़ि गेलैन जे अपनाकेँ ओ नै सम्हारि सकला। ओना, समैयक पलखैत भेट गेलैन आ से भेटलैन दुर्गापूजाक जिम्मासँ अलग भेलापर। दोसर कारण ईहो भेलैन जे पचासो सँ ऊपर मोकदमा तैबीच निपैट गेल छेलैन जइसँ कोट-कचहरीक आवाजाही सेहो कमि गेलैन। खाली दूटा सेशन केस (307 आ 436 अर्थात् मृत्युक प्रयास आ अगिलग्गी।) मात्र बँचि गेल छेलैन। तहूमे 436 (अगिलग्गी) केस हेराइये जकाँ गेल। हेरा ई गेलै जे झंझारपुर-मधुबनीक बीच जे कोर्टक बदला-बदली भेलै, ओही अदला-बदलीमे ई केस हेरा गेल। ओना, केते गोरे मुहेँ सुनने रहैथ जे कोटसँ केसक फाइलो गाइब होइ छइ। आ ईहो सुनने रहैथ जे केशो हेरा जाइ छइ। ओना, दुविधा रहबे करैन। जइसँ खुशियो होइन आ चिन्तो। दोसर 307 (एटेम्प टू मर्डर) रहैन ओइमे तँ सजा भऽ गेल रहैन मुदा खुशी ई रहैन जे जेते सजाए कानूनी दौड़मे हेबाक चाहैत रहए से नै भेल रहै, तँए मजगूतो डोरी भत्ता तोड़ि-तोड़ि टुटि जाइ छै, लाभ-हानि मोकदमासँ (307सँ) जे भेल होनि मुदा एकटा अनुभव जरूर भेलैन जे भ्रष्ट न्यायालयक कुरसी केना डोलैत रहै छइ। ओना, कोट-कचहरीसँ निसचिन्ती जकाँ जरूर एलैन। मुदा चिन्ता तँ रहबे करैन। हजार देवी-देवतासँ जहिना एक जगदम्बा तगतगैर, तहिना दुनू केस रहैन।

एक दिन जगदीश प्रसाद मण्डलजी जखन सभ केसकेँ मोन पाड़ि आइ.पी.सी.सँ मिलेलैन तँ बुझि पड़लैन जे जौं शुरूहे सँ सजाए होइत अबैत

रहितैन तँ भरिसक सभ दिन जहलेमे ऐगला केसक फैसला सुनितैथ। मुदा केहेनो फड़ल आमक गाछ किए ने हुअए मुदा पकलापर बा बिहाड़िमे हहैर कऽ खसलापर एक्की-दुक्की गिनतीमे चलि अबैए तहिना भेल रहैन। भीम जखन अभिमन्युकेँ सातम फाटक तोड़ैक भार लऽ लेलैन तेहने मनमे उठलैन। फेर ठमकल सभ केसक सजाए जोड़लैन तँ 107 बरख पुरैत रहैन। जिनगी दिस तकलैन तँ बुझि पड़लैन जे साए बर्खक काज तँ पुरिये गेलैन। जौं नै केने रहितैथ तँ दोखी केना भेला?

सौनक साँप जकाँ केचुआ छोड़ैक मौसम देख जगदीश प्रसाद मण्डल अपन जिनगी बदलैक विचार केलैन। मुदा पैछला जिनगी तँ ऐगला जिनगीक सोंगर बनि गेल छेलैन। साहित्य-दिशामे बढ़ैक विचार मनमे उठलैन। मुदा साहित्यक विद्यार्थी तँ रहि चुकल छला, सूर-पता तँ बुझि चुकल छला। टेबिया-टेबिया किछु साहित्यकारक साहित्य पढ़ए लगला, मुदा मन फेर ठमैक गेलैन। मन ठमैक गेलैन ई जे किताबक बात जौं आँखिक देखल हुअए ओ बेसी नीक होइए। किताब कीनैक खर्चक कटौती कऽ जगह-जगह घुमैक विचार केलैन। देशक केरल, कर्नाटक, कश्मीर छोड़ि सभ राज्य जा-जा कऽ घुमि-फिर देखलैन। मुदा जून 2012 ई.मे केरलक धरतीपर, कोच्चिमे जखन 'गामक जिनकी' लघुकथा संग्रह लेल 'टैगोर साहित्य पुरस्कार' प्राप्त भेलैन तँ केरल सेहो घुमि लेलैन। 1957 ई.मे केरलमे वामपंथी सरकार बनल छल। देशक ओ राज्य जैठाम शत-प्रतिशत पढ़ल-लिखल छैथ। खुशी भेलैन।

जगदीश प्रसाद मण्डल अखन धरि भूगोल एतबे बुझै छला जे देशक पूर्वी भाग असाम छी। आन-आन राज्य जे बनल ओ पछातियो बनल आ चर्चो संक्षेपे छल। हायर सेकेण्ड्री धरि भूगोल पढ़ने छला। पछाइत नहियेँ पढ़लैन। तहूमे किछु घटबीए भऽ गेलैन, घटबियो सोभाविके भेलैन। सोभाविक ई जे जहिना एम.ए. पास, हाइ स्कूलक शिक्षक बनि, हाइ स्कूल पास मिडिलो स्कूलक शिक्षक भेलापर बरदास कइए लइ छैथ तहिना जगदीश प्रसाद मण्डलो केलैन।

आसीन मास, दुर्गापूजाक समय। जगदीश प्रसाद मण्डलजी एटलस निकालि अजमाबए लगला। घरसँ बिराटनगर पहुँच जेता आ बिराट नगरसँ

सिलीगुड़ी। ओतौ रहैक ठौर छैन, ओतए-सँ असाम आ गौहाटीसँ त्रिपुरा जेता। मुदा दुनूमे बहुत अन्तर भेल। गौहाटीसँ अगरतलाक बस चारि बजे अपराह्न जे खुजल जे दोसर दिन डेढ़ बजे अगरतला पहुँचल। जहिना भेड़ी जेरमे हूरार चलि अबैए तहिना बससँ उतरलापर हिनका बुझि पड़लैन। भाषाक दूरी, जहिना हिन्दी जननिहार तहिना अंगरेजी। बस धरि तँ हिन्दीसँ काज चलि चुकल छेलैन, बससँ उतैरते, भुखाएल रहबे करैथ, पहिने होटलमे जा खेलैन। मुदा एकटा स्पष्ट अन्तर ई बुझि पड़लैन जे जे सस्त खेनाइ सिलीगुड़ीमे भेटलैन ओ आगू केतौ ने भेटलैन।

कनीटा उदाहरण- बरपेटामे (असम) रातिक एक बजे बस एकटा होटलक आगूमे लागि गेल, अकड़ल यात्री सभ उतैर होटल पहुँचल। हॉल जकाँ होटल रहै, जइमे तीन बसक यात्रीक बेवस्था छल। चारिटा रोटी-तरकारीक दाम बीस रूपैआ लेलकैन। मुदा देखलैन जे एक प्लेट माछ वा मांसबला रहै तँ ओकरा सभसँ एक-एक साए रूपैआ लेलकै जे सिलीगुड़ीमे दू रूपैआ पचास पाइमे खुअबैत रहइ।

होटलसँ निकैल थानापर गेला। कियो हिन्दी बुझनिहार नहि। कालीबाबूक नाओं कहिते एकटा सिपाही डेरापर पहुँचा देलकैन।

करीब अढ़ाइ बजे कालीबाबूक ऐठाम जगदीश प्रसाद मण्डलजी पहुँचला। नीक फुलवाड़ी, आठ कोठरीक नीक डेरा, होम गार्डक ड्यूटी। पहिने हुनकर पत्नी देखलखिन कारणो, छेलै जे ओ रोडे दिसक कोठरीमे रहैथ, खिड़की खोलि बाहर आबि गेट खोलि आगू बढ़ि कालीबाबूकेँ कहलखिन, ओ डेराक सभसँ दछिनबरिया कोठरीमे भुँइयेँपर शतरंजी बिछा पड़ल रहैथ।

हड़बड़ाएल उठि आबि कऽ एकटा कोठरी देखा कहलखिन, 'झोरा रखि दियौ।' बाथ रूम देखबैत- 'गाड़ीक झमाड़ल छी पहिने नहा लिअ।'

जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ अपनो सएह मन रहैन। सएह केलैन। नहा कऽ कोठरीमे अबिते कालीबाबू कहलकैन- 'खेला पछाइत अराम करब।' तैपर जगदीश प्रसाद मण्डल कहलखिन-

"भूख लागल छलए, बसे स्टेण्डमे खा लेलौं।"

साँझूपहर चाह-ताह पीब दुनू गोरे टहलए विदा भेला। कालीबाबू दोबरा कऽ लुंगी जकाँ धोती आ बिनु गंजीए कुर्ता पहिरने रहैथ। कारणो छेलै, मौसम। डेरासँ बगैलिते पछबरिया डेराक सम्बन्धमे कहए लगलखिन- 'ओ डेरा डी.एम.क छल जे मणीपुरी छला। 1984 बैचक आइ.ए.एस।' तैबीच डेराक आगूमे ठाढ़ देख ओ निकैल कऽ एला। हुनका अबिते कालीबाबू बंगलामे कहलखिन जे 'बन्धु छैथ!' तखन ओ हिन्दीमे गप-सप्प केलखिन। आगू बढ़िते आइ.जी.क डेरा। आइ.जी.क बेटा संग कालीबाबूक बेटाकेँ दोस्ती। डेरा लग पहुँचते दुनू गोरे हूल-दे डेरासँ निकलला। ओ बंगाली रहैथ। अगरतला बंगला भाषी क्षेत्र छिऐ। पहिल दिन 1960 ई. धरिक अपन चरिकोसीक विद्यार्थीक चर्च भेल छल। दोसर

दिन सबेरे चाहे पीबैकाल ओ कहलखिन जे 'आइ ऑफिस होइत दच्छिनमे बुढ़ी काली मन्दिर अछि तैठाम तक चलब।'

सबेरे दस बजे संगे दुनू गोरे ऑफिस गेला। ऑफिस सभ नमहर-नमहर रहै मुदा अपन ऑफिस छोटेटा छेलैन। एकटा आलमारी, दूटा कुर्सी, एकटा टेबुल। सोझे अपना कोठरीमे पहुँचला। पहुँचते एकटा बंगाली प्यून (बी.ए. पास धुरझार बजैबला) पहुँचलैन। ऑफिसक सम्बन्धमे पुछलखिन। सभ बात सुनि कहलखिन-

"चाह पिआउ।"

चाह पीब दुनू गोरे विदा भेला। बजारसँ निकैलते चाहक खेती दिस बढ़ला। सड़कक दुनू कात पहाड़ी जमीन अछि। छाती बरबैर चाहपत्तीक गाछ। ओइमे अधिक महिला पीठपर बोको लदने चाह-पत्ती तोड़ै छल। चाहक गप-सप्प चलबैत कालीबाबू कहलखिन जे 'हालेमे ग्रीन-टी कऽ कऽ नव किस्म आएल अछि। ओना, खेती बहुत अधिक नै भेल अछि मुदा दुनियाँक बजारमे सभसँ बेसी मांग अछि। कीमतो सभसँ ऊपर छइ।'

कनियेँ आगू बढ़लापर रबड़क गाछ देखलैन। पतियानी लगा रोपल छल। गाछक आकारसँ बुझि पड़लैन जे पनरह-बीस बर्खक हएत। बहुत भारी नहि। छाती भरि ऊपरमे खोधल, जइमे सँ लस्सा (दूध) निकलैत। सभ दिन भिनसरूपहर ओइ दूधकेँ समेट-समेट लऽ कऽ रबड़ बनबैत।

दुनू गोरे करीब बारह बजे बुढ़ी काली स्थान पहुँचला। छोट-छीन जगह। कमे दोकान-दौरी। साए बर्खसँ ऊपरक मन्दिर बुझि पड़लैन। सुर्खीपर जोड़ल मकान फाटि-फुटि, झड़ि-झुड़ि गेल छेलइ। मूर्ति देख निकैल गेला। पुरान कलाक मूर्ति। मुदा कालीकान्त बाबूकेँ बहुत रास मंत्र सभ पढ़बाक छेलैन तँए ओ मन्दिरमे रहला। जगदीश प्रसाद मण्डल बाहर निकैल गाछ सभ हियेलैन तँ कैम्पसेमे एकठाम आम, कटहर, गमहारि, शीशो-जामुनक गाछ देखलैन। अखन धरि गौहाटीक उपरान्त एहेन पचमेल गाछ केतौ ने देखने छला। तँए किछु बात मनमे उठलैन। अन्तमे मन मानि गेलैन जे मिथिलाक कियो पुजेगरी रहल हेता। जगदीश प्रसाद मण्डल पुजेगरीसँ किछुकाल गप-सप्प करिते रहैथ कि ताबे कालियो बाबू मन्दिरसँ निकलला। निकैलते कहलखिन- 'कहने जे छेलौं कमल सागर देखब, से यएह छी।'

जगदीश प्रसाद मण्डलजी हिआ कऽ देखलैन तँ बुझि पड़लैन जे बेरमाक बड़की पोखैरसँ छोटे अछि। पंचो ठीके-ठाक बुझि पड़लैन। किएक तँ बेरमा बड़की पोखैरसँ कालियो बाबू परिचिते। तहूमे बेरमाक बड़की पोखैर आ कछुबीक बड़की पोखैरिक तुलना तँ दुनू गामक लोक करबे करैत रहैए। तइमे बेरमाक बड़की पोखैर बीस। जगदीश प्रसाद मण्डलजी पुछलखिन- 'एकर नाओं किए सागर पड़ल?'

भूगोलक विद्यार्थी रहने काली बाबू ठमैक गेला। ठमैकते दोहरा देलखिन जे बेरमाक बड़की पोखैरमे एक महारक लोक दोसर महारबलाकेँ नै चिन्है छै, से तँ देखै छिऐ, दस कट्ठा पेट हेतइ। पोखैरक पछबरिया महारपर बंगला देसक सीमापर बाँसक खुट्टा गाड़ल। तखने थोड़े हटि चटगामबला रेलगाड़ी पास केलकै। जगदीश प्रसाद मण्डल विदा होइसँ पहिने मिठाइ खा पानि पीब चाह पिलैन। ओना, कालीकान्त झा चीनिया बेमारीसँ ग्रसित, मुदा तैयो प्रसाद जकाँ खेलैन। दिनगरे डेरापर अबै गेला।

अखन धरि कालीबाबूक परिवार वैष्णव बनि गेल छेलैन। शुद्ध शकाहारी परिवार। चारि बजे भोरेसँ नाचि-नाचि भजन करए लगै छला जे पड़ोसिया, मणीपुरबला कहलकैन। हुनकर डेरामे ईटा सिमटीक छहरदेवाली नै रहने

झलफले झाझनक टाट। डेरेसँ हिनका देखैथ जे व्यायाम बहुत करै छला।

ओ (मणीपुरी) मांसक प्रिय लोक। ओना, अपने ओ मिथिलांचलेक लोक जकाँ (शरीरसँ) रहैथ मुदा पत्नी पहाड़नी जकाँ छोटे कदक रहैन। दुर्गापूजाक समय रहबे करै, बगले पुबारिकात, (करीब दू बीघा पूब) पूजा होइ छल। अपन-अपन परिवारक संग अफसर सभ देखै छला। अपना सभ ऐठाम जकाँ दस दिनक पूजा नहि। परीबसँ शुरू नै भऽ सातम दिनसँ शुरू होइत अछि। मुदा मिथिलांचलसँ बहुत बेसी होइत अछि। कालीबाबू कहलखिन जे ऐठाम त्रिपुरो आ बंगलो देशमे 'काली पूजा' सभ करैत अछि। असामसँ उत्तर-पूब लऽ कऽ दच्छिन धरि मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम, मणिपुर, अरूणाचल, नागालैंड राज्य अछि। ट्रेनक रस्ता थोड़ेक आगू धरि अछि। ऐठामक मुख्य सवारी बस-ट्रक छी। जंगल-पहाड़सँ भरल इलाका। हजारो किस्मक गाछ-बिरीछ। उपजाऊ जमीन कम। ओना, जैठाम रंग-रंगक गाछ-बिरीछ अछि तैठाम खाइबला फल सेहो हेबे करतै। ढकिया साग बाध-बोनक घास जकाँ उपजल।

ओना, जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ जाइते कालीबाबू कहि देलखिन जे 'अपना ऐठामसँ एतए जे भिन्न अछि ओ देखबो करब आ खेबो करब।' एक तँ ओहिना ओ (कालीबाबू) तेते भँजियाह अपने जे सभ ठेकनौने रहथिन। तुलनात्मक दृष्टिसँ ओइ इलाका (त्रिपुरा आदि) मे अपना सभसँ बेसी बरखा होइ छै जइसँ अपने सबहक चौरी खेत जकाँ अधिकांस धानक कटनी पानियेँमे होइत अछि। जइसँ अपना सभ जकाँ कतिका खेती कम लगै छइ।

अपना ऐठाम कातिक नीक मास ऐ लेल बुझल जाइत अछि जे अन्नक एक मौसम बनैत अछि। तैसंग तीमन-तरकारी, फल-फलहरीक सेहो बनिते अछि। मोटामोटी यएह जे जेते किस्मक खेती कातिकमे होइत अछि, ओतेक आन कोनो मौसममे नहियेँ होइए। बिलंबसँ खेतक पानि सुखने किछु तेलहन, पटुआ आ धानक खेती होइत अछि। त्रिपुराक करीब साठि-सत्तैर प्रतिशत जंगल-झाड़, पहाड़सँ घेरल अछि। तीस-चालिस प्रतिशतक जमीन उपजाउ अछि। धान ऐठामक मुख्य फसिल छी। जइ तरहक सम्पदा इलाकामे छै, विकास नै भेल अछि। जनमानसँ धोखा अखनो कएल जा रहल अछि। त्रिपुराक

आदिवासी समुदायकेँ एते महगाइक सामना करए पड़ि रहल छै, जे बिसवास नै कएल जा सकैए। ओना, विदेशी संस्था सभ शिक्षाक एहेन ढर्रा धड़ा देने अछि जे रेलक विकास नै हउ। हँ, ई बात जरूर अछि जे अपना सभ जकाँ रेलवे लाइन बैसबैमे असान नै छै, पहाड़ी क्षेत्र रहने महग अछि। ओना, अपनो ऐठाम किछु राजनीतिक दल ओहनो छैथ। जे सड़क-पुल निर्माण, नहर-छहर निर्माणमे मशीनक प्रयोग नै हउ। ट्रेक्टर माटि नै उघए। लोके उघत आ बनौत। हुनका सभकेँ देखए पड़तैन जे गाममे सिरिफ गिरहस्तीकेँ समुचित बनौल जाए तइ लेल केनिहार (श्रमिक) नै भेटतैन। तैठाम नहर-छहर, बान्ह-सड़क बाधित कएल जाए, ई केते उचित भेल। पशुपालन नहियेँ जकाँ ओइ इलाकामे छैक, तेकर अर्थ ई नहि जे से केनहि अछि आकि पशु छइहे नहि। जंगलमे ओहन-ओहन पशुक भरमार अछि जेकरा आगू अपना सबहक गाए-महींसक मूल्य फीका पड़ि जाएत। तहिना गाछो-बिरीछक हाल अछि।

सुन्दरवन इलाकामे हजारक कोन बात, लाखक कोन बात जे करोड़-करोड़ रूपैआक मूल्यक गाछ सभ अछि। बाँसक तँ चर्चे नहि। खिस्सा अछि जे 'फल्लाँ खलीफा बाँसे उखाड़ि कऽ दतमैन करै छला, से प्रत्यक्ष भेलैन।' ओहनो-ओहन बाँसक बोन सभ अछि, जेना मिथिलांचलक बाँसक कड़ची होइए। एकटाकेँ काटि कऽ दतमैन केलैन। एकर माने ई नहि भेल जे एहने बाँस ओइ इलाकामे होइ छइ। बाँसक दर्जनो किस्म अछि। कड़चीसँ लऽ कऽ ओहनो-ओहनो बाँस सभ अछि जे अपना ऐठामक बाँससँ डेढ़िया-दोबर मोट अछि।

बिनु माटिक खेती पहाड़पर होइ छइ। झूम सिस्टम कहल जाइ छइ। छोट-छोट किआरी बना ओइमे उगल घास-फूस, बोन-झाड़ काटि आगि लगा जरा देलक आ खेती केलक। ई तीन सालक पछाइत छोड़ि दोसर खेत बनौलक। बंगला देशक लोक बहुत गरीब छैथ। तेकर कारणो अछि, एक तँ अपने सभ जकाँ 1947 ई.सँ पूर्व छला आ आजादीक संग बँटा कऽ पाकिस्तानक हाथ पड़ला। दुनूक बीच अनेको रंगक विषमता अछिए; जेना-भाषा, बेवहार, खेती-बाड़ी इत्यादिक। सत्ता पाकिस्तानक हाथ पड़ल, पूर्वी बंगाल पछुआ गेल। एक तँ अहुना समुद्री इलाकाक देश रहने, समुद्री-तूफानसँ

बेसी बेरबादी होइते छै तैपर शासनक विपरीतता, आरो धकिया देलक। जखन कि त्रिपुरोक आर्थिक-स्थिति ओते सुद्दढ़ नहियेँ अछि, मुदा सरकारी अनुदान भरपूर भेटै छइ। ई बात अलग जे सरकारी अनुदानक सही उपयोग नै भऽ बेसी लूटाइते अछि। मुदा तैयो किछु उद्योग-धन्धा (छोट पैमानापर) चलिते अछि। जूटक एकटा कारखानाक संग लघु उद्योगक रूपमे बाँसक छत्ताक बेंट (डंटा), बाँसक बनल आरो-आरो वस्तु बनौल जाइत अछि। अगरतल्लाक बजारो तेते नमहर तँ नहियेँ अछि। अल्मुनिया बरतन सेहो बनैत अछि। बंगला देशक हजारो श्रमिक अगरतलामे रिक्सो चलबैत अछि आ मजदूरियो करैत अछि। दुनूक बीच बीजाक (पासपोर्टक) बेवस्था प्रायोगिक स्तरपर नै छइ। सभदिन बंगला देशक श्रमिक भिनसरे अगरतलामे प्रवेश करैत अछि आ साँझूपहर घुमि जाइत अछि। सीमापर अबितोकाल आ जाइतोकाल गिनती कऽ लेल जाइ छै वा नहि से नै जाइन।

जगदीश प्रसाद मण्डलजी जखन सीमाक चौकी देखए गेला तखन मध्य प्रदेशक सिपाही ड्यूटीमे छला। ओ सिपाही हिन्दी भाषी रहैथ तँए किछु गप-सप्प भेलैन। पुछलखिन तँ कहलकैन जे सभ दिन भिनसर 6 बजेसँ आठ बजे तक ई सभ (बंगलादेशी) प्रवेश करैए, सभकेँ गनि कऽ लइ छिऐ आ आपसीकाल 5 बजे-सँ-सात-बजे सेहो गनि लइ छिऐ।

भाषाक द्दष्टिसँ त्रिपुरामे अंगरेजी, ककवार्क, बंगला आ मणिपुरी चलैत अछि। जगदीश प्रसाद मण्डलजी जइ समय त्रिपुरा गेल रहैथ (1998) ओइ समय कालीबाबू डी.आइ.जी. (होमगार्ड) रहैथ। काजो हल्लुके रहैन। अपनो जहिना झड़-झंझटसँ कात रहए चाहै छला तहिना छेलैन।

जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ चारि दिन जखन पहुँचना भेलैन कि हुनकर बदली भऽ गेलैन। डी.आइ.जी. (प्रशासन) बना उत्तरी त्रिपुरा बदली कऽ देलकैन। पाँचम दिन अपनो सभ परिवार आ जगदीश प्रसाद मण्डलजी सेहो 'कैला शहर' देखैले विदा भेला। दस बजेमे छहटा फोर्सक संग सभ कियो विदा भेला।

'अगरतला' पच्छिमी त्रिपुरामे पड़ैत अछि। बंगलादेशसँ सटले। दच्छिनी

त्रिपुरामे उग्रवादी उपद्रव अधिक छल तँए नै घुमि पेला। ओना, जाइकाल बेसी रातिए-कें पास केने रहैथ तँए बेसी नै देख पेला मुदा अगरतलासँ ‘कैला शहर’ अबैमे देखैक बेसी समय भेटलैन। दस बजेमे जे विदा भेला–अगरतलासँ–से साढ़े चारि बजे ‘कैला शहर’ पहुँचला। बीचमे तीन ठाम, पनरह-बीस मिनट करि कऽ रूकबो केलाह। नव जगहपर सभ नबे रहैथ तँए दू दिन घुमै-फिरैक कोनो कार्यक्रम नै बनलैन। तेसर दिनसँ घुमब-फिरब फेर शुरू भेलैन। आसीन मास रहने बाधमे धानोक फसल रहए। ओना, ऊँचगर जमीन सेहो रहइ। जइमे तेलहन आ अल्लू लेल तैयारी चलैत रहए। जंगल-पहाड़क क्षेत्र छीहे अपना ऐठामसँ भिन्न गाछ-बिरीछ देखैथ। ओना, आमक गाछ सेहो अछि। मुदा अपना सबहक आमसँ भिन्न अछि। ओइठामक आम अपना सभ जकाँ पकलापर नै खाएल जाइ अछि। जखने आम पकैपर होइत आकि ओइमे किड़ी फड़ि जाइ छै जे गुद्दाकेँ भुरभुरा बना दैत अछि, खाइ-जोकर नै रहि पबैत अछि।

त्रिपुराक प्रमुख स्थानमे उनीकुटी सेहो अछि। उनीकुटीक कार्यक्रम बनलैन। उनीकुटीक सम्बन्धमे कहल जाइत अछि जे जखन द्वापर जुगक अन्त हुअ लगल आ कलयुगक आवाहन हुअ लगल तखन देवता सभ सोचलैन जे कलयुग बहुत खराब जुग आबि रहल अछि। मान-मर्यादा, इज्जत-आवरू बँचब कठिन अछि। से नहि तँ धरती छोड़ि समुद्रेमे बास करब नीक हएत। ‘उन’क अर्थ ‘एक’ होइत अछि। जहिना अपना सभ उनचालीस, उन्नैस, उनतीस, उनहत्तैर इत्यादि कहै छिऐ, जेकर अर्थ होइत चालीसमे एक कम, बीसमे एक कम इत्यादि तहिना उनकुटीक करोड़मे एक कम।

स्थानक नाओं सुनि जगदीश प्रसाद मण्डलजीकेँ मनमे खूब खुशी भेलैन। खुशीक कारण ईहो छल जे कालीबाबू तेहेन ढंगसँ नाचि-नाचि कथा सुनौलकैन जे आरो जिज्ञासा बढ़ि गेल रहैन। तैपर सँ अखन धरि चौरासीए लाख देवता-दे सुनने छला, आइ तँ करोड़ देखैक मौका भेटलैन। लाभ ईहो जे दोसर स्थान नहियोँ जेता तैयो तँ फल भेटबे करतैन। राता-राती सभ देवता पड़ा कऽ समुद्र दिसक रस्ता धेलैन। पएरे रहैथ। जाइत-जाइत त्रिपुरा (उनीकुटी-माताहारी) पहुँचैत-पहुँचैत भोर भऽ जाइ गेलैन। महींसवार सभ महींस खोलि-खोलि चरबए विदा भेल रहए। सभ देवता सोचलैन जे दिन-देखार पड़ाएब नीक हएत, तँए

सभ कियो एक्केठाम डेरा खसौलैन...। वएह स्थान उनीकुटी छी।

नमहर क्षेत्रमे स्थान पसरल अछि। नमहर-नमहर पहाड़, गाछ-बिरीछ, बोन-झाड़सँ भरल। पहाड़पर सँ झरना झहरैत। मनुखसँ पूर्वक जे जीव-जन्तु अछि वएह सभ देवी-देवता। पहाड़ी भूमि मुदा रंग-रंगक पाथर सभक अछि। बाल-पाथर काँच-पाथरसँ सक्कत जुआएल पत्थर धरिक स्थान। ओहनो पाथर जे हाथसँ टुटि जाइत अछि। आ ओहनो पत्थर जे खूब सक्कत अछि। खाइयोबला फलक आ केरोक बोन अछि। बीचमे दोकान-दौड़ी। ओ बाहरे अछि। जैठाम पहाड़पर सँ झरनाक पानि झहरैत अछि तैठाम द्वापर युगक अर्जुन-कृष्णक रथक चित्र बनौल अछि जे उनीकुटी स्थानक मुख्य बिन्दु छी।

पूर्वांचल (असाम, मेघालय, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, अरूणाचल, नागालैंड आ सिक्किम) मिला अपने-आपमे एक देश छी। जंगल, पहाड़, झील, नदी घाटीक समूह। भाषाक दृष्टिसँ सेहो बहुभाषी अछि। अपन-अपन क्षेत्रक भाषा सेहो छइ। मोटा-मोटी बंगला, अंगरेजी, हिन्दी, खासी, गारो, ककवार्क, मणिपुरी, मिजो, आओ, कोंयक, अंगामी, सेमा, लोथा, मोंपा, अका मिजू, शर्दुकमेन, निशि, अपतनी, हिलमिदि, तगिन, अदी, इदु, दिगारू, मिजिखम्री, सिंगफू, तंगला, नोक्टे, वांचू, लोपचा, भोटिया, नेपाली लिंबू इत्यादि।

अगरतलाक राजा (सामन्ती युगमे) बर्म्मन-परिवारक छला। अखन जे फिल्मीस्तानमे गीतकार-संगीतकार वर्म्मन सभ छैथ। ओ ओतुके छैथ। हुनके देल मकानमे त्रिपुराक सभा भवन (सदन) अछि। आदिवासीक बीच अपना सभसँ भिन्न भोजनक चलैन अछि। खाइ-पीबैक वस्तुमे सेहो अन्तर अछि। हुनका सबहक भोजमे अपना सभ जकाँ नहि जे भात-दालि-तरकारीसँ शुरू केलौं आ जेना-जेना आगू बढ़ैत जाएत तेना-तेना नीक-नीक विन्यास औत। ओइठाम से नइ छइ। नीक-नीक वस्तु पहिनहि बँटाइत अछि आ जेना-जेना आगू बढ़ैत अछि तेना-तेना पछुआइत जाइत अछि।

दू हजार ईस्वीक पछाइत कालीबाबू रोगाए लगला। पहिने आँखि खराब भेलैन। कलकत्तामे ऑपरेशन करौलैन। कब्जियतक शिकाइत शुरूहेसँ भऽ गेल रहैन। मधुमेह सेहो भऽ गेलैन। आइ.जी. बनला उत्तर किछु दिन नीक रहला।

ओना, बीचमे डी.जी.पी. बनि मेघालय (शिलाँग) सेहो एला। मुदा ओइठाम मन नै लगलैन। छह मासक पछाइत पुनः घुमि कऽ अगरतले आइ.जी. बनि चलि गेला। रिटायर होइसँ चारि बरख पूर्व ओछाइन पकैड़ लेलैन। नोकरीदार रहने गाम नै एला। ओतै इलाज करबैत रहला। दिल्ली, कलकत्ता सभ ठाम गेला मुदा स्वस्थ नै भऽ सकला। देहक कोनो गंजन नै रहलैन। तीन या चारि बेर पेटक ऑपरेशन भेल छेलैन। कष्टसँ मनो चिड़चिड़ा गेलैन। दू बर्खक पछाइत (सेवा-निवृत्त होइसँ पहिने) गाम आबि गेला। दुनू तरहक रोग –शारीरिक-मानसिक–सँ भीतरे-भीतर ग्रसित भऽ गेला। मानसिक रोगक कारण भेलैन- जखन आइ.जी. बनला, गृह विभाग 32 करोड़ रूपैआ बिना योजनाक पठा देलकैन। मंशा जे हउ मुदा कालियोबाबू अपनाकेँ सैद्धान्तिक बुझै छला। बिनु योजनाक रूपैआ केतए खर्च कएल जाए से फुरबे ने केलैन।

एकटा पत्र गृह-विभागकेँ लिखलैन जे रूपैआ प्राप्त भेल मुदा योजना तँ किछु अछिए नहि, से योजना पठाउ। मुदा तेकर कोनो उत्तर नै भेटलैन। ओ जाल छेलइ। रूपैआ आपस कऽ देलखिन। आपस करब एहेन घातक भेलैन जे ओझरा गेला। जवाब-तलब भेलैन। लिखितमे जवाब तँ दऽ देलखिन मुदा बेमरियाह शरीर भेने दौड़-धूप तँ कऽ नै सकला। ड्यूटीसँ सेहो अलग भऽ गेल रहैथ। एक दिश गृह-विभागक चाप, दोसर दिस ड्यूटीसँ अलग हएब , आर्थिक समस्या उपस्थित भऽ गेलैन। तैपर पथ्य-पानि, दबाइ-दारूक खर्च काफी बढ़ि गेल रहैन। बेवस भऽ गेला।

कालीबाबूकेँ ‘पण्डित’ कहैक कारण अछि जे गीता (श्रीमद्भगवदगीता) पर अपन दृष्टिकोण छेलैन। आचार्य रजनीशक आठो खण्डक (आठ खण्डमे संगृहित, जेकर ओइ समयमे अठारह साए दाम छेलै) नीक अध्ययन छेलैन, जे दृष्टिकोणकेँ बदलने छेलैन।

जिनगीक आशा टुटि गेलैन। अन्तिम दौड़क भेँटमे विभागीय बहुत बात कहलखिन जे देखैआ की अछि आ चोरौआ की अछि। तैसंग नोकरीक शुरूक जिनगीसँ लऽ कऽ अखन धरिक बहुत बात संगी होइक नाते जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ ओ कहलखिन। अगरतला पहुँचते (डी.एस.पी.) अपन पहचान छबे

मासमे बना लेलैन। इमानदार अफसरक रूपमे प्रशासनसँ जनमानसक बीच आबि गेला। नगद रूपैआ, गहना-जेबर वा लत्ता-कपड़ा कहियो केकरोसँ नै छुलैन, मुदा खाइ-पीबैक वस्तु नै घुमबै छला। शुरूक पाँच बर्खक जिनगी एक कालखण्डक जिनगी बनि गेल छेलैन। शराब पीबै छला, सिगरेट पीबै छला, मुर्गी-अण्डा खाइ छला। ओही दौड़मे (1972 ई.) बंगला देशक लड़ाइ-पाकिस्तानक संग भेल रहए। मिथिलांचलक भाय लोकैनकेँ मन हेतैन जे सालो भरि बरखा सेहो भेल रहइ। ओ साले बरसातक भऽ गेल छल। घर छाड़ैले जे कियो खढ़-पात रखलैन ओ सभटा सड़ि गेलैन। एक तँ ओहिना लत्ती-फत्ती माने चार परहक सजमैन-कदीमा रहने खढ़क घरकेँ कोनो दशा नै रहैए, तँए नै छड़ाएब तँ पटोटनो दइक आवश्यकता भइये जाइ छेलइ। ओना, बोनिहार श्रेणीक अधिकतर धनखेती (धानसँ पहिने जे मरूआ होइ छल) ओकर सस्ती छेलइ। सस्ती ई जे जखन मरूआ पाकि जाइ छेलै तखन गिरहत खेतमे रहै छला, नार कटनिहार सभ मरूआ गिरहतकेँ दऽ दइ छेलखिन आ नार लऽ कऽ अपन घर छाड़ै छला।

बंगला देशक (1971 ई.) लड़ाइमे बंगला देशकेँ भारत संग देलक। इन्दिराजी प्रधानमंत्री रहैथ। रूसक (सोवियत संघक) भरपूर सहयोग भेटलैन। ओइ समय सोवियत संघ बहुत शक्तिशाली छल। ओना, अखनो अछि मुदा...। बीस बर्खक दोस्तीक समझौता भारत-सोवियत संघक भेल। नीक जवाब पाकिस्तानक संग देनिहार अमेरिकाकेँ भेटल। दुनियाँक इतिहासमे 31 हजार सेना बंगलेदेशमे हाथ उठौलक। सरेण्डर केलक। बंगला देशक ओइ लड़ाइमे शीर्ष नेता सभ त्रिपुरेक अगरतलामे रहैथ। इन्दिराजी सेहो चुप-चाप (बिना किछु जानकारीक) जाइथ। त्रिपुरा मलेट्रीक छाबनी बनल रहए। ओइ समय मलेट्रीक हाथमे लड़ाइक कमान रहै, सुरक्षाक कमान तँ प्रशासनेपर रहए। ओइ गेस्ट हाउसक जिम्मा हिनके (कालीबाबूक) रहैन। जइमे बंगला देशक कर्णधार सभ रहैथ।

ओइ बीच (बंगला देशक लड़ाइसँ पूर्व) एकटा जिम्मेदार अध्यक्षकेँ कालीकान्त झा गारियो पढ़लखिन आ मारबो केलखिन, भेल ई जे हिनका

नाओंपर एकटा माछक वेपारीसँ ओ खूब माछ खाए। बंगाली भाय , तहूमे त्रिपुराक पानि आरो मन्द छै, एक दिन ड्यूटीमे जाइत रहैथ आकि सलाम ठोकि ओ वेपारी हँसैत कहि देलकैन। ओइ बातकेँ पीठिया ठोक केलैन, वएह (अध्यक्ष) पकड़ा गेला। मुदा लूटमे चरखा नफा। त्रिपुरामे कम्युनिस्ट पार्टी आ कांग्रेस पार्टीक बीच कसमकस राजनीति रहए। तीन गोरेक कमिटी नृपेन बाबूक (नृपेन चक्रवर्ती, जे आजन्म अविवाहित रहला, कम्युनिस्ट पार्टीक नेतृत्व करैत रहैथ ट्रिपुल एम.ए. रहैथ, दू बेर मुख्यमंत्री सेहो बनला) अध्यक्षतामे बनल। जिनगीक संघर्षक अनुभव कालीबाबूकेँ विद्यार्थीए जीवनक रहैन। संगी-साथी प्रशासनिक अफसर सभ कहैन जे 'मोटरी बान्हि कऽ रखने रहू।' तेकर जवाब देथिन- 'बन्हले अछि।'

नृपेन बाबू घटनाक जड़ि तक पहुँचला। इनक्वाइरी दौड़मे गप-सप्प करैक बहन्ने जंगलक एकटा गेस्ट हाउसमे लऽ गेलैन। कोनो जानकारी केकरो नै देलखिन। मुदा देखनिहारो तँ देखते रहए। भरि राति ओतै रहला। जइसँ आरो प्रतिष्ठा बनि गेल रहैन। मुदा प्रतिष्ठो तँ जनमारा होइ छइ। कालीबाबू अपने पाँच भाइक भैयारी आ चारि सन्तान अपने छैन। तीन कन्या एक लड़का। तीनू कन्याक बिआह कऽ लेने छला। भाए आ पिता जीविते छेलखिन। थेहगर दुनू, अपनासँ एक बरख पहिने पिता मुइलखिन। भाए छैन्हे। बेटाक बिआह पछुआएल छेलैन। ओना, गप-सप्प (बिआहक) सुपौल जिलामे चलैत रहैन। ओहो (कन्यागत) रेलबेक एस.पी., जखन मन मानि गेलैन जे आब नै जीब, तखन हुनका तत्काल बजा मन्दिरमे बिआह सम्पन्न केलैन। नोकरी समाप्त भेला पनरहे-बीस दिनक पछाइत मरि गेला। मुदा पेंशनक समस्या तँ उठिये गेलैन।

जगदीश प्रसाद मण्डलजी त्रिपुरा जाइसँ पहिने हैदराबाद गेल रहैथ। हैदराबादमे राष्ट्रीय स्तरक साहित्यिक-राजनीतिक संगोष्ठी छल। ग्रुपमे मधुबनी जिलासँ गेल छला। रेलक एक मासक पास सभ कियो बनबौने रहैथ। मुदा रूटक हिसाबसँ बनल रहैन। ओही समय मधुबनी जिलाक पार्टी अन्तर्गत स्व. अनन्त भगत साहित्यिक मोर्चापर जिम्मामे रहैथ। साधारण परिवारसँ आएल अनन्त भगत, जेहने पितमरू रहैथ तेहने वफादार। आर्थिक स्थिति नीक नै रहलोपर पार्टीक होलटाइमर नेता रहैथ। ओइ समय मधेपुरक भार हुनके भेटल

रहैन।

चारि दिनक कार्यक्रम हैदराबादमे छल। साहित्यिक मंचपर 'प्रेमचन्द साहित्य' छल आ राजनीतिक मंचपर देशमे कानून बनैक, ओकर व्याख्या आ निर्णय लइमे की समस्या अबैत अछि, तैपर विषद चर्चो आ आगू लेल कार्यक्रमोक निर्णय भेल छेलइ। प्रेमचन्द साहित्यपर विषद व्याख्या रमेश चन्द्र उद्घाटन भाषणमे देलैन। ओना, ओ पंजाबक छला मुदा अंगरेजीमे बाजल रहैथ। कारण छल जे एक तँ दच्छिनी भारतमे कार्यक्रम छल, तहूमे जैठाम हिन्दीसँ अधिक अंगरेजीक बोलवाला अछि। बहुत पैघ कार्यक्रम छल। एकमतसँ प्रेमचन्द प्रगतिशील विचारक साहित्यकार मानल गेला। राजनीतिक मंचपर मुख्य वक्ता छला- 'भूपेश गुप्त' जे राज्य सभामे लगातार एक साएसँ ऊपर बैसारमे सम्मिलित भेल छला। कानून बनबैक प्रक्रियामे की बाधा उपस्थित होइत अछि, तेकर विषद व्याख्या करैत कोन रूपमे काज कएल जाइत अछि, बजला।

भूपेश गुप्त बंगालक छला। आजन्म अविवाहित रहला। एकसंग स्व. इन्दिराजी (प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी) स्व. ज्योति बाबू (ज्योति बसु, मुख्यमंत्री बंगाल) आ भूपेश गुप्त इंग्लैडमे कानूनक शिक्षा लेने रहैथ। दोसर मुख्य वक्ता रहैथ न्यायमूर्ति बी. आर. अय्यर। बी. आर. अय्यर साहैब सुप्रीम कोर्टसँ सेवा निवृति भेल छैथ। समस्याक निर्णय करब केते कठिन अछि तैपर विषद भाषण देलैन। वएह बी. आर. अय्यर साहैब जे 1967 ई. मे बिहारमे महामाया बाबू कांग्रेसी सरकारक भ्रष्ट पूर्वमंत्री सभपर जे आयोग बैसौने रहैथ। एकटा जानल-मानल न्यायाधीश।

तेसर मुख्य वक्ता छला, मध्यप्रदेश हाइकोर्टक एकटा सीनियर अधिवक्ता। न्यायालयमे बहस करैमे की समस्या उपस्थित होइत अछि तैपर ओ विषद चर्च केने रहैथ।

सोभावो आ मेहनतोमे ओ सभ (दच्छिन भारतक लोक) भिन्न छैथ। ओ सभ जी खोलि कऽ काज करैमे बिसवास रखै छैथ। जगदीश प्रसाद मण्डलजीक अपन इच्छा छेलैन जे किछु ग्रामीण क्षेत्र देखैथ, मुदा से नै भेल। गाड़ीसँ (ट्रेन)

जे देखबो केलैन ओ से नै भेल जे देखए चाहै छला। चारिये दिन हैदराबादमे रहबाक छेलैन, तहूमे जइ कार्यक्रममे आएल छला ओ छोड़ि केना जेबो करितैथ। हैदराबाद शहरो नमहर। तैयो मुख्य-मुख्य जे दर्शनीय अछि से तँ देखबे केलैन। ऊषा कम्पनी, संगमरमरक पहाड़, चारमीनार, निजामक राजशाही मकान, झील इत्यादि देखलैन। काफी व्यस्त शहर हैदराबाद अछि। ओतए गाड़ी-सवारीक पर्याप्त बेवस्था अछि, मुदा तैयो काफी भीड़-भारबला शहर हैदराबाद अछि। खाइ-पीबैक विन्यास अपना सभसँ किछु भिन्न छइ। मुदा देश स्तरक कार्यक्रम तँए देश भरिक खान-पानक बेवस्था रहबे करइ। ओना, कटहरक जे विन्यास छेलै ओ अपना ऐठाम सँ भिन्ने नै नीको अछि। विदा होइकाल आ आपसीमे किछु अगुताहैट भऽ गेलैन। ओना, टिकट आरक्षित रहैन मुदा प्लेटफार्मपर पहुँचैत-पहुँचैत गाड़ी खुजि गेलैन। सभ कियो (मधुबनीक) सभ दिस भऽ गेला। ऐगला स्टेशनपर एकठाम हेता, लेडी कम्पार्टमेन्ट (महिला बोगी) मे चढ़ि गेला। अखन धरि महिला बोगी नै देखने छला। चढ़ि कऽ बैसैक जे विचार केलैन तँ देखलैन सौंसे बोगी म हिले बैसल! टी.टी सेहो महिला। मुदा अपना ऐठाम जकाँ यात्री झौं-झौं कऽ नै छुटलैन। जगदीश प्रसाद मण्डलजी ओकरा सभ दिस ताकैथ जे किछु पुछतैन तखन ने कहथिन। ओहो सभ चुपचाप देखबो करैत आ मुस्कियो दइत।

जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ कोनो चिन्ते ने रहैन। एक्के देशक रेलगाड़ीमे दू रीति अछि, तखन की हेतै?

किछुकालक पछाइत टी.टी. लगमे एलखिन। ओ बुझि गेल रहथिन जे ई उत्तर भारतक मेल गाड़ी छी। कहलकैन जे ई लेडी कम्पार्टमेन्ट छिऐ। ओना, ओ हिन्दीए-मे कहलकैन मुदा जहिना अपना ऐठामक मिडिल स्कूलक बच्चा हिन्दी बजैत अछि तहिना। परिचय जरूरी बुझि पड़लैन। अपन यात्राक चर्च करैत कहलखिन जे अगुता कऽ चढ़ि गेला तँए ऐ कोठरीमे चलि एला। ने तँ किए अबितैथ। कहलखिन जे आगू बदैल लेब, संगियो सभ छथिन, ओहो सभ भेट जेतैन। ❑

रामपट्टीक जहल...

रामपट्टीक जहल बनि गेल छल। मुदा उद्घाटन नै भेने ओहिना पड़ल रहए। नरकोमे की कम ठेलम-ठेल होइ छइ। मधुबनी चक्की वार्डमे जे दसो-बीस दिन रहल हेता, हुनका मोने हेतैन। तैठाम साल के कहए जे केतेको सालसँ केतेको गोरे छला। आजादीसँ पहिनौं आ पछौं मधुबनी जेलक चलती रहबे कएल...। तइमे मुदा एकटा जरूर भेल रहै जे जेलक भीतरो विभाजित रहए, वार्ड न. 02 राजनीति पार्टीबला सबहक रहैन, बाँकी सहरगंजा। सहरगंजा ऐ लेल जे ने अपराध एक रंगक छै आ ने अपराधी। मुदा जेल तँ जेल छी मठाधीशसँ लऽ कऽ फुलतोड़ा धरि एक्केठाम रहता। मुदा जहलोक कारोबारमे चोरी-चपाटी रहबे करै, कियो जलखैक बदाम चोरा लइ तँ कियो गुड़। कियो करू तेल हेर-फेर कऽ दइ, कियो किछु...।

आजादीक समय मधुबनी जिला (तइ दिनक सब्डिवीजन) : जखन आजादीक सीमापर आबि गेल छी तखन थोड़ेक भाषा-प्रेमी-अंगरेजक सेहो देखिये ली। एकटा एस.डी.ओ. भेला ग्रियर्सन। जे गाम-गाम घुमि भाषाक मर्मकेँ बुझैक कोशिश केलैन। कोशिशे नइ केलैन भोलूमक-भोलूम पोथियो लिखने छैथ जे पैघ-पैघ पुस्तकालयक सिंगारक वस्तु बनि जेबर-जेबरात जकाँ आलमारी धेने अछि।

भाषा-साहित्य लेल सरकारियो-गैर-सरकारियो संस्था सभ खूब काज केलक, मुदा ग्रियर्सनक कएल मैथिली सेवा आलमारीक दराजेमे फँसि गेल अछि..!

जहिना साहित्य सृजन अनुभावात्मक आ वौधात्मक होइत अछि तहिना भाषाक सेहो अछि। मैथिली शब्दकेँ सिरिफ संस्कृतसँ आएल शब्द बुझै छी तँ मैथिली संग अन्याय होइ छइ। न्याय तखन हेतै जखन मैथिली शब्दकेँ वैदिक

जीवन-पद्धतिक शब्द रूपमे देखल जेतइ। एक-एक शब्द एक-एक जीवनक काजक नक्शा तैयार करैक शक्ति रखैए। संस्कृतक प्रभाव ऐ लेल मानल जाइत जे वैदिक भाषा संस्कृत रहल। ओना, भाषाक दौड़मे आगू नै बढ़ब मुदा एकटा बात आवश्यक बुझि पड़ैए तँए, वैदिक संस्कृतक शैली अनुभवात्मक अछि जखन कि लौकिक संस्कृतक भावात्मक बेसी। भावात्मक दिशा कल्पनाशील बनैत गेल। जेना-जेना भावात्मक दिशा मजबूत होइत गेल तेना-तेना साहित्य जिनगीसँ (जीवन पद्धति) दूर हटैत गेल।

रामपट्टी जेलक उद्घाटन नै होइक कारण रहै जे प्रशासनसँ ठीकेदार धरि कियो फाइनल करैले तैयारे नहि। किछु काज पछुआएल तँ किछु बिल-भुगतान पछुआएल। मुदा नजैर सबहक योजना खाइक पाछू।

राज्य वामपंथी (भाकपा-माकपा) पार्टी अपन ज्वलंत समस्या सभ लऽ कऽ 'जेलभरो' आन्दोलन केलक। ओना, सौंसे राज्यक ज्वलंत समस्या सभ मुद्दा रहए मुदा मिथिलांचल लेल दूटा प्रमुख मुद्दा छल। प हिल कोसी नहरक संग नूनथर, शीशापानी आ बराहक्षेत्रमे डैम बना पनिबिजली उत्पादन कएल जाए जइसँ कृषिक संग उद्योगो धन्धा बढ़तै। किछु गोरेक एहेन धारणा अखनो छैन जे कारखानाक जरूरत खाने क्षेत्रटा मे होइ छइ। मुदा से नहि, ईहो होइ छै जे जेते-रंगक कारखाना अछि तइमे 55 प्रतिशत जौं खान क्षेत्रक मालसँ चलैत तँ 45 प्रतिशत कृषि उत्पादित वस्तुसँ सेहो चलैत। दोसर मुद्दा छल मैथिली भाषाकेँ सरकारी मान्यता भेटौ अर्थात् अष्टम अनुसूचीमे शामिल हउ। जइसँ मिथिलाक विकासमे एक कड़ी जुड़त।

मधुबनी जिला बढ़ि-चढ़ि कऽ ओइ आन्दोलनमे हिस्सेदारी दर्ज करौलक। दर्जनो ओकील सेहो रहैथ। हजारसँ ऊपर कार्यकर्त्ता जेलमे छला। जइ दिन मधेपुर-लखनौर ब्लौकक समय (प्रदर्शनक संग जेल) रहै तही दिन विस्फीक सेहो रहए।

जगदीश प्रसाद मण्डलजी सभ जिला-कार्यालय (डी.एम. ऑफिस)क गेटक बाहरमे रहैथ। पूर्वेजी (स्व.राजकुमार पूर्वे) कार्यालयक पैछला गेट देने आबि, पाछूमे ठाढ़ भेल एस.पी.केँ कालर पकैड़ लेलखिन। भीतर-बाहर हूड़-

बरेड़ा भऽ गेल। लाठी चार्च भऽ गेल। मुदा बहुत नहि।

जगदीश प्रसाद मण्डल रामपट्टी जेल पहुँचला। बेरमाक अट्ठारह गोरे रहैथ। नागेन्द्रजी (डॉक्टर नागेन्द्र कुमार झा, पैटघाट) आ जगदीश प्रसाद मण्डल सभ लेडी वार्डक ओसारा पकड़ने रहैथ। जिलाक सभ विधायको आ विधान पार्षदो रहैथ। विधायक रहैथ पूर्वेजी (स्व. राज कुमार पुर्वे), तेजनारायणजी (श्री तेज नारायण झा), लाल बिहारीजी (श्री लाल बिहारी यादव), रमणजी (राम लखन 'रमण' भाकपा.क विधायक), बैजनाथजी (श्री वैद्यनाथ यादव, पूर्व विधायक), चौधरीजी (श्री कृष्ण चन्द्र चौधरी)।

जेलक भीतर दिनमे दू बेर भाषण-भूषण चलइ। मुख्य वक्ता रहैथ चौधरीजी। माँजल विद्वान श्रीकृष्ण चोधरी। भाषापर एतेक पकड़ रहैन जे एक्को शब्द कम-बेसी नै होइन। कोनो विषयकेँ यथास्थित व्याख्या करैक अद्भुत क्षमता रहैन। ओइ समय पार्टीक जनशक्ति दैनिक पत्रिका निकलै, जेकर सम्पादक रहैथ चौधरीजी आ जगदीश प्रसाद मण्डलजी जनशक्ति पत्रिकाक संवाददाता छला।

स्व. कृष्णचन्द्र चौधरी नीक वक्ता छला। लिखबो नीक करै छला। मैथिलीमे तँ भरिसक नै मुदा हिन्दी-अंगरेजीमे केतेको पोथी लिखने छैथ। जेहने विद्वान तेहने सुभ्यस्त परिवारक सेहो छला। पानो खूब खाइ छला आ सिगरेटो पीबै छला। जेल तँ छुच्छे देहे आबि गेला मुदा भिनसरूपहर चाह पीला पछाइत पान खाइले मन छटपटाए लगलैन। जगदीश प्रसाद मण्डल सभ पानक ओरियान करि कऽ रखने रहैथ।

जहलो कोनो जहल जकाँ नहियेँ रहए। ने सरकारीक पर्याप्त स्टाफ रहै आ ने सरकारी बेवस्था। अपने सभ सभ किछु। गेटो खुजले रहइ। भीतर बाहर प्रदर्शनकारी लोक सौंसे टहलैत। बेरू पहर ढोलकपर अल्हा होइ।

चौधरीजीकेँ चाहोक हिसाब नहियेँ रहैन। आबैथ तँ जगदीश प्रसाद मण्डल चाह पिआ पान खुआबथिन। तेकर बाद गप-सप्प शुरू होइ।

ओना, बिहारक केतेको जिलाक प्रदर्शनकारी दुइए दिनक पछाइतसँ निकलए लगला। मुदा मधुबनीक मारि-पीट केसकेँ भरिया देलकै। दू दिनक

पछाइत भोगेन्द्रजी सेहो दरभंगा जेलसँ निकैल मधुबनी जेल चलि एला।

तेरह दिनक पछाइत निकलैक आदेश आएल रहए। मुदा सबहक नहि। 35 गोरेकेँ मुजफ्फरपुर जेल पठबैक आदेश सेहो आएल रहए। तेरहम दिन निकलै बेर कियो निकलैले तैयारे नै भेला। किछु विदाइ भेने बिना केना निकलता। गप उठल धोती-कुर्ता, गंजी-गमछा आ चद्दैरिक मुदा से नै भेलइ। होइत-हबाइत एकटा लूंगी आ एकटा गमछा सभकेँ भेटलैन। पार्टी आन्दोलनक अन्तिम जेल यात्रा छेलइ। तेकर बाद जे जगदीश प्रसाद मण्डल गेबो केलाह तँ एक-दिना-दू-दिनामे। जे कएक बेर थानेसँ चलि आबैथ।

ओना, जगदीश प्रसाद मण्डल सभ दोहरी जेलक यात्री रहैथ। अपनो गाममे तेते मोकदमा भऽ गेल रहैन जे एक ने एकटा वारंट सभ दिन रहबे करैन। दू हजार ईस्वी अबैत-अबैत सभ केस समाप्त भऽ गेलैन, खाली दूटा शेष बँचल रहलैन। एकटा 307 (हत्याक प्रयास) जे हाइ कोर्टमे छेलैन, दोसर 436 (अगिलग्गी) जे डिस्टिक जजक कोर्टमे छेलैन।

जहिना बाढ़िक पानि पोखैरमे प्रवेश करैकाल सौंसे पोखैरक पानि गतिशील भऽ जाइए आ घुमती बेर (बाढ़ि सटकैक समय) धीरे-धीरे गतिहीन हुअ लगैए तहिना मोकदमाक दौड़मे भऽ गेलैन। मुदा असथिर नै भेल छेलैन। कारण, बँचल दुनू केस शेसन रहैन। ई भेलै जे जिलाक अगिलग्गी केसक फाइले तरमे पड़ि गेलै आ हाइ कोर्टमे दौड़ो-बरहा कम होइ छेलइ।

अखन धरि–माने 2000ई.सँ पूर्व धरि जगदीश प्रसाद मण्डलजी देशक अदहासँ बेसी भ्रमण कऽ नेने छेलैथ। एक दिस देशक आर्थिक राजधानी मुम्बई देख नेने छला, तँ दोसर दिस नागालैंड-अरूणाचल सेहो देखने छला। रविन्द्र बाबूक (महर्षि रविन्द्र नाथ टैगौर) शान्ति निकेतनक संग सुन्दर वन, गंगासागर, समुद्रक कातमे कबीर दासक गाड़ल खन्ती, तँ सूर्य मन्दिर सेहो देखने छला।

रंग-रंगक द्वैत (द्वन्द्व) अछि, एक दिस जौं हजारी बाबू (आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी) जे शान्ति निकेतनमे 1930 ई.सँ 1950 ई. धरि हिन्दीक अध्यापक रहला, जे सिरीसक फूलक महमहीसँ मुग्ध होइत रहला तँ दोसर दिस मिथिलांचलमे ई सिरीस बर्जित अछि! ने घरक काजमे औत आ ने चौकी आकि

कुरसीक काजमे। तेतबे नहि, फलक गति सेहो सएह। गाछ तँ बड़का-बड़का होइ छै जहिना कहबी छै- "मनुख तँ बलवीर मुदा मोछ ने तँ किछु ने।"

तहिना। मन मानि गेलैन जे पुरबा-पछियाक लहैर छी। फूल लेल केहेन गाछ लगौल जाए, फूलक संग फल लेल केहेन गाछ लगौल जाए आ बिनु फूल-फलक गाछ केतए लगौल जाए, ई तँ प्रश्न भेल। मुदा पछियाकेँ पूर्वाक लपेट तर कइये दइ छइ। जौं से नै करै छै तँ मिथिलांचलक भूमिमे केतए-कहाँक बोन-झाड़ केना लागि गेल? जखन कि मिथिलांचल एक-सँ-एक फल, एक-सँ-एक फूल आ एक-सँ-एक सुकाठ लकड़ीक बास भूमि अछि...। मिथिलांचलक विकास तखन हएत जखन मिथिलांचलकेँ गहराइसँ अध्ययन करि अनुकूल परिस्थिति बना उपयोग हएत।

जगदीश प्रसाद मण्डलजीकेँ यात्राक दौड़मे राजस्थान सन दर्शनीय जगह सेहो छुटले छेलैन। यात्रा तँ गरपर छेलैन मुदा समैयो आ पाइयोक तंगी छेलैन। ममियौत भातिज राजस्थानक पाली जिला अन्तर्गत डी.एल.एफ. सीमेन्ट कारखानामे सुपर-वाइजर छेलखिन जे बेर-बेर अबैक आग्रह करैत रहैन। ओना, ओ (तेज नारायण मण्डल) पढ़ल-लिखल नहि। कोसिकन्हा भेने गामक स्कूलो नष्ट भऽ गेल आ गामो। जमीन-जत्था गुजर करैबला जरूर छै मुदा कोसी-कमलाक बीच पड़ि गेल छइ। भागि कऽ ओ राजस्थान चलि गेला। डी.एल.एफ. सीमेन्ट कारखानामे उट्ठा मजदूरक रूपमे नोकरी भऽ गेलैन। एन.के. पारीख नामक एक गोरे, जे चारि कोठरी मकानो बनौने छला आ ओही सीमेन्ट कारखानामे नीक पदपर सेहो छला, हुनके मकानमे एकटा कोठरी भाड़ा लऽ तेज नारायण रहए लगला। धीरे-धीरे दुनू गोरेक बीच सम्बन्ध बढ़ैत गेलैन। हुनकर (एन.के. पारीखक) सासुर नेपालक काकरभिट्टा तँए पत्नी मिथिलांचलसँ परिचित, सम्बन्धक मजगूतीक कारण वएह भेल। भाए-बहिन जकाँ दुनूक सम्बन्ध बनि गेलैन। एक-दोसरक पारिवारिक जिनगीक सम्बन्ध बढ़लैन। एन.के. पारीख तेजनारायणकेँ कहलखिन जे बैसारीमे पढ़ा देब। सचमुच पढ़ा कऽ कारखानाक सुपर-बाइजर बना देलखिन।

जगदीश प्रसाद मण्डल मनमे अँटकारि लेला जे मात्र जाइ धरिक समस्या छैन। जखन जेता तँ एतबो ओ नै करत? देखैबला जगहो देख लेता आ

ओइठामक माटि-पानि-हवाक क्षेत्रो देख लेता। एक दिन अहिना किछु पारिवारिक आमदनी भेलैन, उठि कऽ विदा भेला। असगरे घुमैक सोभावो छेलैन्हे। दिल्ली होइत राजस्थान पहुँचला।

सुपर-वाइजर भेला पछाइत तेजनारायण अपन परिवारो (पत्नी) आ एकटा भाइयोकेँ गामसँ लऽ गेला। भाएकेँ ओइ कारखानामे नोकरी धड़ा देलखिन। एन.के. पारीखक मकानसँ हटि तीन कोठरीक मकान भाड़ा लऽ रहए लगला।

पैखाना कोठरीक ओतेक जरूरी नहि, एक तँ क्षेत्रक हिसाबसँ पातर जनसंख्या दोसर झाड़दार सांगरीक (बगूर जकाँ पातो आ काँटो होइ छै) छिटफुट गाछक परदा। राजस्थानमे बससँ उतैर जगदीश प्रसाद मण्डलजी सोझे कारखाना पहुँच ऑफिसमे भातीजक सम्बन्धमे पुछलखिन।

तेजनारायण ड्यूटीमे नै रहैथ। एक गोरे पटनाक संग भेलखिन आ तेजनारायणक डेरापर झलफल साँझ होइत पहुँचा देलखिन।

बिजलीक इजोत। बगलमे तीस-चालीस दोकानक छोट-छीन बजार। जइ बीच होइत बसक रस्ता। अन्हार रहने बेसी नै देख पेला।

चैत मास रहने गरमी खूब पड़ै, दस बजेक पछाइत घरसँ निकलैक मन नै होइ। मुदा बारह बजे रातिक पछाइत (जेना-जेना राति ढलै) मोटगर चद्दैरिक जरूरत भऽ जाइ छेलइ। रहैले एकटा खाट, सिरकक संग भेटल छेलैन। भिनसर होइत देखैक अवसर भेटलैन।

डेराक आगूमे चारि-पाँचटा अशोकक गाछ लागल, मझोलके गाछ। मकान मालिकक घर अदहा किलोमीटर हटि कऽ रहैन। मुदा मालक घर बगलेमे बनौने रहए। मालो की, बिनु बच्चा दूटा तौड़िया महींस।

तीन बापूत मकान मालिक। पिता बुढ़े रहैन जे बेसीकाल महींसक ताक-हेर करै रहथिन। एक भाँइ ओही सीमेन्ट कारखानामे नोकरी करै छला। आ दोसर, खेती-गिरहस्तीसँ लऽ कऽ महींस दुहनाइ आ मोटर साइकिलपर दूध बेचनाइ धरि। तीन-किलो मीटरपर एकटा दोकानदारकेँ प्रतिदिन दूध दइत।

साइठ बीघा जमीनो रहैन आ एकटा बोरिंग सेहो। शुद्ध दोखरा बालुक खेत। पहाड़-बालुक क्षेत्र। गाछक रूपमे मात्र सांगरी। पहाड़क अतिरिक्त खेत सभमे पाथरक छोट-पैघ टुकड़ा ओंघराएल।

पराते भने मकान मालिकसँ जगदीश प्रसाद मण्डलजीकेँ चिन्हा-परिचय भऽ गेलैन। पैंसैठ-सत्तैरिक उमेर, देहमे मात्र एकटा धोती। परात भने जखन बेटा महींस दुहऽ लगलैन तँ जगदीश प्रसाद मण्डल देखलैन जे दूध तँ कमे भेलै मुदा ओइमे पानि ढारि देलकै। पुछलखिन जे 'पानि किए देलिऐ?' जवाब देलकैन जे जौं दूधमे पानि नै देबै तँ महींसक थन जरि जाएत! जवाब सुनि किछु फुरबे ने केलैन। ओहो चलि गेला।

तेसर दिन अजमेर दरगा देखैक कार्यक्रम बनलैन। बहुत सुन्दर स्थान। पहाड़ी इलाका तँए बेसी चिक्कनो-चुनमुन। स्थानक पुबारि भाग ऊँचगर पहाड़। पहिने तँ मनमे भेलैन जे हिन्दूकेँ रोक हेतै मुदा से नहि। देखनिहारमे बेसी हिन्दू। कबुलो-पाती बेसी। स्थानक भीतरे रहैथ आकि गाजा-बाजाक संग एकटा जुलुस देखलैन। हाथी, ऊँटक संग मनुखकेँ चलबैत चरिपहिया गाड़ी (बिनु इंजिनक, आगू-पाछू आदमी ठेलैत) मर्द-औरतसँ सजल जुलुस। रंग-रंगक बबाजियोक समूह। नंगासँ लऽ कऽ रइस धरि।

दरगा देखला पछाइत जगदीश प्रसाद मण्डलजी पुष्कर गेला। अजमेरमे आम, जामुन, लताम इत्यादिक गाछ सेहो देखलैन। गुलाब फूलक खेती बहुत बेसी। पुष्कर एकटा नमहर पोखैरनुमा अछि। जैपर ब्रह्माक मन्दिर अछि। अनेको धर्मशाला आ अनेको घाट बनल अछि। जहिना दरगामे भीड़ तहिना पुष्करोमे रहए।

ओना, जेबाकाल जयपुरेमे बससँ उतरला। मुदा रातिमे पहुँचला। भोरे अन्हरगरे दोसर बस पकैड़ लेलैन तँए देखैक अवसर ओइ दिन किछु ने भेटलैन। अजमेरक तेसरा दिनक पछाइत जयपुर पहुँचला। सचमुच कला-कृत्ति श्रेष्ठ छै, खास कऽ प्राचीनक। मीराक स्थान (मैरता) सेहो गेला। बसनुमा रेलक गाड़ी चलै छइ ओतए।

एकटा मन्दिर अछि जइमे अनेको मूर्ति अछि। मन्दिर बहुत नमहर तँ नहि

मुदा छिपगरो नहि। ढोलपेटा जकाँ अछि। ओना, भीतर अबै-जाइले लोहाक केबाड़ी लागल, मुदा सदिखन लगले रहै छइ। छाती भरि ऊपर चारूकात नमगर-चौड़गर खिड़कीनुमा मोटगर लोहाक सरी लागल छइ। जइ होइत चारूकात घुमि कऽ देखल जाइत अछि। भीतरमे राजदरबारक दृश्य बनल छइ। जहिना राजदरबारमे सभ किछु सजल रहै छै तहिना सभ किछु सोनाक बनल छइ।

ओना, देशमे एक-पर-एक स्थानो अछि आ मन्दिरो अछिए। जहिना कलाक क्षेत्रमे अछि तहिना आर्थिक क्षेत्रमे सेहो अछि। मुदा मूल वस्तु अधिकांश स्थानक गाइब अछि। ओ छी ओकर महात्म्य। उदाहरणक रूपमे 'कामरूप कामाख्या', कामरूप कामाख्यामे सभ कथूक बलि प्रदान होइ छै, मुदा दोसर-तेसरमे अन्तर अछि। किछु स्थानमे खास चीजक बलि पड़ैए। तहिना प्रसादोक अछि। जगन्नाथक प्रसादक अलग रूप-गुण अछि।

ओना, कोनो स्थानक महगाइक परिचय बारहो मास रहलापर होइ छै मुदा से जगदीश प्रसाद मण्डलजी राजस्थानमे रहला नहि, मुदा जेतबे दिन रहला तइमे देखलैन जे बीत भरिक सजमनिक दाम, जेकर दाम अपना ऐठाम आठो अना नै हेतै ओ दस रूपैआमे बिकाइत।

1999 ई.मे जगदीश प्रसाद मण्डलजी राजस्थान गेल रहैथ। तइ दिनमे ओइठाम तीन रूपैए चाह बिकाइ छल आ अपना ऐठाम एक रूपैए। तहिना पान सेहो ओइठाम तीन रूपैए खिल्ली बिकाइत रहै, जे अपना ऐठाम बारह-अने रहए।

एक तँ अपना सभ जकाँति सैकड़ो अन्न दोकानमे नै देखलैन मुदा अन्नक भाउमे अपना सभसँ कम अन्तर छेलइ। किछु सस्तो छेलइ। जेना चीनिया बदाम। चीनिया बदामक खेती होइ छइ। खाएब-पीअब अपना सभ जकाँ नहि, सीमित जिनगी सीमित भोजन। गरीबी सेहो छइ। मुदा अपना ऐठामक कारण भिन्न अछि ओइठामक कारण भिन्न छइ। जहिना नाओं मरूभूमि तहिना सचमुच मरलो अछि। ने अपना सभ सन मौसम सुहावना आ ने गाछ-बिरीछक आनन्द। मुदा राजाघराना आ औद्योगिक घरानाक बसने कलो-कारखाना आ आरामदेह

गाड़ियो-सवारी।

ओना, ठीक-ठीक जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ नै बुझल छेलैन मुदा चारूकात जे छहरदेवाली देने रहै ओ दस किलो मीटरसँ बेसीए-मे बुझि पड़लैन। बीचमे सीमेन्टक कारखाना बनल। पानि, बिजलीक खास बेवस्था रहइ।

कारखानासँ दच्छिन नमगर चौड़गर पहाड़ छइ। जइमे सँ डायनामाटिसँ तोड़ि पाथर अबै छइ। ओना, तीन हजारसँ ऊपर श्रमिक सिमेन्टक कारखानामे कार्यरत मुदा बिना ठौर-ठेकानक। हँ, किछु गोरे छैथ जिनका दरमहो नीक छैन आ आनो आन सुविधा छैन मुदा अधिकांश श्रमिकक जिनगीक कोनो ठौर-ठेकान नहि। ने कर्मचारीकेँ रहैले आवासक बेवस्था, आ ने नीक मजूरीक।

कारखानाक जे मुख्य प्रबन्धक छला ओ सेवा-निवृत्त आइ.ए.एस रहैथ। कारखानाक भीतरे नीक आवासक बेवस्था छेलैन, दरमहो नीक रहैन।

मिथिलांचलक दुर्भाग्य ईहो अछि जे सेवा-निवृत्त नीक-नीक पदाधिकारियो आ अध्यापको दोहरा-दोहरा नोकरी करए लगला अछि। आँइ यौ, अहाँले वानप्रस्थ आश्रम/संन्यास अवस्था कहिया औत आकि अबैये ने देबइ? जैठाम मिथि-मालिनक एहेन स्थिति रहत तैठाम भगवान मालिक छोड़ि के हेता? काँच माटिक एकटा दिआरी बना लिअ। फाटल-पुरान साड़ी फाड़ि कऽ टेमी बना लिअ, करुतेलक मालीमे मखा दियौ आ साँझूपहर डिहवार स्थानमे नेसकऽ एकटंगा दऽ दुनू हाथ जोड़ि मांगि लिअ जे विद्या दिअ, धन दिअ, समांग दिअ..!!

कारखानाक मुख्य प्रबन्धककेँ देख जगदीश प्रसाद मण्डलजीक मनमे उठलैन जे की सेवा-निवृत्तिक पछाइत जे नोकरी केनिहार छैथ ओइसँ भ्रष्टाचारकेँ ने तँ बल भेटै छइ?

चौथाइयोसँ कम कर्मचारीकेँ स्थायी नोकरी भेटल छेलैन। जिनका किछु-किछु सुविधो छेलैन। बाँकी तीन-चौथाइ ठीकेदारक अन्तर्गत काज करैत रहए। ओना, दरमाहा कम जरूर छेलैन मुदा गामक बोनियातसँ बेसी छेलैन्हे। काजक ढंगो बेवहारिक। जेना दूटा सुपर-बाइजर छला। दुनूक बीच एकटा मोटर साइकिल देल छल। जइ सुपार-बाइजरक ड्यूटी समाप्त भेलैन ओ मोटर

साइकिलसँ डेरा जेता, ओही गाड़ीसँ जइ गाड़ीसँ ड्यूटी करैबला सुपर -बाइजर आएल छला। तँए ड्यूटीक हिसाब लेनिहार संगी भऽ जाइ छेलैन। तँए सभ अपन ड्यूटीक पक्का छला। चौबीसो घन्टा कारखाना चलैत अछि।

दोखरा बालु सभठाम एक्के रंग नहि। केतौ-केतौ मेही बालु सेहो छै जेकरा खेतीक उपयोगमे आनल गेल मुदा बहुत तरमे पानिक लेअर, तँए बोरिंगो महग। गहुम, बदाम, चीनिया बदाम, बाजरा, तोरक खेती ठाम-ठीम रहए।

अपना सभ जकाँ ने रंग-रंगक पशु आ ने पक्षी राजस्थानमे। गोटि पँगरा-मोर। अपना ऐठाम जेरक-जेर कौआ, मेना, बगरा-बुगरी अछि से नहि। वातावरणो अनुकूल नहि। ने रहैले गाछ-बिरीछ आ खाइक रंग-रंगक वस्तु आ ने पीबैक पानिक बेवस्था। गोटि-पँगरा गाइयो मुदा खढ़-पानिक अभाव जेर बनौने। भिनसरूपहरमे ट्रैक्टरपर हरियरो आ सुखलो ठठेर नेने अबै आ छीटि दइ। गाए-सभ अपन-अपन खाए। परबा सेहो छै मुदा खाएब वर्जित। जौं खेबै आ पकड़ा जाएब तँ जुरिमाना लागत।

राजस्थान जाइसँ डेढ़ बरख पूर्व पनचानबे बर्खक अवस्थामे जगदीश प्रसाद मण्डलक माए मरि गेली। माइक अन्तिम दर्शन। दिनक बारह बजैत। जगदीश प्रसाद मण्डलक पत्नीकेँ ओ कहलखिन- “तूँ सभ खाइ-पीबै गेलह?”

पुतोहु- “हँ।”

“बच्चा, गाममे अछि किने?”

खाइ कालमे देखनहि रहथिन, मुदा लगले बिसैर गेली। मनमे शंका भेलैन।

“हमरो कनी बिछान करि दाए।”

पुतोहु ओसारेपर बगलेमे बिछान कऽ देलकैन। बैसले-बैसल घुसैक कऽ बिछानपर पहुँच पड़ि रहली से पड़ले रहि गेली! एकादशीक दिन।

अन्तिम समय धरि माइक आशा जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ नै टुटलैन। जिनगीमे नमहर-नमहर दुर्दिन सेहो एलैन, तँ सेवो एते मजगूत रहलैन जे आशाक बाट पकड़नहि रहला।

सुभ्यस्त परिवारमे माइक जन्म भेल छेलैन। दू भाए-बहीनिक बीच माने नानाक बीच पिताक परिवार छेलैन। बहीनिक बेटा नर्सिंग मण्डल दीप गामक छेलखिन। जिनका 1942 ई.मे झंझारपुर सर्कलक आन्दोलनमे गोली लागल छेलैन। दुनू गोरेक (जगदीश प्रसाद मण्डल आ हुनको) मात्रिक मनसारा (दरभंगा जिला, घनश्यामपुर ब्लौक) एक्के परिवार। बेरमामे माइक सासुर, दीपमे पीसक (दीदीक, जिनकर बेटा नरसिंग मण्डल) सासुर, गोधनपुरमे जेठ बहिन जे सात भाए-बहिनमे सभसँ जेठ। मनसारा परिवार सम्पैतियेमे अगुआएल नहि समांगोमे अगुआएल। माइक मौसीक सासुर बेरमे। हुनके परिवारक पोखैर अधिकारी पोखैरक नाओंसँ जानल जाइत अ छि, जे जगदीश प्रसाद मण्डलक घरक बगलेमे अखनो कारगर अछि। घरे-घरे कल भेने नहाएब तँ कमि गेल छै मुदा माछ-मखानक बखारी छइ। तहिना एक लकीरमे तीनटा इनार सेहो छेलैन, जे भग्नावशेष मात्र रहि गेल छइ। तीन भाँइक भैयारीक बँटबारामे चानीक रूपैआ गनि कऽ नहि अपितु तराजूपर तौल कऽ बारह-बारह पसेरीक बँटबारा भेलैन।

ओहन परिवारक लागिमे जगदीश प्रसाद मण्डलक पिताक बिआह हेबाक कारण छल पैछला इतिहास। जइमे कूल-मूलसँ लऽ कऽ पारिवारिक बेवहार धरि अबैत अछि। जगदीश प्रसाद मण्डलसँ ऊपरक पीढ़ी धरि परिवारमे हर जोतब आ गाए दूहब वर्जित छल। मुदा आब नहि। मौसीक (माइक मौसी) अनुशंसासँ माइक बिआह एक साधारण परिवारमे भेलैन। घरदेखीमे पाँच गोरे जे एलखिन से पाँचो पाँच रंगक। अपन-अपन नजरिये सभ परिवारकेँ देखलैन। एकटा नमगर-छड़गर खलीफा सेहो रहथिन घरदेखीमे। खेनाइ खेला पछाइत घरसँ जखन निकलए लगला तँ चौकैठमे कसि कऽ चोट लगलैन। ओइ तामसपर बाजि गेला- “एहने ठाम कुटुमैती करब, जेकरा घर ने दुआर छइ!”

मुदा सभ चुपचाप सुनि लेलैन। मौसीक (माइक मौसी) जिज्ञासा रहैन जे अपना सम्पैत नहियेँ छै तँ की हेतइ। अपना खेत-पथार, पोखैर-इनार तखन दुख कथीक हेतइ। कारणो छेलैन जे सासुर किछुए दिन बसला पछाइत मौसी विधवा भऽ गेल रहैथ।

दोसर सिफारिश (माइक बिआहक) मौसीक रहैन। माइक जेठ बहिन गोधनपुरमे। गोधनपुर बेरमा सटले अछि। सात भाए-बहिनमे मौसी सभसँ जेठ आ माए सभसँ छोट। करीब तीस बर्खक दूरी। ओना, ओहो पुत्र विहीन विधवा भऽ गेल छेलखिन। मुदा दूटा सन्ता न तँ छेलैन्हे। हुनको सिफारिश भेलैन।

तेसर सिफरिश दीपक (नरसिंह म ण्डलक) दीदीक भेलैन। परिवारमे महिला समूहक विचार काटब कठिन भऽ गेलइ। माइक बिआह भऽ गेलैन।

35 बर्खक आयुसँ पहिने विधवा भऽ गेली। पिता मृत्युक पछाइत करीब साठि बरख जीवित रहली। ऐ साठि बर्खमे एकटा (नैहरक) सुभ्यस्त परिवारकेँ उजड़ल-उपटल देखलखिन। कोसी-कमलाक चपेटमे मनसारा गाम उजैड़ गेल। बीच बस्ती (पुरना बस्ती) देने कमला बहि रहल अछि। तीनू भातिज आ दुनू पोताकेँ एक-एक साल जहलमे बन्न देखलैन। विधवा मौसीकेँ देखलैन, विधवा दीदी आ बहिनकेँ देख अपनो वैधव्य स्वीकार केलैन। नरसिंह भायकेँ गोली लागल देखलैन। तेतबे नै देखलैन, परिवारक भागिनक उजड़ल परिवार (हरिनाही) सेहो देखलैन। जिनगीक धक्के ने पंजा मजगूत करै छइ।

मनसारा उजड़लासँ दीप, गोधनपुर आ बेरमाक एक परिवारसँ सम्बन्धित रहने सम्बन्ध आरो मजगूत भऽ गेल। परिवारक दू सूत्र अ छि। एक वंशगत दोसर बेवहारगत। एकठाम रहने आ एकठाम नै रहने (हटि कऽ रहने) सम्बन्ध प्रभावित होइते अछि। नरसिंह मण्डलक परिवार आ बेरमाक परिवारमे मात्रिकक सम्बन्ध बनि गेलैन। जखन नरसिंह मण्डलकेँ गोली लगलैन, इलाजक दरमियान बहुत दिन धरि ओ बेरमेमे रहला।

माइक मुइला पछाइत जगदीश प्रसाद मण्डलजीक सोझमे सराधक सबाल उठलैन। स्थिति नीक नै छेलैन, मुदा समाजो तँ ऐ समस्याकेँ मेटा चुकल अछि तँए तेहेन समस्या नहियेँ बुझि पड़लैन। मुदा मनमे दूटा सबाल अपनो उठल रहैन, बाजैथ नहि। कारण स्पष्ट, बरियातीक मरजादी भोजक ठहाका तँ नहि, तीस-चालीस हजारक काज छल। प्रश्न रहै जे एकबेर खेलहो-बिनु-खेलहोकेँ खुआ सम्बन्ध तोड़ि लेता। भेर पेट भोज खाइ दुआरे दिन-रातिक समय लूटा देल जाए, ई नीक नै भेल। मुदा डर ईहो रहैन जे एहनो लोकक तँ कमी नहि

जे अनका ऐठाम पल्था मारि दइ छथिन आ अपना बेरमे...।

दोसर कारण मनमे नचैत रहैन जे कर्मकाण्डकेँ तँ हटौलैन, मुदा भोज तँ लधले रहि गेलैन। एक दिस होनि जे एकबेर भोज खुआ हरदा बजा दैथ, कम-सँ-कम एतबो तँ हएत जे पाँच गामक पंचो आ समाजो आँखिक सोझमे देख लेथिन। मुदा किछु बाजैथ नहि।

अखद्धआ मेघ तड़तड़ाएल। तेरा इत (सारा बनौला पछाइत) दिन सराधक गप-सप्प उठल। जगदीश प्रसाद मण्डलक पिसियौत भाय (गोनर मण्डल) आबि कऽ (हरिनाहीसँ बेरमा) चालि देलखिन जे मामी तँ बेटे जकाँ पोसलैन, तँए हम भोज करबै। आठ बरख पहिने गाया सेहो लऽ गेल रहथिन। अपन स्थिति (गोनर मण्डलक) ओते नीक नहि, मुदा छोट भाइक बेटा सभ (पाँचो भाँइ) कमासुत तेकर हूबा रहबे करैन। भातिज–बिलट मण्डल–केँ हुनक पिताक बिमारीक खिस्सा बेर-बेर सुना तैयार (भोज करैले) कऽ नेने रहैथ। ओ सभ (भातिज) गछि लेलकैन।

जहिना पोखैरमे माछ चाल दैत तहिना भैयाक चाल देख (जगदीश प्रसाद मण्डलजीक जेठ भाय, जे पहिनहि मरि गेल छला) भौजी परिवारसँ चाल देलखिन जे जेते ओ (पिसियौत भाय गोनर मण्डल) करथिन तेते हमहूँ करबै। कारण छेलैन जे दूटा बेटा (राजदेव म ण्डल आ रामानन्द मण्डल) दिल्लीमे नौकरी करए लागल रहैन।

जगदीश प्रसाद मण्डल हिसाब जोड़ैथ तँ देखैथ जे दूटा भोज पचगामामे भेल जइमे तीस-पैंतीस हजार खाइ-पीबैमे आ तीस-पैंतीस हजार क्रिया-कर्ममे खर्च होइ छइ। अपन हिसाब अदहामे जोड़ैथ। एकटा नव बिमारी गामक भोजमे सेहो पकैड़ लेने रहै जे मिठाइक भोज रसगुल्लाक भोज भऽ गेल रहए। भोजपर नजैर जानि तँ मन भटैक जाइन। होनि जे अनेरे फेरामे पड़ता। भोज अजसक काण्ड छी। भनसियाक गलती वा बारीकक गलती भोजैतकेँ चटै छइ। तैसंग मनमे एकटा ईहो उठैत रहैन जे अखुनका जे पचगामा बनल अछि, ई तँ हालमे बनल अछि। एकर खेबे केते केलैन। भोज खेने छैथ ननौर, भोज खेने छैथ लकसेना, परसा इत्यादि गाममे। से तँ आब फुटि कऽ ओहो दोसर दिस

चलि गेलै आ जगदीश प्रसाद मण्डल सभ दोसर दिस भऽ गेला। अपन आँट-पेट देखैथ तँ चौथाइपर बुझि पड़ैन। भात-दालिक भोज केलैन। जहिना कथा गोष्ठी ‘सगर राति दीप जरय’मे भाय-बन्धुकेँ करौने रहैथ, तेहने भोज केलैन, नीक जस भेलैन। भोज खुआ भोज खाएब छोड़ि देलैन।

माइक मुइला पछाइत, जेना कुम्हारक आबामे ढबाहि लगै छै तहिना ढबाहि लगि गेलैन। किछुए दिनमे सासु मरि गेलैन। हुनको उमेर करीब नब्बे बरख छेलैन। ओहू भोजकेँ छोट केलैन। छोट एना जे तीन-भाए एक बहिनक बीच सासुक सराध। जेठ भाय सरकारी नोकरी करैत तँए सरकारी धाही। पत्नीसँ तकरार हेबे करतैन। मुदा सुतरलैन। नैहर लगमे रहने पत्नी माइक जीवित मुँह देखए पहिनहि गेली से भरि सराध रहिये गेली। जगदीश प्रसाद मण्डल अनठा देलैन। मुदा सासुरेसँ समाद पहुँचलैन जे एक-सवा साए कठियारी गेल रहै, तेकर खर्च अपने लागत किने। सुनि कऽ अनठा देलैन। जखन आठ दिन बितलै, परसुए नह-केश हएत तँ समाद पठा देलखिन जे अहाँ सभ अशौचक भोज नह-केश दिन करै छी। हम सभ (बेरमा) छोड़ि देने छिऐ तखन अहीं कहू जे हमर आएब उचित हएत? खूब घौचाल उठल मुदा दुइए दिनमे केते घौचाले हएत, अनठा देलैन।

सासुर बिसरलो ने रहैथ कि नरसिंह मामा (करीब 80-85 बर्खक रहथिन) मरि गेलखिन। मुदा दीपक भोज नमहर होइतो छोट होइ छइ। गाम नमहर तँए सौंसे गामक भोज करैत -करैत भोजैतक दम खड़ा जाइ छइ। मुदा आन गाम तँ एको घरक किए ने हुअए ओ तँ गामे कहाएत। संयोग थोड़ेक नीक भेलैन जे मृत्युसँ करीब आठ बरख पूर्व स्वतंत्रा सेनानी भेट गेल रहैन। जइसँ दू-अढ़ाइ बीघा खेत कीनि लेला। स्वतंत्रता सेनानी भेटैसँ पूर्व गामेमे एक गोरेक ऐठाम नरसिंह मण्डल नौकरी करए लगल रहैथ। जे पेंशन भेटलापर छोड़लैन।

ओही पतियानीमे पत्नीक मामा (ममियौत ससुर) सेहो मरि गेलैन। ओना, हुनको उमेर अस्सी पार कऽ गेल रहैन। मुदा ओइठामसँ आवाजाही नै रहने, कोनो भार जगदीश प्रसाद मण्डलजीकेँ नहि पड़लैन।

ऐ तरहेँ एक पीढ़ीक (पुरान पीढ़ीक) अन्त भऽ गेलैन।

जगदीश प्रसाद मण्डल लेल 1999 ई. अबैत-अबैत आशा-निराशाक बीच संक्रमणक स्थिति बनए लगलैन। 1998 ई.मे दफा 307क केसमे सजाए भऽ गेल रहैन। हाइ कोर्टमे अपील होइमे 20-25 दिन लागि गेलैन। तइ समयमे रामपट्टी जेलमे रहैथ। मने-मन आश्चर्य होनि जे बिना किछु केनौं जहलमे छैथ। तहियो आ अखनो मन नै मानि रहल छेलैन जे कोनो गलती हुनकासँ भेल हुअए। खाएर, अपील भेल, जमानत भेलैन। वर्माजी (माननीय न्यायमूर्ति वीरेन्द्र प्रसाद वर्मा, पटना हाइकोर्ट) कैँ फोन केलखिन तँ कहलकैन जे किछु ने हएत, निचेनसँ अपन काज करू। सएह भेल। केस समाप्त भऽ गेलैन से चारि मासक पछाइत बुझलखिन। तेकर कारण रहए जे केस पैरवी करैक जिम्मा नै रहैन।

जखन बहुत अधिक केस भऽ गेल रहैन तखन जगदीश प्रसाद मण्डलजी अपनामे विचारि लेला जे एक-एक केसक भार सभ कियो आपसमे लऽ लिअ। जखन केस खुजत आ खर्च बढ़त तखन चन्दा कऽ लेब। तैबीच एक केस एक आदमीक जिम्मामे रहत।

हाइ कोर्टबला 307-केसक जजमेन्ट तकक खर्च पहिनहि जमा भऽ गेल रहैन। तँए नै बुझि सकला। दोसर केस जे बँचल रहैन तइमे समझौताक बात भऽ गेल छेलैन। ओना, तैयो किछु गोरे छह-पाँच कऽ देबे केलकैन। तँए केसक चिन्ता मनसँ हटि गेल रहैन। ओना, तीन बर्खक वारंटक पछाइत केसक भाँज तखन लगलैन जखन थानासँ सूचना भेटलैन। झंझारपुर-मधुबनीक बीच जे कोर्टक हेरा-फेरी भेल तइमे केस हेरा गेल छेलइ। फास्ट-ट्रेक कोर्ट खुजला पछाइत जखन ताक-हेर भेलै तखन भेटलै। तैबीच किछु गोरे (28गोरेमे) मरि गेल रहैथ, जइमे तीनटा मुद्दालह आ दूटा गवाह सेहो। संगठनक रूप सेहो छिड़िया जकाँ गेल रहैन। तेकर बहुत रास कारण छेलइ। सामाजिक, आर्थिक, साम्प्रदायिक इत्यादि।

जहिना अन्तिम केस छेलैन तहिना समाजक अन्तिम अस्त्रक प्रयोग नीक जकाँ भेलैन। मुदा जे भेलैन, दिनांक 5-5-2005 इस्वीमे ओहो समाप्त भऽ गेलैन। तैबीच जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ दोसर दिस बढ़ब उचित नै बुझि पड़ैन। उपदेशक सभ तँ कहबे करैन जे अनेरे परेशान होइ छी। मुदा सिमरिया पण्डाक

उपदेशे की। धार गंगा आ विचारधाराक घाट सिमरिया छी आकि की छी से तँ एक्के धारमे देखाइ छइ। एक घाट (उत्तर) दोसर (दच्छिन) मग्गह।

जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ नव काल्हि देखैक इच्छा शुरूहेसँ रहलैन। से ओहिना नहि, केलाक (क्रिया) पछाति आरो मजगूत भेलैन।

उदाहरण- जेतए परिवारमे साधारण शिक्षाक आगमन भेल छेलैन। तैठाम एम.ए. तक पढ़लैन। परिवारे नहि, गामेमे पहिल एम.ए. भेला। ओना, पैछला पीढ़ीमे संस्कृतक माध्यमसँ एक-पर-एक विद्वान बेरमामे भेला मुदा जेनरलमे जगदीश प्रसाद मण्डलेटा रहैथ।

दोसर : बोरिंग-करौने खेतियोमे किछु नवता आबि गेल छेलै गाममे। दुनू रंगक खेती करै छला मण्डलजी। दुनू रंगकसँ मतलब- अन्नो आ नगदियोक। नगदी खेतीमे तरकारी आ फलक खेती सेहो करए लगला। ओना, जइ रूपे करए चाहै छला ओइ रूपे नै होइक कारण छल, किछु समैयोक अभाव आ किछु उपद्रवो। खेतीक एहेन उजाड़ि होइत रहैन जे जौं मारि-झगड़ा करए लगितैथ तँ दिनमे तीन बेर होइतैन। पैघ समस्याक आगू छोट गौण पड़ि जाइ छइ। मुदा मन तोड़ैक तँ अस्त्र भेबे कएल। उपद्रवो चाहे जेतए हउ मुदा मनकेँ प्रभावित तँ करिते अछि। तहूमे खेतीक उजाड़ि जइमे मेहनत आ पूजीक संग समैयक क्षति सेहो होइत।

जइ दिन जगदीश प्रसाद मण्डल मधुबनी कोर्टमे 307 केसक जजमेन्टमे सजा भेलैन ओइ दिनक घटना- गामक जेते देखार विरोधी रहैन ओकरा सभकेँ ई बुझल रहै जे सजा हेतैन, जहल जेता। जखने जेता तखने दस बर्खसँ पहिने थोड़े निकलता। सजाए भेलैन जहल गेला। तैबीच तीन कट्ठा बन्धा कोबी, बोरिंगबला चौमासमे केने रहैथ। हँ! एकटा बात आरो बीचमे कहि दिअ चाहै छी जे 1970-71सँ 1986-87 धरि बेरमाक खेती आगू ससरैत रहल। अनेको दमकल, बोरिंग भऽ गेल। हालर चक्की , थ्रेशर इत्यादि सेहो सभ भऽ गेल। मुदा 1986-87क बाढ़ि-भुमकम खेतीकेँ पाछू धक्का मारि देलक। एक तँ सरकारी राशनक चहैट बाढ़ि-भुमकमक पछाइत लागिये गेल छल दोसर अनेको बोरिंग माटिक तरमे पड़ि टुटि-फुटि गेले छल। गामक खेती पाछू ससैर गेल।

मुदा हिनकर तँ जीविका रहैन, छोड़ने केना बनितैन? खाएर.., जइ दिन 307क जजमेन्ट भेलैन ओइ समय जे कोबी छेलैन ओ 2 किलोसँ लऽ कऽ चारि किलो धरिक फूल 18 साए गाछ रहैन। बन्धा कोबीक भाव 2-5 रूपैए किलो रहए। अन्दाजि लियौ जे केहेन नोकसान भेलैन। अट्ठारहो साए गाछ दिन-देखार उखाड़ि कऽ लऽ गेलैन।

दोसर, जहल निकललाक तीन मासक पछाइत कछुबी गेला। कछुबी उत्तरबारि टोलमे एकटा चाहक दोकानदार, जे बिशौलसँ कछुबी आबि बसि गेल अछि, चाहेक दोकानपर जेना केते भारी अपराध कऽ जहलसँ आएल होथि तही ढंगक बेवहार हिनका संग केलकैन। आ से ओ, जेकरा अपने ठेकान नै छै, मुदा की करितैथ।

कछुबीक रत्न कालीबाबूक (काली कान्त झा, आइ.पी.एस.) परिवार संग खेनाइ-पीनाइ आवाजाही छैन। ओना, अखन धरि कछुबीमे दुइए गोरे आइ.पी.एस केलैन अछि, तइमे कालीबाबू पहिल। तहूमे विद्यार्थीए जीवनसँ मंचक वक्ता बनि गेल रहैथ, गीताक मंच (गीता प्रवचन) पर अधिक बैसै छला।

राजनीति सेहो ठमैक गेलइ। 1960 इस्वीक पछाइत मधुबनी जिला कम्युनिस्ट पार्टीक मुख्य आन्दोलन 'कोसी नहर', 'नूनथर', 'शीशा पानी' आ 'बराह क्षेत्रक डैम'पर केन्द्रित भऽ गेल। ओना, आनो मुद्दा रहबे करइ। बटाइदारी जमीनक लड़ाइ जोर पकड़नहि रहए। नहरक पानि आ पनिबिजली जेना कम्युनिस्टे पार्टीक होइ तहिना लोकक धारणा बनि गेल छेलइ। जेकर समाधान भेने मिथिलांचलक उद्धार होइत। खेतीसँ उद्योग धरि बढ़ि जाइत, से नै भेल। जेते विरोधी (कम्युनिस्ट विरोधी) ताकत छल रंग-रंगक आन्दोलन, षड्यंत्र कऽ योजनाकेँ अखन धरि सफल नै हुअ देलक। पार्टियोक राजनीतिमे ठहराव आबि गेल। एतबे नहि, जेकरा सभकेँ बटाइ-जमीन भेल ओहो सभ ओकरा (ओइ खेतकेँ) भरना लगा पंजाब-दिल्ली जाए लगल। परिणाम ओहन आबए लगलैन जे की केलाह तँ किछु नहि। सिरिफ जिलेक राजनीति नहि। गामोमे सएह भेलैन।

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक मनमे उठलैन जे हजारो बर्खक गाछ किछु-

ने-किछु अपनामे नवीनता अनिते रहैए। चाहे नव टुसा हउ आकि नव मुड़ी आकि नव पात आकि नव कलश। विचार तँ उठलैन मुदा मनमे दुनू केस तँ रहबे करैन। जाइ-अबैक परेशानी नहि, केसक सजाए केर परेशानी। दुनू सेशन केस। दू-दिना-चारि-दिना तँ छी नहि जे बुझथिन पहुनाइ करए जहल गेल छला। सालक-साल दस साल, बारह साल। दुनू मिला बीस सालसँ बेसी। तैबीच की कएल जाए। जाधैर केससँ छुटकारा नै पाबि लेता ताधैर दोसर दिस बढ़ब नीक नै हेतैन।

केसक छुटकाराक पछाइत करबे की करितैथ। गुजर लेल खेती करिते छला। नोकरी दिस कहियो मनसँ तकबे ने केलाह, वेपार कएले ने हेतैन। मुदा जिनगियो तँ छोट नहियेँ अछि। कठही साइकिल (काठक पाइडिल लगौल साइकिल) तँ जिनगी छी नहि जे थालो-कादो आकि रस्ताक कटारियोमे कन्हापर उठा लेता आ टपि जेता। जिनगीक गाड़ी छी। एक पटरीपर सँ दोसर पटरीपर आनब। एकर अर्थ ई नहि जे जैठाम पाहि कटैक जोगार छै तैठाम गाड़ीकेँ लऽ जा कऽ दोसर पटरीपर चढ़ा दियौ। दोसर पटरीपर आनैक अर्थ ई जे छोटी लाइन (मीटर गेज लाइन) सँ बड़ी लाइनपर चढ़ेबाक अछि। ओकर आँट-पेट छोट छै मुदा किछु पार्ट- धुरी-चक्का बदलने तँ डिब्बा आ आनो-आनो वस्तु उपयोगी बनि जाइ छइ। प्रश्न एतबे नै अछि, ऐसँ आगूओ अछि। ओ ई अछि जे अदौसँ अबैत ई जिनगीक गाड़ी छी। जेतेक रंगक पटरी तेतेक रंगक पटरीक गति। तैठाम गाड़ीकेँ दोसर पटरीपर लऽ जाएब, असान नहि।

साहित्यो जगतक जे दशा-दिशा अछि ओ छपित नहियेँ अछि। तहूमे लाठी सबहक हाथ पड़ल अछि। कोनो वस्तु मंगलापर नै दऽ छिपा लेब, लाथ कहबैत अछि। मैथिली साहित्य जगत समाजसँ एते दूर हटि गेल अछि जे जोड़ब असान नै अछि।

ओना, ई सिरिफ मैथिलीए-मे नहि, आनो-आन साहित्यमे भरपूर अछिए। जेना- कबीर दासक चर्च मैथिली साहित्यमे कम अछि मुदा कबीर दासक जे जिनगीक (जीवन पद्धति) इतिहास प्रस्तुत कएल गेल अछि ओ विवेकपूर्ण जकाँ नै अछि। विवेकपूर्ण नै हेबाक कारणे कबीर दर्शन समाजसँ

हटि गेल अछि। जेहो सभ दर्शनक प्रचार-प्रसार कऽ रहल छैथ, ओहो सभ या तँ अपनो गुमराहे छैथ, नहि तँ लाथी छैथ, जे गुमराह केने छैथ।

तहिना तुलसी दास 'गोस्वामी' कहबै छैथ, मुदा केतेक गाए पोसने छला? जरूरत अछि युगानुसार साहित्यक निर्माण करब।

तहिना जाधैर मैथिलियो साहित्य समाजक वस्तु (समाजक साहित्य) नै बनत ताधैर के केकरा की कहै छिऐ से भाँज थोड़े लगत। तँए शुभेक्षु साहित्यकारक दायित्व बनैए जे एक आँखि समाजपर रखि दोसर आँखि जखन कागत-कलमपर रखता तखन मैथिली साहित्ये नहि मिथिलाक कल्याण हएत। राज्यक अर्थ जौं राजधानीक एकटा कार्यालयसँ लइ छी तँए मिथिलाक समाज छुटि जाइए। मिथिलाक सामाजिक पद्धति वैदिक पद्धतिसँ आगू बढ़त तखने सर्वांगीन विकास हएत। ❑

हाइ स्कूलक एकटा स्मृति...

जगदीश प्रसाद मण्डलजी केजरीवाल हाइ स्कूलमे नाओं लिखेने छला। तही बीच स्पेशल नाइंथक (हायर सेकेण्ड्री) सिलेबसक विस्तार भेल। मुदा तैयो आनर्स जकाँ विषय नै भेलैन, समटाएले रहलैन। पुरने सेकेण्ड्री पद्धतिक रहलैन। मुदा विषयक विस्तार तँ भेबे कएल। अर्थोशास्त्रक पढ़ाइ होइ छेलैन। शुरूक छह-मासक पछाइत (हायर सेकेण्ड्री कोर्सक) अर्द्धवार्षिक परीक्षा भेलैन। केजरीवाल स्कूलक बेवहार छल जे अर्द्धावार्षिक परीक्षाक कॉपीए विद्यार्थीकेँ दऽ देल जाइ छल। किछु विद्यार्थी जे परीक्षाक पछाइत दोहरा कऽ प्रश्नक उत्तर पढ़लैन तँ ओ तँ पढ़िए कऽ, मुदा जे से नै केलैन ओ घरपर पोथीसँ मिला देख लइ छला। ने शिक्षकक बीच कोनो मलिनता छेलैन आ ने विद्यार्थीकेँ होनि जे मास्टर साहैब जतिआरे केलैन। तेतबे नहि, लत्ती बाबूक (स्व. यदुनन्दन साहु) अलग सोच रहैन। हुनकर नम्बर दइक अलग कसौटी रहैन। हुनकर समझ रहैन कम नम्बर देने विद्यार्थी आरो मेहनत करत। किएक तँ सभ विद्यार्थी पास करैक जिज्ञासासँ पढ़ैत अछि। फेलक डर हेतइ। तैसंग ईहो शिक्षक-सँ-विद्यार्थी धरि-सभ बुझैत जे लत्ती बाबूक हाथसँ जौं बीसो प्र तिशत नम्बर आबि जाएत तँ बोर्डमे पास हेबे करब।

हँ, अर्थशास्त्रक चर्च केने छेलौं। स्पे शल नाइंथमे पचास प्रतिशतसँ अधिक नम्बर एलैन। सभ विषयसँ बेसी। क्लासमे जखन श्याम बाबू (स्व. श्यामा नन्द झा) जोरसँ पढ़ि कॉपी देलकैन तखन जेना अर्थशास्त्र हिनका मनकेँ तेना पकैड़ लेलकैन जे दास कैपिटलसँ लऽ कऽ, बादमे अमर्त्य सेन धरिक परिचय करा देलकैन। ओना, हायर सेकेण्ड्री टपला पछाइत मनक दूटा विषय-अर्थशास्त्र आ भूगोल तँ हटि गेलैन मुदा मनसँ नै हटलैन। विषय समटा कऽ अंगरेजी, हिन्दी आ राजनीति शास्त्र धरि रहि गेलैन। ओहो एम.ए.मे घटि गेलैन।

प्रश्न उठैए कियो एक विषयसँ विशेषज्ञ छैथ आ कियो बहु विषयी छैथ,

दुनूमे जिनगीक गाड़ी किनकर समटल चलतैन?

जगदीश प्रसाद मण्डलजी बीसम शताब्दीक मृत्यु आ एकैसम शताब्दीक जन्म बुझबे ने केलाह। गुनधुनेमे रहि गेला जे की करी की नै करी? ने बीसम सदीक सराध कऽ पेला आ ने एकैसम सदीक जन्मोत्सव मना सकला। मुदा एकटा लाभ तँ जरूर भेलैन जे सराधोक खर्च बँचलैन आ जन्मदिनोक।

पंचवर्षीय चुनाव पद्धतिक आगमन भेल। मन्हुआएल मन शिशिरक सिताएल भौम्हरा खुजल। पंचायतसँ जिला-परिषद धरिक योजना बना जगदीश प्रसाद मण्डलजी समाजकेँ ठाढ़ करए चाहलैन। आठ पंचायतक चुनाव जिला परिषदक। आन समाजमे जाइसँ पहिने अपन समाज मजगूत बनाएब आवश्यक बुझलैन।

अंचल सम्मेलन गंगापुरक स्कूलमे भेल। पंचायत चुनावक कार्यक्रम बनल। बेरमाक योजना रखलखिन। सर्वमान्य भऽ गेलैन। मुदा एक नहि अनेको सूत्र राजनीतिक लागि गेलैन। जइसँ चारिटा जिलो परिषदमे पार्टीक आ चारिटा पंचायतो मुखिया लेल पार्टीक (कम्युनिस्ट पार्टी) उम्मीदवार बनि कऽ ठाढ़ भऽ गेलैन। खाएर जे भेल।

पंचायत चुनाव (मुखिया लेल) हारलैथ। चुनाव भरि तँ उत्साह रहलैन मुदा समाजसँ जिला पार्टीक बहुत बात बुझैमे आबि गेलैन। एक दिस सरकारी योजना (चुनावमे आरक्षण) देखैथ तँ बुझि पड़ैन जे अनेरे ऐ चुनावक भाँजमे पड़ला। आरक्षणक एहेन तरीका अछि जे एक चुनावसँ दोसर चुनावक रस्ते बन्न भऽ जाएत। पचास प्रतिशत महिला आरक्षणमे एक-एक टर्म हेबाक चाहै छेलइ। मुदा से नै भेल। जौं दू -दू टर्मपर चुनाव होइए तँ पूर्ण राउ ण्ड केते दिनमे हएत। खाएर जे हउ मुदा सरकारी लूट तँ बढ़िए गेल। जइ गतिए समाजकेँ ठाढ़ भऽ चलैक गति हेबाक चाही से अखनो धरि नै आबि सकल अछि। अनेको कारणमे मुख्य भ्रष्टाचार बनि गेल अछि। भ्रष्टाचारी ओहन-ओहन अछि जेकर सरकार छिऐ...। के केकरा देखार करत? जौं देखारे करत तँ कानूने की करतै ? विचित्र महजालमे समाज फँसि गेल अछि। आम आदमीकेँ आर्थिक तंगी छइ। ओ केना पूर्ति हएत? पूर्तिक जे पद्धति अछि ओ एहेन बनल अछि जे चरवाहीए-

मे गाइयो बिका जाइए! तैपर सँ देखौआ-चोरौआ फुट्टे!!

जेकरा लेल जगदीश प्रसाद मण्डलजी अट्ठारह दिन जहलमे रहला वएह आगू आबि चुनावमे ठाढ़ भऽ गेलैन। मोन पड़लैन महाभारतक ओ कथा जे महाभारतक उपरान्त भेल। मनमे मिसियो भरि शंकाक जन्म नै भेलैन। विपरीत भेलैन। पाछू उनैट देखला तँ बुझि पड़लैन जे अखन धरिक जे मोटा कपारपर लादल छैन ओकरा हेट करैक ऐसँ नीक अवसर नै भेटतैन। सएह केलैन। मुदा एकटा प्रश्न तैयो रहबे केलैन जे आगूसँ उसारी आकि पाछूसँ आकि दुनू दिससँ आकि एक्केबेर?

आगूसँ उसारैक विचार भेलैन। संयोगो नीक रहलैन। मधुबनी जिलाक वासोपट्टीमे पार्टीक (भाकपा) राज्य सम्मेलन भेल। पार्टीक महासचिव वर्द्धन (ए.बी. वर्द्धन) साहैबक संग-संग बंगालोक कामरेड सभ रहथिन। संग-संग बिहारक सभ जिलाक तँ रहबे करैथ। नीक सम्मेलन भेल। जिलाक एकटा कार्यकर्त्ता होइक नाते जगदीश प्रसाद मण्डल अपनौं उपस्थित रहबे करैथ। राज्यक (पार्टीक) अनेको साहित्य-प्रेमी सभ सेहो छेलाहे। हुनका सभकेँ जगदीश प्रसाद मण्डलजी कहि देलखिन- 'आब अहीं सबहक संग आ बि रहल छी।' ❑

सन् सैंतालीस...
भारतक स्वतंत्र त्रिवार्णिक झण्डा फहरा रहल छल।
मुदा कम्यूनिस्ट पार्टीक माननाइ छल जे भारत स्वतंत्र नै भेल अछि।
असली स्वतंत्रता भेटब बाँकी छै...
मिथिलाक एकटा गाम...
जन्म भेल रहए एकटा बच्चाक... ओही बरख...
ओइ स्वतंत्र वा स्वतंत्र नै भेल भारतमे...
पिताक मृत्यु... गरीबी... केस मोकदमा...
वंचित लेल संघर्षमे भेटलै स्वतंत्र भारतक वा स्वतंत्र नै भेल भारतक जेल...
आइ बेरमामे पाँच-दस बीघासँ पैघ जोत केकरो नहि...
ओइ गाममे जीवित अछि आइयो किसानी आत्मनिर्भर संस्कृति...
पुरोहितवादपर ब्राह्मणवादक एकछत्र राज्यक जेतए भेल समाप्ति...
संघर्षक समाप्तिक पछाइत जिनकर लेखन मैथिली साहित्यमे आनि देलक पुनर्जागरण...

जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी...

गजेन्द्र ठाकुर द्वारा



पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरु मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

दाम : 200 भा.रु.

